आदर्श परिवार

संस्थापक

स्वर्गीय पं० ओङ्कार नाथ वाजपेयी

ओंकार आदर्श महिलोपयोगी ग्रन्थमाला का चतुर्थ पुष्प

आदर्श-परिवार

[महिलोपयोगी अपूर्व पुस्तक]

यत्र नार्यास्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता ।

मनुस्मृति

लेखक

स्वर्गीय पं० मणीराम शर्म्मा

सम्पादक

स्वर्गीय पंडित ओंकारनाथ वाजपेयी

प्रकाशकः-

काव्यतीर्थ पं० विश्वम्भरनाथ वाजपेयी एस० आर० बी०

अध्यक्ष

ओंकार प्रेस एवं ओंकार बुकडिपो, प्रयाग

मुद्रकः—

पण्डित विश्वम्भरनाथ वाजपेयी, ओंकार प्रेस, प्रयाग ।

चतुर्थवार २०००] सन् १९२५ [मूल्य ॥=)

सम्पादक की भूमिका

आज बड़े हर्ष से आपके सन्मुख आदर्श परिवार का नवीन संस्करण आपकी सेवा में उपस्थित करते हैं। इस पुस्तक का आदर जो सर्व साधारण ने किया है उससे प्रतीत होता है कि अब देश में लोग उत्तम पुस्तकों का आदर करने लगे हैं।

इस पुस्तक में लेखक ने बड़ी बुद्धिमानी से एक कृष्णा नामक बहू का व्यवहार चित्रित किया है। एक साधारण निर्धन परिवार में उसने अपने सुप्रबन्ध से उसे किस प्रकार उच्च स्थिति को पहुंचाया है। कृष्णा को ससुर का आदर करना, अपने पति को बड़े २ कठिन समयों में उत्तम २ शिक्षायें देना, देवरों को सब प्रकार से माता के समान प्यार करना, ननद को अच्छी शिक्षा देना तथा घर गृहस्थी का उचित प्रबन्ध सिखाना आदि अपने उत्तम गुणों का भली भांति परिचय दिया है, अपने कंगाल घराने को किस प्रकार उसने अपनी बुद्धिमानी से धनी बनाया है, यह कन्याओं और बहुओं के विशेष ध्यान देने योग्य बातें हैं। जैसा इस पुस्तक का नाम है वैसा ही इसमें स्त्रियोपयोगी उपदेश भी भरे हैं। आदर्श परिवार ऐसी पुस्तकों की कन्याओं और स्त्रियों के लिये बड़ी आवश्यकता है। यदि इसी प्रकार मुझे सर्व साधारण से उत्साह मिलता गया तो मुझे आशा है कि मैं थोड़े ही दिनों में उत्तमोत्तम अनेक पुस्तकें आपके सन्मुख शीघ्र उपस्थित करूंगा।

ओंकारनाथ वाजपेयी

प्रकाशक की भूमिका

हत भाग्य प्यारे भारत ! सचमुच तुम्हारा सौभाग्य सो गया ! आज तुम्हारे पुत्रो के परिवार की दशा निराली है !! वे आदर्श-परिवार जिसमें राम एवं भरत से लाल खेलते थे तथा महरानी सीता एवं दमयन्ती सी महिला-रत्न थी केवल नाम मात्र रह गये हैं !!! नवीन भारतीय परिवार मे जहां दृष्टि फेरिये वहां फूट, पारस्परिक कलह एवं अशान्ति का साम्राज्य है ।

इसका मुख्य कारण ! भारतीय महिलाओं मे शिक्षा का अभाव !! इन्ही शिक्षा विहीन महिलाओं से घर २ कलह का स्रोत प्रवाहित होता है ।

इसलिये परिवार में प्रेम एवं शान्ति का साम्राज्य स्थापित करने के लिये, उचित है, कि महिलाओं में विद्या का प्रचार किया जावे । उनके हाथो मे ऐसा साहित्य रहे जिससे वे परिवार के नैतिक जीवन को उन्नति शील बनाती हुई सुख एवं शान्ति का प्रेम पूर्वक संचार कर सकें ।

हिन्दी संसार मे उपर्युक्त साहित्य की कमी को देख कर ही ओंकार संस्था के संस्थापक[स्वर्गीय पं० ओंकारनाथजी बाजपेयी] ने स्त्रीशिक्षा की ऐसी पुस्तकें सुलभ एवं सस्ती दामों पर निकालना आरम्भ किया था यह आदर्श परिवार नामक पुस्तक भी ओंकार महिलोपयोगी ग्रन्थमाला में एक सुगन्धित अनूठा फूल है ।

निःसन्देह जनता ने इसे बड़े चाव से अपनाया है बहुत माग के ही कारण बडी ही शीघ्रता के साथ इसका चतुर्थ संस्करण दो हज़ार की तादाद मे छपवाया गया है ।

शीघ्रता के कारण इतस्ततः कोई भूल हो गई हो तो वाचकवृन्द ! क्षमा करेंगे और ग्रन्थ माला के ग्राहक बनते हुये हमारे उत्साह को बढ़ावेंगे जिससे हम इस प्रकार की अन्य शिक्षाप्रद पुस्तकें भी आपकी सेवा मे शीघ्र प्रकाशित कर उपस्थित कर सकें ।

प्रकाशक

आदर्श परिवार

प्रथम परिच्छेद

यङ्काल के ५ बजे होंगे। भगवान मारीचिमाली अपनी दिन भर की यात्रा को समाप्त करके बड़ी तेजी के साथ पश्चिम दिशा को जा रहे हैं। पश्चिम का अकाश लालिमा धारण किये हुए, वृक्षों की चोटियों पर बड़े बड़े मकानों पर सूर्य की मन्दी मन्दी किरणों की सुनहरी प्रभा पड़कर विचित्र शोभा दिखा रही है। पक्षीगण दूर दूर से अपने घोंसलों की ओर अपने दिन भर के बिछुरे बच्चो से मिलने के लिये झपटे जा रहे हैं; उनको पास आया जानकर बच्चे भी चीं चीं शब्द से वृक्षो पर शोर मचाने लगे, पक्षीगण अपने मुख में से दाने निकाल कर अपने बच्चों के मुंह में दे रहे है। इस समय का दृश्य भी बड़ा ही सुन्दर गम्भीर और मनोहर दिखाई दे रहा है। ऐसे समय में आइये पाठक आपको एक धर्मज्ञ सद्गृहस्थ के घर का दृश्य दिखाते है।

वह देखिये सामने जो एक पुराना मकान दिखाई पड़ता है, वह हमारे लाला रामलालजी अग्रवाले का है, किसी ज़माने

में आप एक बडे कोठोवाल के नाम से सुप्रसिद्ध थे। किन्तु काल के हेर फेर से अब एक गरीब बनिये के नाम से पुकारे जाते हैं। पहिले तो इनका घर था जिसमें सकुटुम्ब रहते थे, और दस पाँच आदमी इनके यहां नौकर रहते थे, परन्तु ग़दर पड़ जाने से सब धन लुटेरों ने लूट लिया और कितने ही कुटुम्बियों की जानें भी गईं, अब विचारे अपने पिता के वंश में यही रह गये हैं। घर में आपके तीन लडके और एक कन्या के सिवाय और कोई नही हैं। बड़े लड़के को उमर ३० वर्ष की ओर नाम मोतीलाल है। दूसरे बेटे का नाम चुन्नीलाल है अवस्था बीस बाईस वर्ष की होगी, तीसरा लडका अभी ८ वर्ष का है नाम हीरालाल है और लडकी का नाम मुन्नी है यह हीरालाल से चार वर्ष बड़ी थी। रामलाल की पहिले काशी में बुला नाला पर कोठी थी, किन्तु अब वे ब्रह्मनाल मुहाल में चार रुपये किराये के मकान में रहते हैं। रामलाल की अवस्था इस समय ५० वष के लगभग होगी, यह इस समय एक कोठी में ३०) रु० मासिक की मुनीमी करते हैं, इनको समस्त काम लडकों की पढ़ाई, व्याह मूडन, नाते गोते मे लेना देना उन्हीं रुपयो में करना पड़ता था। यह बिचारे बडी तङ्गई से अपना गुजर करते थे। रामलाल का स्वभाव बडा नम्र था, मुहल्ले के सभी मनुष्य इन लोगों से प्रसन्न रहते थे। मोतीलाल कालिज में बी० ए० क्लास में पढ़ते थे, और इनका विवाह भी एक सुयोग्य कन्या से हो गया था। जिसका नाम कृष्णा देवी था। यही कृष्णा देवी जिसकी अवस्था इस समय अट्ठारह वर्ष की होगी, विवाह में यह १६ वर्ष की थी।

कुंआर का महीना है स्कूल की छुट्टियां होने के कारण आज प्रायः एक महीने पर मोतीलाल अपने घर आये हैं।

उन्हें देखते ही मुन्नी और हीरालाल मारे खुशी के एक सङ्ग चिल्ला उठे "भैया आये भैया आये" हीरालाल ने दौड़कर अपने भाई के चरण छुये और उनके हाथ में से बेग ले लिया जो कि काले कपड़े का एक छोटा सा था। इधर मुन्नी दौड़ कर घर में भीतर चली गई और अपनी भाभी से बोली 'भाभी! भैया आ गये। कृष्णा ने जब यह सुना कि पति आये हैं तो वह झट उठी और एक लोटा पानी उनके पैर धोने के लिये ले आई और अपने पति के निकट रखकर आप चली गई। जब तक मोतीलाल पैर धोके आसन पर बैठे तब तक कृष्णा एक छोटी थाली में दो एक मिठाई और एक गिलास जल पीने को ले आई और अपने पति के आगे रखकर पास ही बैठकर पङ्खा झलने लगी। इतने ही में बाहर से चुन्नीलाल भी आ गया। अपने बड़े भाई को देख कर बड़ा प्रसन्न हुआ और बड़े प्रेम से उनके चरण को स्पर्श किया। मोतीलाल ने भी बड़े प्रेम से उसे हृदय से लगा लिया। मोतीलाल ने जल पीकर अपने स्कूली कपडे उतारे और फिर बैठकर यों कहने लगे:— "क्यों भैया! बाबू जी कहां हैं?" इस पर मुन्नी ने कहा,—वे तरकारी लेने बाज़ार गये हैं, आते ही होंगे। इतना मुन्नी ने कहा ही था कि बाबूजी भी तरकारी लेकर आ गये। उस वक्त रामलालजी का चेहरा वडा उदास हो रहा था। पिता को देखकर मोतीलाल ने अपने पिता के चरण छुये। पिता ने आशीर्वाद देकर पूंछा—क्यो बेटा अच्छे तो हो ? कब आये? मोतीलाल ने कहा, आपके आशीर्वाद से अच्छा हूं और अभी चला आता हूं।

पाठक! आप लोगो को यह शङ्का हो रही होगी कि सब कोई तो मोतीलाल से मिले परन्तु उनकी माता क्यों नहीं

मिलीं। इसके लिये यहां पर थोडा सा हाल हम आप लोगो की शङ्का मिटाने को लिखते हैं। आज दो महीना हुआ कि रामलाल की स्त्री का देहान्त होगया, वह अपने सामने तीन पुत्र और एक कन्या और बड़ी बहू कृष्णा एवं पति को छोड़ दोनों हाथ लड्डू लिये हँसती बोलती इस असार संसार से डेरा कूंच कर गई। उसके मरने से घर में सभी को दुःख हुआ था किन्तु सबसे ज्यादा दुःख कृष्णा और रामलालजी को हुआ था। क्योंकि, कृष्णा को तो यों दुःख हुआ कि उसने अपनी सास से बहुतसी उपयोगी शिक्षा पायी थी और कितनी ही बातें अभी सीखने को बाकी थीं। और रामलाल जी को यों दुःख हुआ कि सारी गृहस्थी का बोझ वह सँभाले थी, रामलाल केवल पैसा उसके हाथ में रख देते थे और गृहस्थी से कुछ उन्हें मतलब नहीं रहता था। अब उन्हें सब गृहस्थी सभालनी पडी और खर्च से पूरा भी नहीं पडता था इसी लिये दिन रात वह उदास रहा करते थे। उतनही खर्च मे पूरा न पड़ने का कारण यह था कि, स्त्री के मर जाने पर रसाई करने के लिये इन्हें एक ब्राह्मणी रखनी पड़ी थी। क्योंकि जो ब्राह्मणी नहीं रहती तो घर में सब भूखे मर जाते, घर मे पतोहू तो थी ही नहीं जो रसोई करती, कृष्णा की नानी के घर उसके मामा का बिवाह था इसी से वह अपने सास के मरने पर भी नहीं आ सकी थी और न इन लोगों ने बुलाया ही था। आज कृष्णा को आये घर में पाँच दिन हुये हैं जिस दिन वह आयी है उसी दिन से उसने सारी गृहस्थी को संभालना शुरु कर दिया है गृहस्थी के काम में कृष्णा बहुत चतुर थी, उसने इस विषय में अपनी माता और सास से अच्छी शिक्षा पायीं थी। उसने ब्राह्मणी और बासन मांजाने वाली नौकरानी भी छुड़ा दी और

उनका सब काम आप ही करने लगी। किन्तु इतने पर भी वृद्ध रामलाल की चिन्ता दूर न हुई दिन पर दिन वह बढ़ने लगा जिससे कि उनका चेहरा एकदम पीला पड़ गया यहां तक कि कभी कभी भोजन भी वह नहीं करते थे।

दिन पर दिन वृद्ध की हीनावस्था को देख कर घर के सभी लोगों को बडी चिन्ता होने लगी। कि क्या कारण है जो पिता एक दम इतने मुर्झाये जा रहे हैं? परन्तु उनसे इसका कारण पूंछने की हिम्मत किसी को भी नही होती थी। सन्ध्या को सब लोगों ने भोजन किया इसके उपरान्त जब सब लोग एक स्थान में बैठे तब मोतीलाल ने पिता से बड़े नम्रभाव से पूछा—बाबू जी? मैं आपसे एक बात पूछना चाहता हूं परन्तु पूछते संकोच मालूम होता है। रामलाल ने कहा—जो तुमको पूछना होवे वह पूछो, पिता से संकोच किस बात का है? मोतीलाल—मैं यही पूछता हूं कि जब से माँ मरी हैं तब से आप दिन पर दिन कृषित होते जाते हैं इसका क्या कारण है?

इस बात के सुनने से वृद्ध एक बडो गहरी सांस लेकर अपने मनमे सोचने लगे कि हाय? इन बच्चों से मैं अपना दुःख क्या कहूं! मेरे दुःख सुनने से इन्हे बड़ा दुःख होगा। पिता को चुप देखकर मोतीलाल ने फिर कहा क्या बाबू जो! आपके दुःख को हम लोग सुनने लायक नहीं हैं? जो आप हम लोगों से नहीं कह रहे हैं।

इस पर एक लम्बी सांस लेकर रामलाल ने कहा—बेटा! अब हम लोगों पर ईश्वर बहुत ही नाराज़ हो रहा है। देखो! कल कोठी में हमारे मालिक ने हम से कहा है कि मुनीम जी इस रुजगार में हमें बहुत घाटा पड़ा है इस लिये खर्च में कोताई करनी चाहिये। हमारे यहां आज बीस नौकर हैं उनमें

आठ दरवान चार मुनीम दो कहार छः रेजा रखने उठाने वाले हैं, सो अब हमारा यह इरादा है कि मेरे तीनो लड़के अब सब काम मे पक्के हो गये हैं इसलिये चार मुनीमो में से तीन मुनीमो को जवाब दे दो उनकी जगह लडके काम संभाल लेंगे दरवानों मे दो दर्वान रक्खे जांय और रेजों के उठाने धरने मे भी दो नौकर काफ़ी हैं, इस तरह पांच आदमी रख लिये जांय और बाकी पन्द्रह आदमियो को जवाब दे दिया जाय। तब मैंने कहा—जिसे आप रक्खे उन्हे रख लें शेष को जवाब दे दिया जाय। तब मालिक ने कहा देखो। मुनीमो मे तुम्हारी तनख्वाह तो ३०) रुपये हैं और बाकी बोस बीस रुपये के हैं मैं यह देखना हूं कि तुम पुराने नौकर हो तुम्हें जवाब देना उचित नहीं समझता किन्तु अब तुम्हें पचास रुपये मिला करेंगे जब फिर हमारी उन्नति होगो तब तुम्हें भी ३०) रु० दिया करूंगा लेकिन इस बक्त इतने ही मिलेंगे इस बात को सुनकर मैं चुप हो रहा, उन्होने सब नौकरो को जवाब दे दिया और मेरे सहित पाँच आदमी रख लिये। उसी दिन से मैं दिन रात इस चिन्ता में घुला जाता हूं कि, गृहस्थी का खर्च किस तरह चलेगा! तुम तीनो के पढाने का खर्च मकान का किराया धोबी की धुलाई, कपड़े, लत्ते, घर में अन्न इस पचीस रुपये में कैसे गुजारा होगा? जब मुझे ३०) रुपये मिलते रहे तब तो चलता ही नही था फिर अब कैसे चलेगा! इस बात के सुनने से सभी को बड़ा दुख हुआ, सब से हुआ ज्यादा मुन्नी को दुख भया क्योंकि वह बड़े कोमल हृदय की थी। पिता के मुंह से इस बात को सुन कर उसे बडा दुख हुआ वह ऊपर आकाश की ओर हाथ जोडकर बोली। हे जगत के स्वामी! आज तक न जाने हम लोग किस प्रकार

अपने दिन को व्यतीत करते रहे तिस पर भी आपको हम लोगों पर दया नहीं आई और भी दुख देने को उतारू होगये ! हे नाथ आप तो भक्तवत्सल हैं, दीनों की रक्षा करना आपका कर्तव्य है, फिर क्यों इस दीन कुटुम्ब पर दया नहीं करते ?,. आपने सुदामा को विपत्ति से मुक्त किया है फिर हम अनाथों की सुध क्यों नहीं ले ....,,।

इसके आगे मुन्नी का कंठ रुक गया और उसके नेत्रों से आंसू गिरने लगे उसकी ऐसी अवस्था देखकर वृद्ध रामलाल ने उसे बहुत समझाया और कहा—बेटी तू इतनी अधीर क्यों होती है। एक दिन परमात्मा हम लोगों का दुःख अवश्य दूर करेगा तू रो मत। इस वक्त मोतीलाल की अवस्था कुछ और ही थी उसे अपने चारों ओर अन्धकार दिखाने लगा परन्तु बहुत जल्द अपने को संभाल कर बड़ी दृढ़ता के साथ उसने कहा—बाबू जी ! आप किसी बात की चिन्ता न करें मैं बहुत जल्द इसका उपाय करूंगा। अब मेरा इरादा यह है कि मैं पढ़ना छोड़ दूं और कहीं नौकरी की तलाश करूं।

इस पर रामलाल ने कहा,—"बेटा ! अब तुम्हारे बी. ए. पास करने में मेरी समझ मे बहुत थोड़े दिन बाकी होंगे। इस लिये जब तक तुम पास न हो जाओ तब तक मेरी राय मे पढ़ना न छोड़ो। क्योंकि, थोड़े दिन के लिये जल्दी करना अच्छा नहीं, मैंने बड़े संकट सह कर तुम्हें पढ़ाया है, अब बी. ए. पास हो जाने से कोई अच्छी जगह तुम्हें मिल जायगी इस लिये तुम जैसे बने दुःख सुख से इसे पास करलो, मैं किसी से कुछ रुपया कर्ज ले लूंगा फिर धीरे २ उसे दे दिया जायगा परन्तु तुम पढ़ना न छोड़ो।

बात चीत करते रात्रि प्रायः बहुत बीत गई थी, इस लिये रामलाल ने सब लोगों को सोने के लिये भेज दिया और आप भी परमात्मा का सुमिरण करते २ सो गये।

द्वितीय परिच्छेद

अभी प्रातःकाल होने में घण्टे भर की देरी है। पूर्व आकाश रक्तवर्ण को धारण करे हुए है, क्रम से सूर्य भगवान अपनी सुनहरी और सुहावनी किरणों से जगत में अन्धकार का नाश कर अपना धीरे २ प्रकाश फैला रहे हैं। चित्त को प्रसन्न करने वाली शीतल, मन्द, सुगन्ध वायु चल रही है। भांति भांति के पक्षी वृक्षों की डालियों पर बैठे नाना प्रकार की मनोहर बोलियाँ बोल रहे है। ठीक ऐसे ही सुहावने समय में हमारे धार्मिक कुटुम्ब ने अपनी शय्या का त्याग कर दिया और अपने अपने कृत्यों में लग गये। सब से पहिले कृष्णा ने उठकर कुएं में से पानी भरा फिर थोडा पानी रामलाल जी को स्नान करने के लिये गरम होने को रख दिया। उपरान्त आप शौचादिक से निवृत्त होकर थोडा पानी एक गगरे में लेकर अपने श्वसुर के शौचादिक को रख आई। इधर रामलाल जी ने शौचादिक से निवृत्त होकर स्नान किया और अपने सन्ध्यावन्दन में लग गये, तब तक उधर भी घर के सब लोगों ने भी इस काम से छुट्टी पाली। चुन्नीलाल और हीरालाल अपना पाठ याद करने लगे क्योंकि इन लोगों का स्कूल भी बन्द था, चुन्नीलाल एन्ट्रेन्स में पढ़ता था। और हीरालाल मिडिल में पढता था। इन लोगों के इम्तिहान का दिन निकट ही था। इस लिये बड़े मन से यह दोनों अपना पाठ याद करते थे। इस घर में प्रायः

सभी लोगों की रुचि विद्या पढने में विशेष थी, क्योंकि छोटी अवस्था में ही माता ने इन लोगो को विद्या पढ़ने के गुण भली रीति से समझाय दिये थे। उधर कृष्णा और मुन्नी अपने गृहस्थी के काम मे लिपट गईं। रामलाल जी नित्य नेम से निपट कर अपनी बैठक मे एक हिन्दी समाचार पत्र पढ रहे थे कि सहसा उन्हे कुछ स्मरण हो आया तब उन्होंने हीरालाल को अपने पास बुलाया जो कि पास ही के दूसरे कमरे में पढ़ रहे थे। हीरालाल के आने पर रामलाल जी ने कहा—"तुम सब लोगो को मेरे पास बुला लाओ। हीरालाल के कहने से सब कोई रामलाल जी के पास आ गये और प्रणाम करके बैठ गये। अब रामलाल ने मुन्नी और कृष्णा की ओर मुंह करके कहा "अब तुम लोग यह बताओ कि अब गृहस्थी का कैसा प्रबन्ध किया जाय?"

पाठक! आप लोग यहां पर यह शका करेंगे कि मोती-लाला चुन्नीलाल आदि को छोड़कर रामलाल जी ने मुन्नी और कृष्णा स क्यों पूछा। इसलिये यहां पर हम थोड़ा सा कृष्णा का हाल लिखना उचित समझते हैं।

कृष्णा का मायका आगरे मे था, इसके पिता का नाम मनसुखदास था, इसके एक हरीदास नाम का लड़का और कृष्णा यह दो सन्तान थी, इनकी स्त्री बडी सुशिक्षिता थी उसने अपने इन दोनों बालकों को छोटी ही अवस्था से ही उत्तम शिक्षा दी। कृष्णाकी माता का यह कहना था कि, विद्या ही मनुष्य को सुख देने वाली है जिसके पास विद्या नहीं है वह स्वतन्त्र सुख कभी नही पासका है। इसलिये उसने हरीदास को तो स्कूल में पढने को बैठा दिया और कृष्णा को स्वयं पढ़ाने लगी, केवल पढ़ना ही नही एव रसोई करना, कपड़ा सीना,

कसीदा काढना, गुलूबन्द बिनना आदि जितने स्त्री के लिये उपयोगी शिक्षा थी क्रम से उसने सभी कृष्णा को सिखाई थी, बीच बीच मे उसे धर्मोपदेश भी दिया करती थी। इस लिये माता की पूर्ण शिक्षा के प्रताप से कृष्णा परम बुद्धमती हो गई थी, उसने इस को पन्द्रह वर्ष की अवस्था में इतना गृहस्थी के काम में पक्का कर दिया था कि कोई काम गृहस्थी का ऐसा न था जिसे कि कृष्णा न जानती हो। कृष्णा की माता ने जब अपनी कन्या को गृहस्थी के समस्त काम मे पक्का कर दिया तब काशी में बहुत ढूंढने के उपरान्त एक उत्तम कुल मे उसका बिवाह कर दिया। बिवाह हो जाने पर साल भर के बाद कृष्णा का गौना हुआ' तब से बराबर कृष्णा ससुराल में ही रहती थी, इसके काम काज से रामलाल की स्त्री बड़ी प्रसन्न रहती थी, वे नित्य इसे आशीर्वाद दिया करतीं थीं और "लक्ष्मीबहू" के नाम से इसका सम्बोधन किया करती थीं। जब सब कोई घर में एकत्रित बैठते थे तब वह कृष्णा की बड़ी प्रशंसा करके सब को सुनाया करती थी और कहती थी कि मेरे मरने के बाद यही तुम्हारे घर को संभालेगी और तुम लोग भी इसे कभी दुःख न देना, इसका कभी निरादर न करना। रामलाल ने वही अपनी स्त्री के कहने को स्मरण करके आज कृष्णा से पूंछा था कि "बेटी! अब गृहस्थी का कैसा प्रबन्ध किया जाय ?,,

इस बात से मुन्नो तो चुप रही परन्तु कृष्णा ने मुन्नी से कहा,—दीदी! मेरी समझ मे तो एक बात यह आती है कि, यह मकान छोड़ दिया जाय और कोई थोड़े किराये का ले लिया जाय और जिस तरह मैं कहूं उस तरह घर का प्रबन्ध किया जाय।

रामलाल ने कहा,—"बेटो! तू जिस तरह कहेगी उसी तरह से मैं करने को तयार हूं।"

कृष्णा ने कहा'—आप पहिले दूसरा घर खोज लें तब मैं अपनी राय आप को बताऊगी।

रामलाल ने कहा,—"क्या घर के बदल देने से ही सब काम हो जायगा?

कृष्णा ने कहा,—,,आप घबडाइये नहीं जैसा मैं कहती हूं वैसा आप पहिले करें।

लाचारी से उसकी बात सब ने मानली, फिर भोजन सब लोगों ने किया थोडी देर आराम कर लेने के उपरान्त चार बजे मकान ढूढने का भार मोतीलाल के माथे सौंपा गया, वह घर से निकल कर दशाश्वमेध घाट की ओर मकान खोजने गये, किन्तु कहीं मकान उन्हें नहीं मिला हार के सन्ध्या को उन्हें लौट कर घर आना पडा (अपने भाई को देख मुन्नी ने पूंछा—क्यों भैया! मकान मिला? मोतीलाल ने कहा इधर तो नहीं मिलता; कल इधर पञ्चगगा के तरफ देखूंगा। मोतीलाल इतना कहकर सन्ध्या करने चले गये। उपरान्त भोजन करके अपने पिता के कहने के अनुसार घंटा भर रामायण बॉच रहे और रामलाल जी उसका अर्थ कह कह कर सब को समझाते रहे। उपरान्त सब कोई अपने अपने शयनालय में चले गये, कृष्णा और मुन्नी भी सब काम से निपट कर सोने के लिये चली गईं।

मोतीलाल अपने शयनागार में अकेले पड़े पड़े करवटें बदलते रहे, रात के ग्यारह बज गये किन्तु अभी तक उन्हें निद्रा नहीं आई कभी आप उठ कर बैठ जाते थे, और कभी वह दर-वाजे की ओर कान लगाकर आहट लेने लगते हैं, मानो किसी

की बाट जोह रहे हैं। कभी वह कोई पुस्तक उठाकर दीपक के उजाले में पढ़ने लगते हैं, परन्त दो चार सतर पढ़ने के उपरान्त फिर उसे बन्द करके लेट जाते हैं। थोड़ी देर के बाद वह फिर दरवाजे की ओर बड़े चाव से देखने लगे किन्तु किसी की आहट न पाकर फिर उठकर बैठ गये परन्तु थोड़ी देर के बाद निराशा से शय्या पर मुंह ढाक कर लेट रहे।

उन्हें लेटे अब की दो मिनट भी न हुए होंगे कि किसी ने धीरे धीरे आकर बहुत ही धीरे बड़ा सावधानी से किवाड़ खोलकर भीतर पैर धरा; मोतीलाल इसकी आहट पाकर भी चुपचाप पड़े रहे। वह घर में आनेवाली एक युवती थी। इस युवती की अभी अवस्था अनुमान अट्ठारह वर्ष का होगी, काले काले बाल गोरा रङ्ग, बड़ी बड़ी आखें नोकीली नाक, पतले पतले गुलाबी ओठ तथा सब शरीर सांचे में ढाला हुआ था, देखने मे साक्षात् लक्ष्मी स्वरूप दिखाती थी। कृष्णा ने कमरे में आकर अपने पति को सोते पाया तब वह भी पैर की ओर शय्या पर बैठ गई और अपने कोमल हाथों से पति के चरण दबाने लगी, तब तो मोतीलाल से भी न रहा गया वह उठकर बैठ गये और कृष्णा की ओर स्नेह भरी दृष्टी से देखा, तब कृष्णा ने हाथ जोड़ कहा, इस दासी के अपराध को क्षमा करना क्योंकि सोते हुए से आपको जगाया है।

मोतीलाल ने कहा—सोते हुए मनुष्य को तुमने किस लिये जगाया ?

कृष्णा—इसलिये जगाया है कि आप बहुत दिन पर घर आये हो, बहुत दिन से इस दासी ने आपकी बोली नहीं सुनी है और दूसरे आज आपसे कुछ सलाह भी करनी है।

मोतीलाल—"ठीक है इसी लिये सब काम छोड़ कर जल्दी से तुम आई हो ?"

कृष्णा—क्षमा करियेगा इसमें दासी का कोई अपराध नहीं है क्योंकि जब तक घर के सब काम निपटा न लूं तब तक कैसे आती ? तिस पर मुन्नी दीदी सङ्ग सङ्ग काम कराती थीं, जब तक वह सो नही जाती तब तक मैं कैसे आती क्योंकि किसी के सामने आते मुझे बडी लज्जा मालूम होती है।

मोतीलाल—वह तो तुमसे बहुत छोटी है फिर क्यों तुम्हें लज्जा लगती है।

कृष्णा—छोटी हैं तो क्या हुआ हैं तो ननद न और फिर साथ में काम कराती रही।

मोतीलाल—मुझे किसी काम में तुमसे सलाह लेनी थी इसी से तुम्हारा आसरा देख रहा था, पर तुम काहे को जल्दी आती हो।

कृष्णा—"इस समय तो आप वृथा मेरे ऊपर दोष रख रहे हैं, भला आप यह भी तो सोचें कि, रसोई के सारे काम निपटा कर और सब लोगों को भोजन करा देने के उपारान्त मैं सोने पाती हूं।"

मोतीलाल—"यह बात तो तुम्हारे शरीर के देखने से ही मालूम हो रही है कि आज कल तुम्हीं को गृहस्थी का सब काम करना पडता है। अच्छा यह तो बताओ कि, मुन्नी कुछ काम करती है कि नही ?"

कृष्णा—"अब मुन्नी कुछ बालक तो है हो नहीं जो काम नहीं करेगी। वह हरवक्त मेरे कामो मे साथ दिया करती है और हर एक काम को वह बड़े उत्साह से करती

है यदि वह न होती तो मेरे संभारे सब काम न होता, क्योंकि, माता जी के साथ पहले मैं काम करती थी अब उनके मर जाने से मुझे बडी चिन्ता पड गई थी कि कैसे गृहस्थी के सब काम को अकेले करूंगी. किन्तु वह चिन्ता मेरी बिलकुल जाती रही मेरे सब कामों मे मुन्नी सहारा देती है और जिस काम को वह नही जानती उसे मुझ से पूंछ कर करती हैं।"

मोतीलाल—"मुझे भी बडी फिकिर पड़ गई थी, प्यारी तुम्हारे कामों को देख कर सब फिकिर जाती रही, और अब मुझे यह विश्वास होता है कि तुम यथार्थ रीति से गृहस्थी के कामों को कर लोगी।"

कृष्णा—"जिस स्त्री ने अपनी गृहस्थी ही नहीं संभाली तो फिर वह क्या करेगी ? अच्छा आप यह तो बताओ कि, अब घर का प्रबन्ध किस प्रकार किया जाय ?"

मोतीलाल—"भला मैं क्या जानूं कि गृहस्थी का क्या है तुम्ही इसको जानती हो, इस लिये तुम्हीं इसका प्रबन्ध भी करो हां मुझे जो कहोगी, उसे मैं कर दिया करूंगा।"

कृष्णा—"अच्छा सुनिये ! इस दासी की तो यह राय है कि प्रथम तो यह घर छोड़ कर थोड़े किराये का दूसरा मकान लिया जाय। परन्तु उस मकान की कुरसी खूब ऊंची हो और सोड़ (सर्दी) न हो, हवा की आमदरफ़ अच्छी हो, आंगन साफ और मोरीदार हो, रसोई घर भी ऐसा हो जिसमें धुआं न छूटे और कुछ उजेला भी उसमें आता हो, किसी तरह की

दुर्गन्ध न आती हो ऐसा मकान खोजो। जब मकान दूसरा मिल जाय तो दो तीन रुपये महीने यह बच जांयगे, फिर मैं जो २ चीज़ बताऊ उन उन चोज़ों को ला देओ तब महीने में मै दो तीन साडियां तयार कर दूंगी जिससे बहुत नही तो आठ दस रुपया मिल जायगा।"

मोतीलाल—"और मेरी यही इच्छा होती है कि अब पढ़ना छोड दूं और कही नोकरी करलूं। क्योंकि बिना किये अब काम नहीं चलता। बाबू जी विचारे कौन कौन काम करेंगे, गृहस्थी का खर्च चलावें कि, हम लोगों की के पढने का खर्च चलावें, इसको छोड़ दो अब मुन्नी की अवस्था भी बिवाह करने योग्य हो गई है।"

कृष्णा—"आपका कहना तो ठीक है परन्तु मेरी समझ में आप थोड़े दिन के लिये जल्दी न करिये दो चार महीने मे आपकी परीक्षा हो जायगी। जैसे इतने दिन तक सब काम चला जाता था वैसे ही चार महीने और भी काम दुःख सुख से चलाया जायगा क्योंकि बाबूजी की तनख्वाह में से केवल पॉच रुपये घट गये है और इधर मैं उनको उसके बदले १५) रुपये महीने दूंगी फिर क्यों नहीं काम चलेगा? मेरे कहने का मतलब यह है कि "जब आप इस परीक्षा में पास हो जायगे तब आप को नौकरी मिलने में देरी न लगेगी, और परमात्मा की कृपा से उस समय कुछ सुख भी प्राप्त हो जायगा।"

मोतीलाल—"अच्छा तो अब मुझ से कुछ प्रयोजन न रखना

क्योंकि पढ़ने के सिवाय दूसरा काम मुझ से नहीं करा सकती हो !

कृष्णा—"इसकी आप चिन्ता न करें मैं सब कर लूंगी परन्तु आप पढ़ना न छोड़ें।

अपनी बुद्धिमती स्त्री के मुख से धैर्य देने वाले वचन सुनकर वे बड़े प्रसन्न हुये और उसकी बड़ी प्रशंसा करने लगे। इस प्रकार स्त्री पुरुष आनन्द से हास्यविनोद करते हुये गृहस्थी की बहुत सी आवश्यक बातों पर विचार करके अपने अपने स्थान पर सोने के लिये गये।

तृतीय परिच्छेद

तःकाल के ४ बजे होगे अभी सूर्य भगावन के उदय होने में कुछ देरी है, वर्षाऋतु की धीमो पूर्वीय वायु चल रही है। अभी संसार में दो चार जीव और कुछ पक्षियों के शब्द को छोड़ कर चारो ओर शान्ति फैली हुई है। चन्द्रदेव का प्रकाश भी क्रम से मन्दा पड़ता जाता है। मनुष्यगण भी इस समय कितने ही तो निद्रादेवी के गोदी में पड़े हैं और कितने ही शौचादि के लिये जा रहे है और कितने ही शौच से निपट स्नान कर के ईश्वर आराधना में निमग्न हो रहे हैं और कितने ही अपनी उदर के निमित्त मुट्ठियां मांगने के लिये जा रहें हैं। ठीक ऐसे ही समय में हमारे दम्पति की निद्रा भङ्ग हो गई। कृष्णा अपने नित्य के कार्य में लग गई और मोतीलाल शौचादि से निपट कर घर की खोज मे चले गये। सिद्धेश्वरी से ले ब्रह्माघाट तक मोतीलाल ने मथ डाला, परन्तु उन्हें कोई घर नहीं मिला एक घर उन्हें पसन्द भी आया तो उसका किराया सुनकर मोतीलाल सुन्न हो गया। अन्त में कर्णघंटा की तरफ गये और वहां दो चार मकान देखने के उपरान्त एक मकान उसके मनमें जंचा। उस घर में सुन्दर आंगन था और तीन कोठरियां नीचे थीं और तीन ही कोठरी ऊपर थीं एक छोटी सी छत भी उसमें थी। तीन ओर तो तीन कोठरी ऊपर थीं और चौथी ओर वही छत थी। नीचे पूर्व की ओर एक बड़ा दलान

था। पश्चिम की ओर दो कोठरी थीं उत्तर की ओर द्वार था और दक्षिण की तरफ एक कुआं और उससे थोडी दूर पर पाखाना बना था। दरवाजे के दोनों बाजू में दो कोठरी बनी थीं इस घर का फर्श सब पत्थरों का था, ऊपर खिड़कियां भी थीं जिसमें हवा बराबर घर में आती थी। इस मकान को देखकर मोतीलाल बहुत प्रसन्न हुए पूछने पर उसका किराया भी मालूम हो गया कि तीन रुपये हैं। मोतीलाल ने मकानदार से कहा—हम अपने घरवालों को यह मकान दिखालें तब आप से कहेंगे और और कल ही इसका उत्तर आप को देंगे।

मोतीलाल दस बजे घर लौटकर आगये और अपने पिता से सब कह सुनाया फिर कहा कि आप भोजन करलें तब सब कोई चलो उस घर को देख लो जो अच्छा हो वह घर ले लिया जाय। सब लोगों ने इस बात को स्वीकार किया भोजन कर लेने के उपरान्त थोड़ा आराम इन लोगों ने किया और उधर मुन्नी और कृष्णा ने जल्दी जल्दी बासन चौका कर लिया सब काम से निपट कर घर देखने के लिये वे दोनों ननद भौजाई तयार हो गईं। इधर रामलाल और मोतीलाल भी तैयार हो गये। तब चुन्नीलाल और हीरालाल को घर सौप कर यह चारों आदमी घर देखने को चले। वहां जाकर मोतीलाल ने कई घर दिखाये किन्तु कोई घर उन्होंने अच्छा न बताया। तब मोतीलाल ने उस घर को दिखाया। इस घर को देखकर सब कोई प्रसन्न हो गये। यह मकान वैसे तो कच्चा था परन्तु और सब बातों में अच्छा था इसके पीछे थोड़ी सी जमीन भी थी जिसमें जाने के लिये एक छोटी सी पिछवाड़े की ओर खिडकी थी और उस जमीन की रक्षा के लिये चारों तरफ पुरसा भर ऊंची चहार दीवारी बनी थी।

कृष्णा ने इस मकान को खूब नीचे ऊपर देखकर मुन्नी से कहा,—तुम बाबू जी से इसी मकान के लिये कहो इसमें हम लोगों की खूब अच्छी तरह गुज़र हो जायगी। कृष्णा की बात रामलाल ने सुनली, इन्होंने कहा बहू बहुत ठीक कहती है मैं भी इसे पसंद करता हूं। फिर थोडी देर मे उस मकानदार को बुलाय कर उससे मकान पक्का कर लिया और उससेताली लेकर अपने घर चले आये।

घर पर आकर रामलाल ने सब तयारी करके कार्तिक की द्वितीया गुरुवार को इन लोगों ने नये घर में प्रवेश कर दिया। अभी सब समान एक कोठरी में रखवाया गया है। इधर मुन्नी और कृष्णा ने दो चार दिन मे सब घर लीप पोत कर ठीक कर दिया। फिर कृष्णा और मुन्नी ने सब चीज़ वस्तुयें बड़ी सावधानी और बुद्धिमानी से जहां जो वस्तु रखनी चाहिये तहां उस वस्तु को उसी प्रकार सजाय कर रखा जैसा कि उन्हें सजाकर रखना चाहिये। जब सब चीजें ठिकाने रख दी गईं तो वह स्थान ऐसा मनोहर दीखने लगा मानों दुकान सजाई गई है। इसके बाद बाबू जी की बैठक दरवाजे वाली कोठरी मे एक चौका बिछाकर उस पर एक सफेद चादर डाल दी, बगल में छोटी सी एक चौकी पर आसन बिछाकर उनके पूजा का सामान सजा दिया और सामने एक चौकी पर उनके पढ़ने की पुस्तकें ठीक से रख दीं दो चार महात्माओं की तसवीर दिवाल मे टाँग दीं। इसके उपरान्त बाबू जी के सामनेवाली कोठरी मे चुन्नीलाल और हीरालाल के पढ़ने का सब सामान ठीक कर दिया। दो मेज़ दो कुर्सियां एक बेंच दो आलमारी इस प्रकार सजाय कर लगाई गईं कि कलम दावात कागज़ सब मेज पर क्रम से धर दिये गये और उन आलमारियों में उनकी पोथी बड़ी खूबसूरती

के साथ क्रम से सजा दी गई। नीचे बड़े दालान में रसोई घर बनाया वहां आलों पर क्रम से मसालों के डिब्बे बडी खूबसूरती से रक्खे गये थे पास ही एक चौकी पर आवश्यकीय रोज काम मे आने वाले बासन क्रम से रक्खे थे एक कोठरी में भंडार बनाया गया था। इसी में एक और कोठरी थी जिसमें लकडी जलाने के लिये रक्खी थी और दूसरी कोठरी खाली थी इसमें प्रायः ननद भौजाई का अधिक समय इसी में व्यतीत होता था। अब ऊपर की कोठरियो की सजावट सुनिये। एक कोठरी में मोतीलाल का शयनागार था इस कोठरी में बहुत कारीगरी सजाने में दिखाई गई थी एक ओर एक लोहे के तारों से बिना हुआ पंलग बिछा है तिसपर बिलस्त भर ऊंचा मोटा गद्दा पड़ा है। उस पर एक सफेद चद्दर बिछी है। पास ही एक दूसरी भी चारपाई निवार से बुनी पडी है। एक ओर एक टेबिल रक्खा है। उस पर लिखने का सामान सब यथास्थान रक्खा है। और उसके दोनो ओर आलमरी धरी हैं जिनमें मोतीलाल के पढ़ने की सब किताबें क्रम से रक्खी हैं। दूसरी ओर कपड़े आदि के बक्स रक्खे हैं। दिवालों पर अच्छे अच्छे प्रसिद्ध पुरुषों की तसवीरें टगी हैं सामने दिवाल मे एक बड़ा सा शीशा भी लगा है। वहीं एक क्लाक (घड़ी) भी अपना समय बता रही है दूसरी कोठरी में मुन्नी के सोने और पढ़ने का कमरा है यह भी आवश्यकीय वस्तुओं से सजा है तीसरा चुन्नीलाल और हीरालाल के शयन करने के लिये ज़रूरी चीज़ों से सुशोभित हो रहा था।

इन दोनो उत्साही और उद्योगी ननद भौजाई ने उस पिछवाड़े वाली जमीन मे अपने हाथ से उसे ठीक करके भांति भांति के सुगन्धित फूल लगाय दिये थे। यही नहीं किन्तु उसमें शाक

भाजी भी बो दी थी जिससे रोज की तरकारी का काम उनका चल जाता था। इस प्रकार उन दोनों ननद भौजाइयो ने अपने पौरुष से उस घर को सजा दिया। जो कोई देखने उस समय में आता था, वह उस घर की शोभा को देख कर मुग्ध हो जाता था और उन दोनों की बड़ी प्रशंसा करता था।

इधर जब रामलाल और मोतीलाल ने अपने घर की सजावट देखी तो उनकी प्रसन्नता का कुछ ठिकाना न रहा उन दोनो पिता पुत्र ने अपने मन में समझा कि, यह दोनो ननद भौजाई गृहस्थी को भली भाँति संभाल लेवेंगी।

चतुर्थ परिच्छेद

आज कार्तिक मास के कृष्णपक्ष की तेरस तिथि है, कोई २ इसको धन तेरस कहते हैं। आज के दिन सब हिन्दू गृहस्थों के घर लक्ष्मी का पूजन होता है। आज के दिन काशी में ठठेरी बाज़ार मे कसेरा लोग अपनी बासनों की दूकानें बड़ी कारीगरी के साथ सजाते हैं। जिनकी शोभा देखने के लिये सब मनुष्य एकत्रित होते हैं जिस वक्त ये दुकानें सजाई जाती हैं और मनुष्य कौतूहल से एकत्रित होते हैं उस समय इतनी भीड़ होती है कि, यदि एक थाली फेंक दी जाय तो वह ऊपर ही ऊपर रह जाय और जमीन में न गिरे। उस समय की शोभा देखने ही योग्य होती है। सड़क की दोनो पट्टियों में यह मालूम पड़ता है माना विश्व की सुवर्ण सम्पदा यहीं आकर एकत्रित हुई है, उस वक्त यहा मालूम पडता है जैसा लंका में से सब सुवर्ण लाकर यहां रख दिया गया हो।

आज के दिन सुनने में आता है कि, नये बासन खरीदने का बडा महात्म्य होता है, प्रायः सभी आज के दिन एकाध बासनी खरीदते हैं, जो लोग गरीब होते हैं वे और कुछ नहीं तो छोटी कटोरी ही दो चार पैसे की खरीद लेते हैं। इसी से हमारे रामलाल जी भी इस बाज़ार में आये हैं और किसी बासन खरीदने के विचार में इस दूकान से उस दूकान उस दूकान से इस दूकान पर चक्कर लगा रहे हैं परन्तु उन्हें कोई वस्तु जचती नहीं है जिसे कि वे खरीदें। कई फेरा घूमने पर उन्होंने एक

बटलोई पीतल की रसोई के लिये खरीदी। और उसे घर ले आये जिसे देखकर कृष्णा और मुन्नी बड़ी प्रसन्न हुईं। उस दिन उसी बटलोई में तरकारी बनाई तीसरे दिवाली का त्योहार सर पर आ गया तब मुन्नी ने कृष्णा से कहा—क्यों भाभी अब दीवालों पर मन्त्र और सुन्दर श्लोक कब से लिखोगी ! आज ही से जो लिखी जायगी तब तो अच्छे लिखे जांयगे नहीं तो नहीं। कृष्णा ने कहा—दीदी ! तुम बाबू जी से तीन चार रंग मंगवा लो और आज ही चलो दोनों जनी मिल कर लिखें। मुन्नी तुरन्त अपने पिता के पास गई और उनसे रंग लाने के लिये विनती करने लगी। तब रामलाल जी ने कहा अच्छा मैं जाता हूं रंग ला देता हूं, इतना कह के बाज़ार चले गये और रंग लाकर दे दिया। तब तो मुन्नी प्रसन्नता से हंसती हुई भाभी के पास गई और बोली 'चलो तुम पेंसिल से मन्त्र लिखदो फिर मैं सब रंग भर लूंगी।" उसने कहा अच्छा चलो मैं चलती हूं। इतना कह वे दोनों ननद भौजाई ऊपर वाली कोठरी मे चली गईं।

पाठक आइये आप लोग भी हमारी कृष्णा की चित्रकारी को देखिये देखो वह किस प्रकार चित्रकारी खींचती है। वह देखिये उसने एक पेन्सिल और एक परकाल दस बारह बालों की कूंची जो कि रंग भरने के काममें आती है और एक लकड़ी का दोफुटा टुकडा लेकर वहां आ गई और मुन्नी ने तब तक थोड़ा सा सफेदा घोल कर दिवाल उस सफेदा से पोत रक्खी थी। अब कृष्णा ने अपनी कारीगरी शुरू कर दी। उसने पहिले दीवाल को नापा, पांच फुट लम्बी और साढ़े तीन फुट चौड़ी दीवाल नाप के पेन्सिल से उसमें निशान लगा दिया। फिर उसने चारो ओर दोहरी किनारी सूत भर के फासले से खींची, दो इञ्च बीच में ज़मीन छोड़ कर फिर वैसी

ही किनारी खींची। इसके उपरान्त उस बीच वाली ज़मीन में उसने महाभारत के वनपर्व का नकशा खींचा बड़े २ विशाल वृक्षों की कतार बड़ी खूबी से बनायी फिर बीच में एक पत्तों की कुटी बनाई और कुटी के सामने द्रोपदी बैठी थी, उसके ठीक सामने सत्यभामा बैठीं द्रोपदी जी से स्त्रियों के धर्म्म के विषय में बात चीत कर रहीं थी देखने से यही मालूम होता था कि ये दोनो बातचीत कर रही हैं। उसके थोड़ी दूर पर एक ऊंचे पत्थर पर युधिष्ठिर बैठे थे और अर्जुन, भीम, नकुल, सहादेव आदि चारों भाई बैठे उनकी आज्ञा की प्रतीक्षा कर रहे थे। जब कृष्णा इस चित्र को खीच चुकी तब मुन्नी बड़ी प्रसन्न हुई और बोली,– "भाभी, तुम तो बड़ी चित्रकार जान पड़ती हो। अच्छा अब और जो यह खाली ज़मीन बची है इसमे क्या खींचोगी?"

कृष्णा ने कहा—जो तुम कहो वही मैं बना दूं।"

मुन्नी ने कहा—"भाभी! मेरी राय मे तुम बालकाण्ड का धनुष यज्ञ लिखो"।

कृष्णा ने कहा–अच्छा तो मैं पहिले फुलवारी से शुरू करती हूं।

इतना कह कर उसने उसी गज से नाप के तीन भाग किये, एक मे फुलवारी का सीन इस खूबी से खीचा कि, देखने से यही मालूम होता था मानो सच्चे हो जान पडते हैं एक ओर छोटी सी पुष्करणी दूसरी ओर एक झुण्ड सखियों का मय जानकी एसा बनाया मानो वह परस्पर बात चीतकर रही है। तीसरी ओर सामने ही एक लता-कुञ्ज की ओट मे रघुनाथ जी की तसवीर बनाई जोकि लक्ष्मणजी से बातें करते मालूम होते थे इस प्रकार उसने फुलवारी का दृश्य खींच डाला।

दूसरे हिस्से में उसने धनुषयज्ञ का दृश्य खींचा बीच में धनुष टूटा हुआ पड़ा है चारों ओर देश देश के राजे लोग बैठे

हैं। जानकी जी विजय माला पहिराय कर अपनी सखियों के सहित एक ओर जा रही हैं एक ओर परशुरामजी रामजी से वार्तालाप कर रहे हैं, और एक ओर प्रजा लोगों की भीड खड़ी तमाशा देख रही है। इस प्रकार धनुष यज्ञ का दृश्य खींच डाला। दूसरी ओर में उसने रामजी और सीता जी के विवाह का बडी चतुरता से दृश्य खींचा, जो कि यही मालूम होता था मानो सचमुच ही विवाह हो रहा है। यह तीनों सीन खींचने के उपरान्त उसने उन किनारे वाली ज़मीन मे एक बेल ऐसी सुन्दर बनाई कि, देखने से मन नहीं भरता था।

इसके उपरान्त मुन्नी और कृष्णा ने मिल कर उनमें रंग भरा तब तो उन चित्रों में केवल यही बाकी रह गया कि, प्राण को यह लोग नहीं डाल सकीं जिससे वह सब चित्र बोलने। फिर दोनों ननद भौजाइयों ने भड़ेहर को भी नाना प्रकार के चित्र-कारी से सुशोभित बना दिया। तब मुन्नी ने अपने पिता और तीनों भाइयों से उसके देखने की प्रार्थना की जिसे सुन कर वह सब जने वहां देखने को आये। जब उन लोगों ने उस चित्र-कारी को देखा तो बडे प्रसन्न हुये और मुन्नी से पूंछा कि, यह तूने बनाया है? तब मुन्नी ने कहा नहीं बाबू जी मैंने नहीं बनाया है, पेन्सिल से चित्रकारी तो भाभी जी ने खीचीं है फिर हमने और भाभी ने इसमें रङ्ग भरे हैं।"

रामलाल जीने बडे आश्चर्य से कहा—हां बहू ने ऐसी चित्र-कारी की है? इससे तो मुझे यह मालूम पडता है कि, हमारी बहू दस्तकारी के कामों में बड़ी चतुर होगी?

मुन्नी ने कहा—बाबूजी! आप का कहना बहुत ठीक है। भाभी दस्तकारी के काम में बहुत हुशियार हैं उन्होने मुझे भी बहुत से काम सिखाये हैं, जिनको कि मैंने अच्छी तरह सीख

लिया है और बाबूजी यही नहीं हमारा भाभी पकवान बनाना मुरब्बा बनाना, अचार डालना, पापड़. बड़ी, मुगौरी आदि सभी बनाना अच्छी तरह से जानती हैं।

रामलाल ने कहा—वाह वाह! मुझे क्या मालूम था कि हमारी पतोहू इन बातों में इतनी हुशियार है? देखो जबसे मोती का विवाह हुआ है, तब से इन बातों के लिये मैं तरस गया। यदि मैं यह जानता कि, हमारी बहू इन सब चीज़ों को बनाना जानती है, तो मैं सब चीज़ घरही पर बनवाय लेता वे सब बजार मे भी मिलती हैं, परन्तु उनमें पैसा बहुत लगता है।

इस बात को सुनकर कृष्णा ने मुन्नी से कहा—दीदी! एक तो बजार में एक पैसा का दो पैसा देना पड़ता है और तिस पर भी जैसा घर की चीज मे स्वाद होता है वैसा बज़ार की चीजों में स्वाद नहीं होता। रामलाल ने कहा—ठीक ही है जो मसाला अपने घर पडता है वह बज़ार में थोड़े ही पडता है फिर स्वाद उनमें कहां से आवे?

कृष्णा ने कहा—"दीदी! बाबू जी की इच्छा जिस चीज के बनवाने की हा वह मेरे से कहैं, मैं उसके बनाने मे जो जो वस्तु तथा मसाले लगेंगे उन्हें एक परचा पर लिख दूंगी, उसे बाबू जी लादेवें, फिर देखो मैं कैसा उसे बनाती हूं।"

रामलाल—अच्छा कल दिवाली भी है, मेरी इच्छा यह है कि थोड़ा पानी पीने के लिये कुछ बन जाय।

कृष्णा—"जो जो चीज़ बनवाने की इच्छा हो उसे आप कहैं।

रामलाल—"बेटी, मेरे दांत तो हैं नहीं जो कोई कड़ी चीज़ बनावऊं हां ऐसी कोई चीज बनाओ जो मुलायम हो।"

कृष्णा ने कहा, जो जो चीज़ मैं कहूं उसे आप लादें इतना कह कर उसने एक कागज़ पर नीचे लिखे सामान मंगवाने को कहा—

मूंग	ऽ१	किसमिस	)॥
चना	ऽ॥	पिस्ता	)॥
घी	ऽ३	इलाइची	)।
चीनी	ऽ३	केसर	)
सूजी	ऽ।	बदाम	)॥
दूध	ऽ२	गिरी	)॥
खोआ	ऽ॥	लउआ १	)॥

रामलाल ने इस परचा को हाथ में लेकर बहू की बड़ी प्रशंसा की और सब से कहा—देखो बेटा, यह मोती की बहू मनुष्यो में नहीं है. इसे तुम लोग साक्षात् लक्ष्मी का अवतार समझो, हम लोगों के भाग्य से इस घर में आई है।

इस बात को सुन कर मुन्नीलाल और हीरालाल ने कहा बाबू जी ! इसी से हमारी भाभी के पिता ने इसका नाम कृष्णा रक्खा है कृष्णा नाम भी तो लक्ष्मी का ही है, फिर आप भी लक्ष्मी ही बताते हैं। इस बात से बाबू जी और मुन्नी हंसने लगे और बोले बेटा तुम क्यों घबडाते हो ? मोती की बहू को लक्ष्मी कहकर मैंने बताया है और तुम लोगों की बहू को महालक्ष्मी और महासरस्वती नाम रक्खूंगा।

इस बात से चुन्नीलाल और हीरालाल ने शरमा के अपना शिर नीचा कर लिया। तब रामलाल ने कहा, अच्छा बहू मैं बाज़ार जाता हूं और यह सब सौदा ले आता हूं। इतना कह कर आप बाजार चले गये और सब लोग अपने अपने काम में लग गये।

दूसरे दिन प्रातःकाल उठ कर मुन्नी और कृष्णा ने गृहस्थी के सब काम जल्दी निपटा कर फिर जल पान के सामान में हाथ लगाया। पहिले तो उसने मूंग को भरसांई में भुजवाय लिया फिर उसे दल कर छांट लिया जिसमें उसकी सब भूसी अलग होगई। पश्चात् उसने मुन्नो से कहा कि, दीदी! तुम इसे मोटा मोटा पीस लाओ तब तक मैं और सब चीज़ों को ठीक कर रखती हूं। इधर तो मुन्नी मूंग पीसने गई और इधर कृष्णा ने उस लउआ को छोलकर उसके सब बीये निकाल डाले फिर बिलइया में उसे बेड़े बेड़े कस लिया जिससे लम्बे लम्बे लच्छे उसके होगये। इसके उपरान्त केसर को पत्थर पर रगड़ कर एक कटोरी में रख लिया और सब मेवों को साफ करके गिरी के महीन महीन टुकडे बना लिये। इतने में मुन्नो भी मूंग को पीस लाई तब कृष्णा ने कहा, दीदी! तुम बहुत मुझसे कहा करती थी कि, मुझे मूंग की बरफ़ी बनाना बताओ। सो, लेव आज इसे तुम बनाओ और मैं तुम्हे बताती जाऊगी।" मुन्नी ने बडी प्रसन्नता से इसे स्वीकार किया और झट चूल्हा सुलगा दिया, तब कृष्णा ने कहा, देखो इस मूंग के आटे में घी डालने का यह हिसाब है कि फ़ी सेर में ढाई पाव घी डालकर इसे मन्दी २ आंच से भूने। इसको इस साव· धानी से चलाता जाय कि कढाई में आटा लगने न पावे। अब तुम आटा उसी हिसाब से भूनों और मैं दूसरा काम कराती हूं इतना कहकर उसने दूसरे चूल्हे में आग सुलगाई फिर बटुए मे लउआ के लच्छे रखकर थोड़ा सा पानी का छींटा मार चूल्हा पर चढ़ा दिया, और उसे ढक दिया। इसके बाद वह मुन्नी की तरफ़ देखने लगी। मुन्नी बराबर आटा भून रही थी, जब उसमें सुगन्ध आने लगा तब कृष्णा ने कहा, अब इसे चूल्हे पर

से उतार लो और उसी आटे के हिसाब से फ़ी सेर तीन पाव बूरा डाल कर चासनी बनाओ। इधर वे लच्छे तय्यार होगये तब उसने उन्हें उतार लिया और ठन्डे होने पर इन्हें इसारे से दबा कर पानी उसका निकाल दिया। तब आध सेर बूरे में वही केशर पीसी हुई मिलाई जिससे वह पीली होगई, तब उसने थोडा घी लेकर कढाई में छोड़कर आंच पर चढ़ा दी, और उसी में वे सब लच्छे डालकर धीरे धीरे चलाने लगी जब सब में घी लिपट गया तब उसमें बूरा डाल दिया, और नीचे ऊपर करके सब बूरा मिला दिया, फिर चूल्हे से उतार कर एक थाली में फैला दिया। इधर मुन्नी ने चासनी तैयार कर डाली तब उसमें कृष्णा ने मूंग का भुजा हुआ आटा डाल दिया और सब मेवा खूब मिला दी फिर बाद को एक परात में उसे डाल कर उसे जमा दिया।

यह देखकर मुन्नी ने कहा—अरे यह खोया की बरफ़ी की तरह तुमने जमाया है, अब समझ गई कि, चाहे जिस चीज़ की बरफ़ी बनानी हो परन्तु चासनी इसी तरह बनेगी ?

कृष्णा—"नहीं, सब की चासनी एक सी नहीं बनती है जितनी बरफ़ी सूखी वस्तु की है जैसे खोआ की बरफ़ी, मूंग की बरफ़ी, गिरी की बरफ़ी आदि जब बनाना हो तब तो इसी तरह की चासनी बनानी चाहिये और जब आम की बरफ़ी, खरबूज़ा की, सिंघाड़े की, कसेरू की और पेठे की बरफ़ी बनानी हो तब कुछ कड़ी चासनी बनानी चाहिये।

मुन्नी—वह इस चासनी से कितनी कड़ी बनानी चाहिये ?

कृष्णा—"वह इतनी कड़ी होनी चाहिये कि, उसका गोली

बँध जाय तब समझना चाहिये कि यह बन गई। घबड़ाओ नहीं मैं तुम्हें धीरे धीरे सब चीज़ बनाना बना दूंगी, ईश्वर से इस बात की प्रार्थना करो कि, वह हम लोगो के ऊपर दया करें जिसमे भांति भाति की चीज़ घर मे बना करैं और मैं उन चीज़ों को तुम्हारे हाथ से बनवाया करूं।

मुन्नी—अच्छा यह दोनें चीज़ें तो मैं अब बना लूंगी अब इस बेसन और खोआ का क्या बनेगा।

कृष्णा—"इसको पहिले भून लो पीछे जो बनाया जायगा उसका विचार किया जायगा।" इसी मुन्नी ने खोआ को और वेसन को भूनना शुरू किया और उधर कृष्णा ने दूध से गेहूं का आटा सान डाला फिर छोटी छोटी पूडी बेल कर रखने लगी, इधर खोआ भी भुज गया। तब मुन्नी ने उन्हीं पूड़ियों में रख के गुझियां बना डाली औ उन्हें सेक लिया इसके बाद वेसन में बूरा डाल कर लड्डू बना लिये। इनमें भी मोठा उसी हिसाब से डाला था यानी सेर पोछे तीन पाव मीठा और तोन पाव तथा चौदह छटांक घी डालना चाहिये।

इसके उपरान्त दोनों ननद भौजाई ने ब्यालू बना कर जैसे ही उठीं तैसे ही सब जने बाहर से आ गये। सबों ने हाथ पैर धोकर सन्ध्या किया। बाद को सब लोग एक सङ्ग ब्यालू करने बैठे। तब मुन्नी ने भाभी के कहने से सब लोगों को लउवे का लच्छा थोड़ा थोड़ा और दो दो गुझियां और एक एक वेसन का लडुआ थाली मे परोस दिया। तब लोगों ने ईश्वर का ध्यान करके भोजन करने में हाथ लगाया और एक २ चीज़ की प्रशंसा करने लगे। रामलाल ने कहा—"मुन्नी ! आज तो तुमने बडी अच्छी चीज़ें बनाई हैं ?

हीरालाल—"हां, दीदी ने बनाया है, भला दीदी क्या जाने कि कैसे यह बनता है ?"

चुन्नी—"यह तो भाभी की कारीगरी है, मुन्नी क्या जाने।

रामलाल—नहीं जी मेरी बेटी क्या बनाना नहीं जानती है ? जो तुम लोग ताना मारते हो इसने अपनी भाभी से सब काम अच्छी तरह सीखा है और सीखती जाती है।"

हीरालाल—"बाबू जी ! यह कहना आपका सच है कि अभी दीदी सीखती हैं लेकिन यह लच्छे तो भाभी ने ही बनाये हैं चाहे आप दीदी से पूछ लें।

रामलाल—क्यों बेटी यह किसने बनाये हैं ?"

मुन्नी—यह लच्छे तो भाभी ने ही बनाये हैं मैंने तो मूंग की बरफ़ी और गुझियां सेंकी हैं। भाभी बनाती थीं और मैं सेकती जाती थी।

हीरालाल—"हमने तो पहिले ही कहा कि दीदी क्या जाने।

इस पर रामलाल ने कहा—'भाई धीरे धीरे सब आ जायग।

चुन्नी—"आ चुका ?"

इस पर मुन्नी ने कुछ नाराज़ होकर कहा—अच्छा मुझे तो आचुका परन्तु देखूंगी कि तुम्हारी बहू सीख ही के मायके से आवेगी ?

इस बात से सब कोई खिलखिलाकर हँस पड़े और चुन्नी लाल ने शरमा कर शिर नीचा कर लिया। फिर रामलालजी ने कहा भाई ! यह लच्छा तो मेरे ऐसे बुड्ढों के खाने लायक बना है देखो कैसा मुलायम और सुगन्धित बना है। भाई मैंने तो घर में ऐसा कभी नहीं खाया था, भला बहू के बदौलत यह चीज़ तो आज खाने में आई।

चुन्नी—बाबूजी ! गुझियाँ भी बहुत नर्म बनी हैं।

हीरालाल—"मुझे तो लडडू बड़े अच्छे लगते हैं। क्योंकि बाज़ार के लडुओं में मीठा बहुत रहता है और इसमें मीठा ठीक पड़ा है।

रामलाल—भाई तुम लोग उस ईश्वर की बन्दना करो जो तुम्हें ऐसी भाभी उसने दी है नहीं तो कहाँ से यह सब चीज़ें मिलतीं ?

पाठक ! इसी प्रकार सब कोई प्रशंसा करते जाते थे और खाते जाते थे। मोतीलाल तो मनही मन अपनी स्त्री की प्रशंसा करते थे। उपरांत सब ने भोजन करके हाथ धोया और अपने अपने बिछौना बिछाने लगे क्योंकि आज इन दोनों ननद भौजाइयों को बिछौना बिछाने की फुरसत नहीं मिली थी। केवल बाबूजी का बिछौना कृष्णा ने बिछा दिया था। सब लोगों के खा लेने के बाद इन दोनों ने भी भोजन किया फिर सब बासन धोकर अपने बिछौना बिछाने चली गई। इधर रामलाल जी ने रामायण पढ़ना आरम्भ कर दिया १ घंटा रामायण पढ़ कर सब कोई अपने २ शयनागार में चले गये।

पञ्चम परिच्छेद

आज कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की अमावस्या है सूर्य्य भगवान को डूबे ४ घंटे के लगभग हो चुके है, परन्तु चन्द्रदेव का आज कहीं पता नही था, तिसपर भी सब नक्षत्रों के निकलने से आकाश निर्मल दिखाई दे रहा है, आज की शोभा कुछ निराली ही दिखाई पड़ती है। उधर तो आकाश में सब नक्षत्र खिले हुये हैं और इधर पृथ्वी पर भी आज दीपावली के कारण घर घर मुडेरों पर, छज्जों पर, छतों पर, दीवाल के तख़्तों पर, जिधर देखो उधर ही दीपक जगमगा रहे हैं। आज के दिन जो ग़रीब थे वे भी दस पांच दीपक जलाकर अपने घर बाहर में रखे हुये हैं। उन दीपकों के देखने से यही प्रतीत होता है मानो आज आकाश और भूमि मे दोनों ही जगह नक्षत्र उदय हुए हैं। आज घर घर आनन्द छा रहा है जुआरी जुआ खेलने में प्रवृत्त हुए हैं। परमेश्वर के भक्त मन्दिरों मे बैठे जाप कर रहे हैं उन्हें जुआ खेलकर दूसरों के माल को बिना परिश्रम प्राप्त करने की कुछ परवाह नहीं।

आज हमारे रामलाल जी तो कोठो में फँसे हुये हैं क्योंकि कोठी में आजके दिन सब नया बही खाता बनाया जाता है और आज से नया हिसाब चलता है, इसके सिवाय पहिले वहां हवन होता है पश्चात् नौकरों को मिठाई बांटी जाती है। उस दिन

जितने नौकर होते हैं प्रायः सभी वहाँ प्रस्तुत रहते हैं। इसी से रामलालजी अभी नहीं आये हैं चुन्नीलाल और हीरालाल दीपोत्सव देखने बाहर चले गये हैं। घर में केवल मोतीलाल कृष्णा और मुन्नी यह तीन आदमी रह गये हैं। उन तीनों में नीचे लिखी यों बाते हो रही हैं।

मुन्नीलाल-देखो भैया, आज के दिन की भी कैसी शोभा होती है ?

मोतीलाल—आज के दिन की शोभा तो कलकत्ते और बंबई में देखने में आती है" जहां कि चारो तरफ़ गैस की रोशनी जलती हैं, बस यही मालूम पड़ता है मानो पृथ्वी में तारे उगे हैं।

इसी प्रकार अनेक तरह की बातें होती रहीं, इसके बाद कृष्णा ने मुन्नी से कहा, "दीदी ! आज दिवाली भी हो गई, अब हम लोगों को सिवाय गृहस्थी के और काम करने को नहीं है। इस लिये आज बाबूजी आवें तब उनसे जो मैं कहूं वह सब चीज़ बाज़ार से मंगालो, तब हम तुम मिलकर कुछ काम करें जिसमे घर में दो पैसा दिखाय।"

मुन्नीलाल—"जो तुम कहो सो बाबूजी से या भैया से कह कर मंगालूं ?"

कृष्णा—"पहिले तो तुम, एक तोला रेशम, एक थान मलमल और एक अटिया कच्चा सूत मंगवाओ और उसे जैसे मैं बताऊं वैसे मिलकर बनाओ, जब वह तैयार हो जाय तब उसे बाज़ार में बिकवा लो, जो कुछ मुनाफा होगा उससे फिर यही सब मंगवाय लेंगे। ऐसा करने से खर्च भी थोड़ा पड़ेगा और चीज़ भी ख़राब नहीं होगी।

यह सुनके मुन्नी ने मोतीलाल से पूछा,-क्यों भैया जी भाभी कहती हैं ऐसा हम लोग करें ? इसमें तुम्हारी क्या राय है ?

मोतीलाल ने कहा—"मुन्नी, तुम्हारी भाभी जो कहती हैं वह बहुत अच्छा कहती हैं, इसमें तुम्हें कई लाभ होंगे, एक तो तुम्हें गुण आ जायगा। यदि तुम अपनी भाभी के सङ्ग काम करोगी तो कई तरह के कसीदे काढ़ने मालूम हो जांयगे। दूसरे चार पैसे भी तुम अपने पास बटोर लोगी, जिससे अपने लिये गहने बनवा सकती हो।

मुन्नी—अच्छा तो तुम जो भाभी ने कही हैं वह सब चीज मंगवाय दो।

मोतीलाल—हम तुम्हें रुपया देते हैं उसे बाबू जी को देकर मंगवाय लेना, मुझे फुरसत नहीं है। तुम तो अपनी भाभी के साथ मिल कर काम करो और मैं भी परसों दुइज से लड़का पढ़ाया करूंगा। कल मुझ से हर्षचन्द्रजी ने बुलवाय कर कहा था कि, तुम दुइज से मानिकचन्द को संध्या के समय दो घण्टा पढाया करो। मैंने भी अपने मन में सोचा कि चलो और कुछ न होगा तो मेरी फीस ही का काम चलेगा। यह सोच कर मैंने पढ़ाना स्वीकार कर लिया तब उन्होंने मुझे चलते समय दस रुपये का नोट दिया और कहा कि लो इससे तुम अपना खेल तमाशा देखना। मैंने रुपया लेने से इनकार किया तब वे कहने लगे, देखो मोती! हमारे आगे मानिक और तुम बराबर हो, इसलिये कल दिवाली है सब कोई चीज वस्तु ख़रीदते हैं सो तुम भी अपने लिए कुछ कपड़े बनवाय लेना। या जो मन में आवे सो करना। इतना कहकर वह नोट मुझे फिर दे दिया। तब मैं उन्हें प्रणाम करके अपने घर चला आया। ये वेही रुपये हैं जो मैं तुम्हें दे रहा हूं। इतना कह कर मोतीलाल ने वह नोट मुन्नी को दे दिया।

मुन्नी ने कहा—"क्यों भैया ! यह हर्षचन्द्र कौन हैं ?"

मोतीलाल--"बहिन तुम हर्षचन्द्र को नहीं जानती हो ? जब तुम छोटी थीं तब वे हमारे घर प्रायः आया करते थे बाबू जी से और उनसे बड़ी गहरी मित्रता है। यह अपने ही जात के हैं, इनका मकान कचौड़ी गली में है, इनका स्वभाव बडा ही दयालु है, इनकी उदार वृत्ति को देख कर सभी प्रशसा करते हैं। इनके यहाँ जवाहिर का काम होता है। जिसकी अच्छी आमदनी है, उसी आमदनी से उनने सदावर्त खोला है जिसमें २५ ब्राह्मण रोज़ भोजन करते हैं और परदेशियों को सीधा मिलता है। ग़रीब दुखियों को आप वस्त्र भी बांटते हैं। कितने ही अनाथ स्त्रियों को मासिक कुछ दिया करते हैं। आपने एक दिन हमारे बाबू जी के दुःख को देख कर कहा—कि, आप मेरे घर में चले आवें, मैं आपकी हर प्रकार से सहायता करूंगा। किन्तु बाबू जी ने स्वीकार नही किया। स्वीकार न करने के कई कारण थे। एक तो वे अपने स्वजाति के ठहरे, दूसरे वे धनपात्र और हम ग़रीब हमारी उनकी बरोबरी कैसी ? तीसरे वह मित्र थे, एक साथ रहने से मित्रता में वल पड़ जाता है।

तब से हमारे पिता को वे बहुत चाहते हैं और उन्होंने ने कह कर मुझे अंगरेजी पढ़ाया है, और मुझे अपने लड़के के समान मानते हैं।

इतने ही में रामलाल जी कोठी से आगये। कृष्णा ने तुरन्त उठकर उन्हें एक लोटा जल पैर धोने को दिया। रामलाल जी ने अपने वस्त्र उतार फिर पैर धोकर चटाई पर बैठ गये। मुन्नी पंखा करने लगी। इतने ही में बाहर किसी ने सांकल खड़काई

जिसे सुनकर मोतीलाल नीचे उतर गये और किवाड़ खोलने पर मालूम हुआ कि चुन्नीलाल हीरालाल खड़े हैं दोनों भाइयों के घर में आजाने पर फिर किवाड़े बन्द कर दिये और सब कोई ऊपर चले आये।

रामलाल ने सब को आया देखकर कहा--मुन्नी अब क्या देरी है। सब कोई घर में इस वक्त हैं चलो हवन करलें।"

मुन्नी--"आपही की देरी थी यहाँ क्या है। इतना कहकर वह खड़ी होगई। तब सबो ने जाकर हवन किया और एक दूसरे को मस्तक नवाया, पिता के चरण सबने छुये वृद्ध ने उन्हें आशीर्वाद दिया जिससे सब बड़े प्रसन्न हुये। पीछे सब लोगों ने भोजन किया और छत पर जाकर लेट रहे। तब मुन्नी ने अपने पिता से कहा बाबू जी! आप हम लोगो को जो कहें सो लादें। रुपया आपको मैं कल दे दूंगी।

रामलाल ने कहा—"क्या मंगाना है जो रुपया दे देगी?

इस पर मुन्नी ने सब उपरोक्त बात कह सुनाई जो कि भाभी ने कहा था। रामलाल सुनकर बड़े प्रसन्न हुये और बोले कि हम सबेरे दुकान खुलते ही तुझे यह सब चीजे लादेंगे। देखें तुम कैसी धोती बनाती हो? नमूना बन जाय तो मैं अपनी कोठी में उसकी बातचीत चलाऊंगा ईश्वर चाहेगा तो बड़ा लाभ तुझे होगा।

रामलाल जी अपनी पतोहू के गुणों की प्रशंसा करते २ निद्रादेवी के वश में होगये। उसके उपरांत सब कोई अपने अपने बिछोंने पर चले गये।

दूसरे दिन सबेरे उठकर शौचादिक क्रिया करके रामलाल जी बाज़ार गये और वहां से ६) रुपये का एक मलमल का

थान ख़रीदा फिर एक तोला लाल, पीला, हरा रेशम एक अटिया सूत ख़रीद कर मुन्नी को ला दिया। तब मुन्नी ने कृष्णा से कहा लो भाभी ! अब आज ही से इसमें हाथ लगा दो।

कृष्णा–आज के दिन फ़ुरसत नहीं है, कल तृतीया गुरुवार है, बस कल से इसमे हाथ लगा दिया जायगा।

आज तृतीया गुरुवार है। मुन्नी और कृष्णा ने सबेरे उठ कर सब काम जल्दी २ करके नौ बजते २ रसोई बना दी। फिर सब लोगो को भोजन कराके पीछे आपने भोजन किया। इसके बाद कृष्णा ने एक सफ़ेद कागज लेकर पेन्सिल से कुछ लिखने लगी। मुन्नी ने पूछा—"भाभी ! क्या लिखती हो देखो सब काम से अब खाली होगई चलो धोतियों में हाथ लगावें"। इस बात को सुनकर कृष्णा ने कहा मैं वही काम कर रही हूं जब तक इस प्रकार गृहस्थो मे कार्य करने की प्रणाली न बनेगी तब तक कोई काम ठीक से नही होगा।

मुन्नी ने कहा "प्रणाली कैसी" कृष्णा ने कहा "यही कि देखो इस घर मे हम और तुम दो ही जनीं काम करने वाली हैं इसलिये हम लोगों को सब काम बाँट लेना चाहिये जिस में काम करने में सुभीता हो। मैंने यह देखो लिखा है।

कार्य्य विवरण	समय
सबेरे पांच बजे उठकर शौचादिक से निपट कर दोनों जने मिलकर पानी भरना ...	१ घंटा
कृष्णा—बिछौने लपेट कर उठाना और तीनों कोठरी, छत, सीढ़ी झाड़ना।	
मुन्नी—दोनों बैठक झाड़ना, रसोई घर झाड़ना पोतना	आध घंटा
कृष्णा—बासन मांजना आदि।	

मुन्नी—दाल चावल बीनना और रसोई का
सामना ठीक करना ... ... १ घंटा
कृष्णा—स्नान करना, फिर रसोई बनाना, सब
को खिलाना ।
मुन्नी—स्नान, करना, फूलों के गमलों में पानी सींचना
और खाद पास देना तथा ऊपरी काम करना ४ घंटा
कृष्णा—घर की चीज़ वस्तु उठाना धरना ।
मुन्नी—बासन मांजना ... ... १ घंटा
दोनों मिलाकर कसीदा काढ़ना ... ... ४ घंटा
मुन्नी—ब्यालू बनाना, सब को खिलाना । ...
कृष्णा—दियाबत्ती ठीक करना, जलाना, बिछौने
बिछाना ... ... ३ घंटा
दोनों पढ़ना ... ... २ घंटा
आराम करना ... ... ६॥ से ५ तक

इसके सिवाय यदि प्रति सप्ताह का आवश्यक काम करना हो जैसे हल्दी पीसना, मसाला साफ़ करना कपडे तकिया की खोली आदि सीना अथवा जब कोई सखी सहेली आवे उससे बात चीत करना या कहीं जाना हो तो उस दिन क़सीदा न काढ़ना ।

मुन्नी ने इस हिसाब को जब पढ़ा तो मारे खुशी के कृष्णा के गले लपट गई और बोली—भाभी ! सत्य ही तुम परम बुद्धिमती हो । इस हिसाब के अनुसार यदि हम लोग काम करें तो ज़रूर बड़ा सुभीता होवेगा । रुपया भी पल्ले पड़ जायगा ।

कृष्णा—देखो, आज तो मैं केवल क़सीदा काढ़ने का मुहूर्त

कर देती हूं परन्तु कल से इसी नियम के साथ काम किया जाय।

मुन्नो—जरूर किया जावेगा।

इसके उपरांत कृष्णा ने उस मलमल के थान में से छः डुपट्टे तीन २ गज़ के फाड डाले फिर लकड़ी के छापे से उस मे चारों कोनों पर कलंगा छाप लिये और परमेश्वर का ध्यान करके उसे काढ़ने को एक तो मुन्नी को दे दिया और एक आपने ले लिया। कृष्णा ने अपने कार्य्य कौशल से तीन घण्टे में एक डुपट्टा तैयार कर लिया, परन्तु मुन्नो के अभी दो ही कोने तैयार हुए थे। तब कृष्णा ने कहा—अच्छा अब रहने दो कल बनाना, चलो ब्यालू को तैयारी करें। इतना कहकर वे दोनो ननद भौजाई ब्यालू बनाने चली गईं।

दूसरे दिन उसी नियम के अनुसार उन दोनों ने काम करना आरम्भ कर दिया और आठ दिन में वे छहो डुपट्टा तैयार कर डाले और बाबू जी से कहा कि, यह सब तैयार हो गये हैं अब आप इन्हे बाज़ार में बेच कर दाम ले आइये।

रामलालजी ने जब उन डुपट्टा को देखा तो बड़ा आश्चर्य करने लगे कि इन दोनों ने कैसे आठ दिन में इसे काढ़ा और इसमें नीचे फुंदना भी बांधा है। अपनी पतोहू की बडी प्रशसा करने लगे थोड़ी देर बाद जब वे कोठी गये तो उन डुपट्टा को लेते गये वहां जब उनके मालिक ने उसे देखा तो बोले कि, यह किसने काढ़े हैं? रामलालजी ने कहा,—"यह मोतीलाल की बहू ने काढ़ा है और उसी ने फुंदने बांधे हैं। मालिक ने कहा, तब तो तुम्हारी पतोहू बड़ी होशियार मालूम पड़ती है। देखो कैसी कारीगरी से इसमें कलंगा बनाया है। अच्छा इन्हें तो हम मोल खरीदही लेंगे परन्तु आगे के लिये तुम अपनी पतोहू से पूछो कि

वह रेशमी साडी पर कलावत्तू बेल बूटे काढ़ सकती है ? यदि साडी बनावे तो हम बराबर साड़ियां बनवाया करेंगे'। रामलाल ने कहा,— इसका जवाब कल मैं आपको पूंछकर दूंगा।

सन्ध्या के समय रामलाल को मालिक ने १२) रु० उनको डुपट्टों के दिये और कहा कि, कल ज़रूर इसका जवाब देना। रामलाल ने कहा,—आपको कल ज़रूर उत्तर मिल जायगा। इतना कह कर घर चले आये और मुन्नी के हाथ में वह १२) रुपये रखकर बोले लो तुम्हारे डुपट्टों का मूल्य यह मिला है। और मालिक ने यह पूछा है कि; तुम लोग रेशमी साडी पर कलावत्त से बेल बूटे काढ़ सकती हो कि नहीं ?" इस पर कृष्णा ने कहा,—मुन्नी दीदी ! तुम बाबू जी से यह कह दो कि वे अपने मालिक से यह कहें कि, जब मैं नमूना आप को दिखा दूं तब आप अपनी साड़ी बनने को दीजियेगा। और कल आप बाज़ार से ७) रुपये की एक साडी रेशमी ले आवें फिर जितने रुपये बचें उनमें से लाल और हरा रेशम छः २ माशे ले लेना। शेष रुपयों का कलावत्तू ला दीजियेगा जब मैं उसे बना दूं तब आप अपने मालिक को दिखाइये और देखिये वह उसका क्या दाम लगाते हैं, किन्तु मेरी राय में पहिले उन्हें न दिखाइये, आप दूसरी कोठी में दो चार जगह दिखा- कर देखिये वहां क्या दाम लगता है तब पीछे अपने मालिक को दिखाइये, फिर मुझ से पूंछना जिसे मैं भी समझ लूं तब बेच दीजियेगा।

इतने में मुन्नी ने उन्हें सन्ध्या करने को कहा, रामलाल जी मनही मन कृष्णा की प्रशंसा करते हुये उठे और हाथ पैर धो कपड़े बदल सन्ध्या करने लगे—इतने ही में तीनों भाई भी बाहर से आ गये तब सबों ने सन्ध्या पूजन करके व्यालू किया

उपरांत थोड़ी देर रामायण बांच कर अपने शयनागार में चले गये।

कृष्णा जब सब काम से निपटकर शयनागार में गई तो वहां मोतीलाल उस समय किताब पढ़ रहे थे यह जाकर नीचे चटाई पर बैठ गयी। उन्होंने किताब बन्द करके रख दी। तब कृष्णा ने कहा,—आज बाबूजी ने उन दुपट्टों को १२ रु० पर अपने मालिक के हाथ बेच दिया।

मोतीलाल ने कहा,—"चलो बारह रुपये मिले थोड़े हैं और क्या किसीका ख़ज़ाना लोगी, अरे एक के दो तो लिये।"

कृष्णा ने कहा,—कल फिर मैंने उन्हीं रुपयों से रेशमी साड़ी और कलाबत्तू मगायी है। देखें वह कितने में बिकती है?

मोतीलाल,—मुनाफ़ा छुडाय घाटा तो पड़ेगा नहीं। मेरी राय में तो तुम इसी प्रकार उसका रुपया उसीमें लगाती जाओ और देखो कि एक वर्ष में कितना होता है?

कृष्णा,—यही राय मेरी भी है कि देखें साल में कितना लाभ होता है।

मोतीलाल—यदि इसी प्रकार क्रम से किये जाओगी तो चार पैसे तुम्हारे पास हो जायगे। और मुन्नी भी गुणवती हो जायगी।

इस प्रकार बात चीत करके पुनः दोनों स्त्री पुरुष अपने २ स्थानों पर सोने के लिये चले गये।

षष्टम परिच्छेद

त: काल का समय है, अभी सूर्य भगवान के निकलने में देरी है, पूर्वदिशा में यह मालूम पडता है कि मानो अग्नि लगी हुई है। किन्तु नही वह अग्नि नहीं है उदयाचल से जब सूर्य भगवान निकलते हैं तभी उन्हें अंधकार घेर लेता है वहा उससे संग्राम होता है इसी से उनका मुख क्रोध से रक्त वर्ण हो जाता है। ठीक इसी अरुणोदय के समय हमारी उत्साही मंडली जगतपिता परमेश्वर का नाम लेकर उठ बैठी और सब लोप अपने अगने नित्य के कार्य में लग गये।

सन्ध्या और अग्निहोत्र से निवृत्त होकर रामलाल ने बजार से कृष्णा के कहे मुताबिक सब चीज़ें ख़रीद ली। बादामी रंग की एक सादी साड़ी ७) रुपये की ख़रीदी और पॉच ५) रुपये में रेशम और कलाबत्तू लेकर घर चले आये। कृष्णा ने उन सब चीज़ों को देख कर ठिकाने यत्न से रख दिया और भोजन करने को बाबू जी से कहा, सब लोगों के भोजन कर लेने पर इन दोनों ने भी भोजन किया इसके उपरान्त सब काम से छुट्टी होकर फिर उस साड़ी में हाथ लगाया। कृष्णा के सिखाने से मुन्नी भी अच्छा कसीदा काढने लगी थी। इसी प्रकार दोनों ननद भौजाइयों ने उस साड़ी को पन्द्रह दिन में तयार कर डाला। इस साड़ी में किनारों पर ऐसी बेल काढ़ी गई थी कि जिससे बनाने वाले की अच्छी कारीगरी दर्शती थी। उसके आंचल पर मोर किस

ख़ूबसूरती से बने थे कि देखने से यही मालूम पडता था कि सच्चे मोर बैठे हैं। बीच बीच में हरे और लाल रेशम के पत्ते और फूल ऐसे ढंग से बने थे मानों सच्चे फूल तोड़कर लगाये गये हों।

इस साडी को जब रामलाल और मोतीलाल ने देखा तो कृष्णा की सराहना करने लगे और उसकी कारीगरी पर अचंभित होगये फिर उस साड़ी को लेकर रामलाल ने दो चार कोठियों में दिखाया वहां उन लोगों ने उसके दाम किसी ने २०) रुपये किसी ने २५) रुपये किसी ने ३०) रुपये इससे ज्यादा नहीं लगाये। तब वे अपनी कोठी में उसे लेगये और अपने मालिक को साडी दिखाई जिसे देखते ही मालिक बड़े प्रसन्न हुये और बोले लाला जी आप बड़े भाग्यवान मनुष्य हैं जो आप ने ऐसी गुणवती पतोहू पाया है। इस साड़ी के बेल बूटे देखकर यही मन चाहता है कि बनानेवाले की जी भर के तारीफ़ करें। अच्छा इसका दाम तुम्हारी बहू ने क्या बताया है? रामलाल ने कहा, बहू ने कुछ नहीं कहा है उसने यह कहकर मुझे साड़ी दी है कि बाबूजी से पूछो कि ऐसी साड़ी मैं बनाऊं तो आप कितने में लेंगे?" मालिक ने कहा—यदि ऐसी साड़ी आपकी पतोहू बनावे तो मैं फ़ी साड़ी ४०) रुपये की ले लिया करूंगा। और यदि मेरे घर की साड़ी और कलाबत्तू लेकर बनावेगी तो मैं फ़ी साड़ी २५) रूपये इसकी बनवाई दिया करूंगा। इसके बाद सन्ध्या को रामलालजी घर आये और कृष्णा से सब बातें कह दीं। जिसे सुनकर कृष्णा बोली, "अच्छा आप इसे कल बेच देना और उनसे कहना कि ४०) रुपये पर निर्भर नहीं है जैसी साड़ी होवेगी वैसी क़ीमत ला जायगी। यह यदि आप मंजूर करें तो मैं बनाने में हाथ लगाऊं?

इसके उपरान्त दूसरे दिन फिर रामलाल उस साडी को लेकर कोठो गये और अपने मालिक से सब बातें कहीं जो कि कृष्णा ने कहीं थीं। जिसे सुनकर मालिक ने कहा, "इस बात को मै स्वीकार करता हूं। इतना कहकर उन्होंने ४०) रुपये उस साड़ी का मूल्य दे दिया जिसे लेकर वे घर आये और कृष्णा की बहुत प्रशंसा करते हुये उन्होंने कहा, बेटी तू धन्य है और धन्य वह कोख है जिसमें तेरी ऐसी गुणवती कन्या ने जन्म लिया है। इतना कह कर अपने कृत्य में वह लग गये।

मुन्नी और कृष्णा भी अत्यन्त प्रसन्न होकर बड़े उत्साह के साथ उसी नियम के अनुसार काम करने लगी और पन्द्रहवें दिन वे एक साडी तयार कर डालतीं, और उसे बाज़ार में बिचवा देतीं इसी प्रकार दो तीन महीने में दोनों ने मिलकर कुछ रुपया संचित कर लिया। फिर उन्होंने मन में स्थिर करके एक ऐसी साड़ी बनाई जो कि ५००) रुपये की बिकी—इसी प्रकार साल भर मे उन दोनों ने १०००) रुपया सेविंगबैङ्क में जमा कर लिया। उधर मोतीलाल भी परीक्षा में पास हो गये।

चैत्र का महीना है वृक्षादिकों ने नया कलेवर धारण किया है सन्ध्या के समय अपनी उस छोटी फुलवाड़ी में जो कि कृष्णा और मुन्नी ने अपने हाथ से लगाई थी पाठको! आपको स्मरण होगा कि इस मकान मे जो कि पिछवाड़े थोड़ी सी ज़मीन थी उसी में इन दोनों परिश्रमी ननद भौजाइयों ने एक छोटी सी बगीची बनाई थी। इसमें गुलाब, बेला, जूही, चमेली और मेंहदी आदि सुगन्धित वृक्ष लगाये गए थे। यह छोटी सी बगीची इस सुन्दरता से सजाई गई थी कि माली क्या सजा-वेगा! बीच मे इसके एक चौतरा मिट्टी का बना था जिस पर दस बारह आदमी मज़े से बैठ सकते थे। उसी पर आज

हमारा उत्साही कुटुम्ब बैठा था और परस्पर यों बात चीत हो रही थी।

रामलाल—"मोती! अब तो तुम बी० ए० परीक्षा में पास हो गये। अब तुम्हारा क्या इरादा है?

मोतीलाल.—"बाबूजी! मेरा इरादा यह है कि, मैं अभी और पढ़ूं कुछ दिन और परिश्रम करके वकालत पास कर लूं तो अच्छा हो।"

रामलाल,—"तुम्हारा कहना तो बहुत ठीक है, परन्तु देखो बेटा! मैं वृद्ध हुआ अब मुझसे अधिक परिश्रम नहीं होता है, इसलिये अब तुम अपनी गृहस्थी संभालो तो मैं बैठा हुआ ईश्वर का भजन किया करूं। परन्तु मुझे इस समय दो एक बातों की बड़ी फिकिर है। वह यह है कि एक तो मुन्नी का बिवाह दूसरे इन दोनों चुन्नो हीरा को कहीं ठिकाने से लगा देना। यह काम मैं किसी प्रकार कर लेता तो निश्चिन्त हो जाता।

मोतीलाल—"बाबूजी! आप किसी बात की फिकिर न करें मैं कल हो कहीं नौकरी खोजकर लूंगा ईश्वर चाहेगा तो सब दुःख दूर हो जायगा।

इस पर कृष्णा ने मुन्नी से कहा,—दी दी मेरी समझ में तो यह आता है कि, नौकरी को न करके कोई रुज़गार किया जाय तो अच्छा है।

रामलाल—"बेटी! तेरा कहना बहुत ठीक है कि नौकरी से रुज़गार अच्छा है, परन्तु रुजगार को रुपया चाहिये वह कहां से आवेगा?"

कृष्णा—"आप रुजगार करिये तो मैं आपको १५०० रु० दे

सकी हूं। मेरी समझ में इतने रूपये पहिले पहल रुज-गार को थोड़े नहीं है, ईश्वर चाहे तो इसी से सब कुछ हो जायगा।

रामलाल—"मोती! जब बहू कहती है तो तुम रुजगार ही करो, परमेश्वर की इच्छा हुई तो जरूर इसी में दो पैसे दिखाई देंगे।"

मोतीलाल—"बाबूजी! मेरी राय तो यह है आप मुझे कहीं नौकरी ही तलाश करने दें। फिर कुछ दिन के उप-रान्त कोई दूकान कर लूंगा।

कृष्णा—"बाबूजी! मेरी तो तुच्छ बुद्धि में रुजगार अच्छा मालूम देता है बनिस्बत नौकरी के, आगे आप लोग जो मुनासिब समझें वह करें।"

रामलाल—"अच्छा बेटा! अब तुम हमारे कहने से दूकान कर लो। क्योंकि, हमारी पतोहू की यही इच्छा है और यह परम बुद्धिमती है देखो एक वर्ष मे उसने अपने हाथ से परिश्रम करके १५००) रुपया एकत्र किया है। जब उसके ध्यान में यही आता है तब मैं भी यही कहूंगा कि, तुम दूकान करो।

मोतीलाल—अच्छा जब आप लोगों की यही राय है तब मैं दुकान तलाश करता हूं। यह बताइये कि, किस चीज़ की दुकान खोली जाय?"

इस बात पर रामलाल ने कृष्णा की ओर देखा, उसने अपने ससुर के भाव को समझ कर कहा, इसका उत्तर मैं कल दूंगी।

इसके उपरान्त कचहरी बरख़ास्त होगई और सब ब्यालू करने के लिये चले आये अब उधर इन लोगों में बातचीत होती

थी उतने में मुन्नी ने इनके पास से आय कर ब्यालू तय्यार कर ली थी ' सब लोगों ने भोजन किया उपरांत नियम के अनु· सार रामायण पाठ कर अपने २ स्थान में सोने के लिये चले गये।

जब मोतीलाल सयनागार में चले गये तो उसके थोड़ी देर में कृष्णा भी वहां गई फिर उन दोनों में यों बातचीत होने लगी।

कृष्णा—प्राणनाथ! इस दासी की अज्ञानता को क्षमा करना क्योंकि, आज मैंने आपके अभिप्राय मे बाधा डाली है, किन्तु मुझे आशा है कि, आप इस धृष्टता को दासी जान कर अवश्य क्षमा करेंगे और मेरी बात को मानेंगे?"

मोतीलाल—"प्रिये! तुमने मेरा कोई अपराध नहीं किया है जिसके लिये क्षमा चाहती हो। मैंने उस समय नौकरी करने को इसलिये कहा था कि मेरे पास धन नही जो मैं दुकान करता। जब तुमने यह कहा कि, मैं १५००) रुपया दूंगी तब मुझे ख्याल हुआ कि तुम मेरी हँसी करती हो। अच्छा यह तो बताओ तुम्हारे पास इतने रुपये कहा से आये? "जो मुझे दोगी?"

कृष्णा-यह रुपया आपही के रुपयों का व्याज है जो मैंने एक वर्ष में जोड़कर रक्खा है।

मोतीलाल-"साफ़ कहो मैं पहेली नहीं समझा।

कृष्णा-क्या आपने मुझे रुपया दिया था वह आप को याद नहीं है।

मोतीलाल–वह तो मुझे याद है कि मैंने दस रुपये का नोट दिया था।

कृष्णा–"अच्छा तो सुनिये! उसी १०) रुपये से मैंने इतना रुपया किया है। पहिले हमने एक थान मंगाया उसके ६ डुपट्टे बनाकर बेचे फिर रेशमी साड़ी कलाबत्तू से काढ़कर बेची उसके ४०) रु० मिले दुसराय के फिर उसी प्रकार की साडी बनाई उसके भी ४०) रु० मिले फिर मैंने बीस रुपये का सलमा और बादला मंगाया जिसकी बनी हुई साड़ी १००) रुपये में बेची इसी प्रकार एक वर्ष मे मैंने १५००) रुपया एकत्र किया है और एक साडी बना रही हूं जो परमेश्वर चाहेगा तो दो ढाई सौ की बिकेगी।

इस बात के सुनने से मोतीलाल को बड़ा हर्ष हुआ और उसकी बड़ी प्रशंसा करते हुये हाथ पकड कर, कहा प्रिये धन्य है तुम्हारे इन हाथों को जिनमें इतने गुण भरे हैं जो १५००) रुपये तुमने इकट्ठे कर लिये?

इसका उत्तर उसने कुछ नहीं दिया। फिर दोनों जने बड़ी देर तक बातें करने के बाद अपने स्थानों पर सोने को चले गये।

दूसरे दिन मोतीलाल हर्षचन्दजी के पास गये और उनसे परामर्श लेने लगे कि किस चीज़ की दूकान खोलें। इस बात को सुनकर हर्षचन्द बडे प्रसन्न हुये और बोले मोती! तुम मेरे कहने से बनारसी कपड़ों की दूकान करलो उसमे तुम्हें बहुत फ़ायदा होगा और मैं भी तुम्हें मदद दूंगा।

मोतीलाल ने उनकी बात को स्वीकार किया और चौक मे

एक १०) रुपये महीने की दूकान तलाश करके घर चले आये और सब लोगों ने फिर उसी पर विचार करके निश्चय किया कि यह रोजगार ठीक है। तब रामलाल जी ने ज्योतिषी से मुहूर्त पूछ कर दुकान खोलने का दिन ठीक कर लिया।

सप्तम् परिच्छेद

आज बैशाख शुक्लपक्ष की अक्षय तृतीया है आज ही मोतीलाल जी के दुकान खोलने का मुहूर्त है। रामलाल, मोतीलाल, चुन्नीलाल और हीरालाल सभी उसकी सफाई आदि मे लगे हैं। देखते देखते दुकान सफ़ा हो गई, तब चुन्नीलाल ने दुकान के भीतर बाहर आम के पल्लवों का बन्दनवार बांध दिया। हीरालाल ने सब हवन की सामग्री ठीक करके रक्खी इतने में पंडितजी आगये। तब मोतीलाल उन्हें एक आसन पर बैठाकर आप भी सामने आसन पर बैठ गये। पुरोहित जी ने स्व-स्ति वाचन कराके हवन प्रारम्भ कर दिया। हवन के पश्चात् आये हुये लोगों को मिठाई आदि बांटी। इसके बाद आलमारियों में रेज़ा आदि सजाय कर रक्खे, उपरान्त परमात्मा का ध्यान कर दुकान का कार्य करने लगे। जिस दिन मोतीलाल ने दुकान खोली उसी दिन १००) का एक रेजा बिक गया जिसमें १०) लाभ हुये इससे उनका मन बड़ा प्रसन्न हुआ।

परमात्मा की कृपा से साल भर में उनकी खूब उन्नति हुई पहिले वर्ष इन्हें ५००) रुपये की बचत हुई। दूसरी साल इन्हें १०००) की बचत हुई। इसी प्रकार दिन पर दिन इनकी उन्नति होने लगी। उधर कृष्णा ने फिर दो वर्ष में हजार डेढ़ हजार जमा कर लिये।

एक दिन सन्ध्या के समय छत्त पर रात को नौ बजे घर

के सब लोग भोजन करके बैठे थे उसी समय रामलालजी ने कहा :—

"बेटा मोती! ईश्वर ने अब हम लोगों पर दया की दृष्टि की है। मोतीलाल ने कहा,—"हां, बाबूजी! अब हम लोगों की दशा कुछ कुछ सुधर गई, हां, इसी प्रकार जो परमात्मा ने कृपा की तो कुछ दिन में हम लोगों को दशा पूर्ण रीति से सुधर जायगी।

रामलाल—हां बेटा! जरूर सुधर जायगी, किन्तु इसके लिये हम लोगों को इस परम बुद्धिमती बहू को धन्यवाद देना चाहिये। क्योंकि यह सब इसी के परामर्श से हुआ है।

इसपर मोतीलाल ने कुछ नहीं कहा, तब रामलाल फिर बोले कि, बेटा! अब मुन्नी की अवस्था विवाह योग्य हो रही है क्योंकि इस समय वह पन्द्रहवें वर्ष में पड़ी है, इसलिये अब उसके विवाह की फ़िकिर करना चाहिये। देखो मेरी अवस्था अधिक हो गई है नेत्रों से अच्छी तरह दिखाता नहीं और अब मेरी स्मरण शक्ति प्रायः लुप्त होती जाती है इससे भला बुरा भी मैं नही समझ सकता। इसलिये बेटा! तुम्हीं अपनी बहिन के लिये सुन्दर पढ़ा लिखा बुद्धिमान, उत्तम कुल के पात्रवार की खोज करो।

मोतीलाल,—अच्छा बाबूजी! मैं मुन्नी के लिये सुन्दर वर की खोज करूंगा आप इसकी चिन्ता न करें।

इसके उपरान्त दूसरे दिन से ही मुन्नी के लिये सुपात्र लड़का ढूंढ़ने का प्रयत्न मोतीलाल करने लगे। इधर रामलाल जी ने भी मुनीमी करना छोड़ दिया है अब वे अपने ही दुकान में

हिसाब किताब लिखा करते हैं। सबेरे नित्य नेम से निपट कर वे दुकान पर आजाते हैं फिर ग्यारह बजे भोजन को घर जाते हैं पश्चात् दो बजे के आये रात्रि में नौ बजे फिर घर जाते हैं। पिता के रहने से मोतीलाल को बड़ा सहारा हो गया, क्योंकि पहिले जब वे अकेले रहे तब यदि कहीं जाना होता या किसी दुकानदार से बातचीत करनी होती थी तो वे दुकान बन्द करके भोजन करने जाते थे। लेकिन अब उन्हें दुकान बन्द करने की ज़रूरत नहीं पड़ती थी, जहाँ उन्हें जाना होता तो वे पिता के रहने से चले जाते थे। रामलालजी भी दुकान के काम में बड़े चतुर थे क्योंकि कोठी में यही काम दिन रात किया करते थे।

एक दिन मोतीलाल ने पिता से कहा--"यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं आगरे हो आऊ क्योंकि, बहुत दिन हुए नाना के यहां नहीं गया हूं इससे उनके देखने को मन लगा है, और उधर अपनी बिरादरी भी बहुत है मुन्नी के लिये कहीं कोई लड़का की खोज भी करूंगा ?

रामलालजी ने कहा,—"अच्छा जाओ, किन्तु जल्दी चले आना।

मोतीलाल,—"मैं सात आठ दिन में लौट आऊंगा। यदि दिल्ली चला गया तो १५ दिन लग जांयगे इससे अधिक दिन नहीं लगेंगे।

दूसरे दिन मोतीलाल आगरे को जाने के लिये तयारी करने लगे। दो बजे की गाड़ी मे बैठकर वे आगरे चल दिये। दूसरे दिन वे वहां पहुंच गये किन्तु वहां जाने पर मालूम हुआ कि, मामाजी सपरिवार बद्रीनारायण की यात्रा को गये हैं। मोतीलाल विचार करने लगे कि, अब कहाँ चलना

चाहिये ! बहुत कुछ सोच विचार के बाद वे अपने एक मित्र के यहां गये यहां उनके मित्र ने उनकी अच्छी ख़ातिरी की फिर चौथे दिन वहां से दिल्ली चले गये वहां आठ दिन रह कर सब तरह का माल वग़ैरः खरीदा फिर बनारस चले आये। अपने पिता से यात्रा का सब हाल कहा जिसे सुनकर वह भी कहने लगे कि, बेटा बद्रीनारायण की यात्रा का तो मेरा भी इरादा है। परन्तु इन तोनों के बिवाह से छूट जाऊं तो उधर भी चलूं।

इसी प्रकार देखते देखते मुन्नी की अवस्था अब सोलह वर्ष की हो चली एक दिन अपनी भाभी के साथ बैठी कसीदा काढ़ रही थी। इतने में रामलाल कहीं बाहर से आये और उन्होंने जल पीने को मुन्नी से माँगा तो वह तुरन्त ठंडा जल लेकर पिता के पास चली आई पिता ने उस से जल लेकर पिया। जब पिता की दृष्टि मुन्नी के मुख पर गई तो उन्होंने देखा कि अब यह कन्या सयानी हो गई इसका बिवाह जल्दी करना चाहिये। यह विचार करके वे दुकान गये और वहां से सन्ध्या को घर आये। जब ब्यालू करके सब लोग बैठे तब उन्होंने कहा:—"मोती। अब विलम्ब करना अच्छा नहीं है जैसे बनै शीघ्र कहीं सुन्दर सुपात्र लड़का खोजकर मुन्नी का बिवाह करो।"

मोतीलाल ने कहा—बाबू जी मैं अपने ज्ञान मे चारों तरफ़ ढूंढ चुका किन्तु कहीं भी ठीक नहीं पाया। जहां लड़का मिला वहां घर नहीं मिला, जहां घर मिला वहां वर नहीं मिला, जहां घर वर दोनों मिले वहां धन नहीं मिला।

रामलाल—"बेटा! मेरी राय में तो घर और वर ही ढूंढ़ना ठीक है और धन तो जब भाग्य में होता है तब योंही

ईश्वर देता है। इसलिये तुम धन का ख्याल छोड़ दो और उत्तम कुल और सुपात्र वर ढूंढ़ कर इसका बिवाह करदो, जब इस के भाग्य में होगा तब इसे धन बटोरते देरी नहीं होगी।

मोतीलाल—बाबू जी एक बात आज मुझे इसकी बाबत याद आयी है यदि आप की आज्ञा हो तो कहूं।

रामलाल—"ज़रूर कहो"।

मोतीलाल—मुन्नो का बिवाह यदि हर्षचन्द जी के लड़के के साथ कर दिया जाय तो क्या बुरा है। देखिये वह अपने बिरादरी में भी उत्तम है चार आदमी बिरादरी मे उनका सन्मान करते है और ईश्वर की कृपा से इस समय दस पांच करोड की सम्पदा भी उनके घर में है, दो जोड़ी गाड़ी घोड़ा है दस बीस आदमी दरवाज़े पर नौकर हैं, दो दो कोठी चल रही है और उनका लड़का भी इस समय बी० ए० में पढ़ रहा है वह परम चतुर हैं, जब मैं पढ़ता था तब उसकी बुद्धि मैंने देखी है इस समय उसकी अवस्था २५ वर्ष के लग भग है रग रूप में भी सुन्दर है चौडा माथा, छोटी २ मोछें बड़े २ नेत्र गठीला बदन अर्थात् सब शरीर उसका सुन्दर है। इसलिये मेरी राय मे तो यह घर और वर दोनों ही अच्छे हैं आगे आप की जैसी इच्छा हो!

रामलाल—बेटा? यह बात तो सब ठीक है कि घर वर सभी बात अच्छी है, और मेरे वे परम मित्र भी हैं, परन्तु वे धनपात्र ठहरे और हम ग़रीब ठहरे। इसलिये शायद वे सम्बन्ध करने में आगा पीछा करें?"

मोतीलाल,—"मेरी समझ, मे वे कभी इन्कार न करेंगे। यदि

आप आज्ञा दें तो मैं उनसे इस विषय में बातचीत करूं क्योंकि वे मेरे ऊपर अत्यन्त स्नेह करते हैं।"

रामलाल,—"यह तो मुझे भी विश्वास है कि, उनसे कहा जाय तो वे अस्वीकार न करेंगे?"

मोतीलाल,—"अच्छा मैं कलही उनसे इस विषय में बात-चीत करूंगा।"

इतना कहकर सब लोग आराम करने चले गये। दूसरे दिन प्रातःकाल उठकर मोतीलाल अपने सन्ध्या वंदन आदि से निवृत्त होकर कपड़े पहिन हर्षचन्द्र के मकान पर गये। उस समय भाग्यवश हर्षचन्द्रजी अकेले ही बैठे थे, मोतीलाल ने उनको प्रणाम किया उन्होने आशीर्वाद देकर बड़े आदर से बैठने को कहा और बोले,—बेटा आज तो बहुत दिन में आये हो क्या रास्ता तो नहीं भूल गये!"

मोतीलाल,—"नही बाबूजी, रास्ता तो नही भूल गया, यदि रास्ता भूल जाता तो आज आपके दर्शन क्योंकर मिलते। हां यह बात ज़रूर है कि काम से फ़ुरसत न मिलने से बहुत दिन मे आज आया हूं।"

हर्षचन्द्र'—और तो घर के सब कोई प्रसन्न हैं?

मोतीलाल,—जी हां, आपकी कृपा से सब प्रसन्न हैं।

हर्षचन्द्र,—कहो दुकान कैसी चलती है?

मोतीलाल,—आपके आशीर्वाद से दुकान की दिनों दिन उन्नति होती जारही है और इसी प्रकार परमेश्वर की कृपा रही तो कुछ दिन मे हम लोग अच्छी अवस्था को प्राप्त हो जांयगे।

हर्षचन्द्र,—जरूर परमात्मा तुम लोगों के ऊपर दया करेंगे

अच्छा यह तो बताओ आज किस तरह यहां आये हो।

मोतीलाल—आज बाबूजी! मैं आपसे कुछ मांगने के लिये आया हूं और आशा करता हूं कि, आप उसके देने में संकोच न करेंगे ?

हर्षचन्द,—जरूर तुम्हें मेरे से ऐसी ही आशा रखना चाहिये। क्योंकि मैं तुम्हें और मानिकचन्द को एक समान मानता हूं। जो तुम्हें मांगना हो मांगो, मैं उसे देने को हर प्रकार से दत्तचित्त हूं।

मोतीलाल,—बस बाबूजी! मैं यही आपसे मांगता हूं कि मानिकचन्द को मुझे दे दीजिये।

हर्षचन्द,—क्या उसे दुकान में बैठाओगे।

मोतीलाल,—जो नहीं उन्हें दुकान में नहीं बैठाऊंगा, बल्कि उनके साथ अपनी बहिन मन्नो का विवाह करूंगा। यद्यपि हम लोग आपके मुक़ाबले के नहीं हैं, परन्तु आशा करते हैं कि आप इस बात को अस्वीकार नहीं करेंगे।

हर्षचन्द,—बेटा, मोती! क्या तुम सच्च कह रहे हो ? मुझे विश्वास नहीं होता कि; तुम सच्च कह रहे हो!

मोतीलाल,—बाबूजी! आपने मुझे झूंठ बोलते कब पाया है ?

हषचन्द,—नहीं हमने झूंठ बोलते तो तुम्हें नहीं सुना है। परन्तु इस बात में शायद तुम झूंठ बोल रहे हो।

मोतीलाल,—नहीं बाबूजी आप से मैं कभी झूंठ नहीं बोलूंगा फिर आपही से नहीं, बल्कि सारे संसार से मैं झूंठ नही बोलता हूं। देखिये दुकान में प्रायः सब झूंठ बोलते हैं परन्तु मैं झूंठ नहीं बोलता इस बातसे

पहिले तो मुझे बहुत कुछ नुकसान हुआ परन्तु जब मनुष्य यह जान गये कि यह एक बात पर सौदा बेचते हैं, तब से मुझे बहुत कुछ लाभ हुआ है।

हर्षचन्द्र,—जरूर बेटा झूंठ बोलने से मनुष्य का विश्वास जाता रहता है यही नहीं किन्तु महापाप भी होता है इसलिये मनुष्य को सदा सत्य ही बोलना चाहिये।

मोतीलाल,—तो बाबूजी? मैं आपसे सत्यही मुन्नी के विवाह के लिये कहा रहा हूं।

हर्षचन्द,—अच्छा बेटा? आओ हमारे साथ मानिक की मां के पास चलो और उससे इस बात को कहो देखो वह क्या कहती है।

इतना कहकर मोतीलाल को लिये हुए हर्षचन्द भीतर ज़नानखाने में चले गये वहा पति को आते सुनकर उनकी अगवानी के लिये मानिकचन्द की मां आगे बढ आई, और दोनों के लिये आसन लेजा कर बिछा दिया। मोतीलाल ने उन्हे प्रणाम किया, उन्होंने बड़ो प्रसन्नता से आशीर्वाद देकर पूछा क्यों बेटा! आज तो तुम बहुत दिन में यहां आये हो क्या नाराज तो नहीं हो गये हा? कहा प्रसन्न तो हो? और घर के सब प्रसन्न हैं?

मोतीलाल,—"आप के आशीर्वाद से सब प्रसन्न हैं। काम के सबब से अधिक छुट्टो नहीं मिलती है इसी से आपके दर्शन न कर सका। इसके लिये क्षमा चाहता हूं।"

मानिकचन्द की मा ने दासी से कुछ इशारा किया जिसे कि वह तुरन्त समझ गई और दो थाली मे कुछ मिष्ठान्न रख कर ले आयी और इनके आगे रखदिया, तब उन्होने मोतीलाल से जल पीने को कहा, किन्तु मोतीलाल ने अस्वोकार किया,

परन्तु उन्होंने एक बात नहीं मानी और जबरन मोठा उठा कर अपने हाथ से मोतीलाल के मुख में लगा दिया तब लाचारी से इन्होने जल पान किया पान इलाची के उपरान्त गृहणी ने पूछा कि आज कैसे यहां आये हो कहीं भूल तो नहीं गये ?"

इस पर हर्षचन्द्र ने अपनी स्त्री को सब बात सुनादी जिसे सुनकर वह बडी प्रसन्न हुई और बोली,—आज मेरे धन्य भाग्य हैं जो मुन्नी सी कन्या मुझे पतोहू बनाने के लिये मिल रही है, बेटा ! मुन्नी की प्रशंसा मैंने जब से सुनी है तभी से उसपर मोहित होरही हूं। कई बार मैंने आपसे भी चर्चा चलाई थी कि मुन्नी का विवाह जो मानिक से हो जाये तो बडा अच्छा हो, आप रामलालजी से इस बारे में कहें ! किन्तु इन्होंने यही उत्तर दिया कि यदि मैं रामलाल से कहूं तो शायद उन्हें यह सोच के बुरा लगे कि मैं ग़रीब हूं यह मेरी हसी उड़ाते हैं। इसलिये मैं नहीं कहूंगा। परन्तु ईश्वर ने आज तुम्हारे मुंह से स्वयं कहलवाय दिया सत्य है तुलसीदास जी ने कहा भी है—

"जापर जाकर सत्य सनेहू। सो तेहि मिलै न कछु सन्देहू।"

इसलिये बेटा ! तुम्हारी बात मैंने हर्ष से मंजूर कर ली और जहां तक हो शीघ्र ही विवाह भी कर दिया जाय"।

मोतीलाल,—मां ? आज आप लागों के वचन देने से मैं अपने को बडा भाग्यशाली समझता हूं। क्योंकि आप धनपात्र मनुष्य हैं और हम गरीब ठहरे शायद विवाह करने में यह सोचें कि यह हमारे बरोबरी के नहीं हैं यही मुझे खटका था किन्तु अब वह जाता रहा"।

गृहणी,—बेटा ! मैं धन की भूंखी नहीं हूं ईश्वर ने सब कुछ मुझे दे रक्खा है मैं तो केवल गुण की भूंखी हूं सो मुन्नी सर्वगुंण सम्पन्न है।

इसके उपरान्त और दो चार बातें हुईं फिर मोतीलाल ने उनसे बिदा मांगी और कहा, कि मैं पिता से सब बात कहकर ज्योतिषी से पूछकर शुभ मुहूर्त में आपके यहां लग्न भेजूंगा"। इतना कह उन्हें प्रणाम करके अपने घर चल दिये दरवाज़े तक हर्षचन्द जी पहुंचाने आये थे। मोतीलाल उन्हें प्रणाम करके अपने घर आये और पिता से सब बातें कहीं जिसे सुनकर वे बड़े प्रसन्न हुए और विवाह की सब तयारी करने लगे।

अष्टम परिच्छेद

लगुण का महीना है। बसन्त ऋतु के कारण सब वृक्षादि नव पुष्पों पर शुशोभित हो रहे हैं। आम के वृक्षों पर कोयल बैठी अपने "कुहू कुहू" शब्द से मनुष्यों के मनको प्रफलित कर रही है। ऐसी सुहावनी ऋतु मे ज्योतिषी से शुभमुहूर्त पूछकर फालगुण कृष्णा सप्तमी चन्द्रवार को मुन्नी के तिलक चढ़ने की बात स्थिर होगई है। रामलाल जी ने अपने सुयोग्य आज्ञाकारी पुत्र मोतीलाल को समस्त बिवाह का भार सौप दिया है वह अपनी बहिन के तिलक के लिये बाज़ार से सामान खरीद कर लाये हैं। आज तिलक जायगा इसलिये मुहल्ले और बिरादरी की स्त्रियां सबेरे ही से रामलालजी के घर आरही हैं उनका आगत स्वागत कृष्णा बड़े उत्साहित मनसे कर रही है। बाहर चुन्नी और हीरालाल सब आये हुए मनुष्यों का आदर सत्कार कर रहे हैं। देखते २ लग्न की मुहूर्त आगई तब मोतीलाल ने एक परात में १०१) रुपया नक़द लड़के के पहिरने के सब कपड़े, पांच थान, पांच साड़ी, नरियल और एक बड़ा सा कलस लेकर भाई बान्धुओ के सहित हर्षचन्द्र जी के गृह को ओर प्रस्थान किया। वहां जाकर शुभ सायत में तिलक चढ़ा कर अपने घर चले आये।

आज फालगुण शुक्ला द्वितीया है। आज सबेरे रामलाल जी

के घर मनुष्यों की चहलपहल होरही है। नवयुवतियां अपने मधुर कोमल कंठ से नाना प्रकार के मंगलगीत गारही हैं। एक ओर बराती बैठे जेम रहे हैं उनके भोजन के समय में स्त्रियां मधुर धुनि से गीत गाने लगीं।

भोजन करत दशरथराय।
सहित सकल समाज बैठे बिमल आसन पाय॥
बहुत रंग प्रकार मैथिल भोग षटरस लाय।
मधुर पूआ सुरस पूरी दाल अरु भात मंगवाय॥
विविध व्यञ्जन थार कंचन बहुत दिये परसाय।
बहुत भोजन किये बराती जाहि जो मनभाय॥
राम लखन भरत रिपुहन तात निकट बैठाय।
जन निजकर देत हठ २ लेत सब हर्षाय।
जनकपुर की नारि गीत गाय गाय रिझाय।
बिमल सुरसरि जल सज्जन मणिराम सबहि मिलाय॥

पुनः

जेंवत दशरथ जनक जिमावन शोभा बरनि न जाई॥
भात दाल औ बरी बरा कोहड़ौरी साग रधाई।
कदुआ कोंहड़ा आलू परवर षटरस भोग बनाई॥
बुंदिया टिकरी खाजा जलेबी मांखन मिश्री मलाई।
मुठरी लडुआ पेड़ा बरफी कलाकन्द बनवाई॥
मोहनभोग दूध औ पूरी व्यञ्जन विविधि बनवाई।
हरषि हरषि राजा जनक परोसत लेत सबै हरषाई॥

अर्थात् खूब धूमधाम के साथ मानिकचन्द का विवाह मुन्नी के साथ हो गया रामलाल जी ने अपनी कन्या के दहेज में अपनी सामर्थ अनुसार वस्त्राभरण रुपये बासन आदि सब दिये फिर

शुभ मुहूर्त्तमें उसके बिदा की सायत आयी। तब बड़े हर्ष के साथ सब युवतियाँ मुन्नो को घेर कर उसे शिक्षा देने लगीं उनके उपरान्त कृष्णा अपने नेत्रों में जल भर कर अपनी ननद मुन्नो को हृदय से लगाय उसे उपदेश देने लगी दीदी! मेरी बातों को तुम ध्यान देकर सुनो देखो कन्या सदा माता पिता के घर नहीं रहती है उनका सदा पति ही के घर रहना होता है इसलिये स्त्री को चाहिये कि सदा उनकी आज्ञा माने और ससुराल में जितने मनुष्य होयें उन सबों का जैसा पति के साथ सम्बन्ध होवे वैसे ही अपने भी माने। देखो सास ससुर माता पिता के समान हैं देवर जेठ को छोटे बड़े भाई के समान समझे ननद जिठानी देवरानी को अपने बहिन के समान माने जिस प्रकार अपने माता पिता के घर कार्य करे उससे बढ़कर और सुन्दरता के साथ वहां काम करे। पति को देवता के समान समझे उसकी आज्ञा को कभी उलङ्घन न करे, उसके सुख से सुख और दुःख से दुख समझे पति से निषकपट प्रीति करे, कभी उससे मिथ्या न बोले पराई सुख सम्पदा को तृणवत् समझे जो अपने पति के घर में रूखा सूखा अन्न मिले उसे अमृत समझे दूसरे के छप्पन प्रकार के पकवान को मट्टी समझे! स्त्री का सब से बड़ा अमूल्य और पवित्र धन सतीत्व है उसकी रक्षा हर समय करना ही उसका कर्त्तव्य है इत्यादि अनेक प्रकार से सुन्दर शिक्षा देकर कृष्णा ने उसे पालकी में ले जाकर बैठा दिया और अपने सजल नेत्रों से प्रेमाश्रु बहाते हुए कहा दीदी इस भाभी के उपदेश को न भूलना इसके उपरान्त मुन्नो ने नेत्रों में जल भर कर भाभी को प्रणाम किया जिससे कृष्णा ने उत्तर में यह कहा सदा सुहागिन पति की प्रिया बनी रहो और सदा धर्म में रुचि बनी रहे इतने में रामलाल जी भी वहां

आ गये और बोले बेटी इतना कहते ही उनके नेत्रों में जलभर आया और कंठ रुक गया। बड़ी कठिनता से अपने को संभाल कर कहा बेटी मेरी यही शिक्षा है सदा तू अपने सास ससुर पति की आज्ञा को प्रसन्न मन से मानती रहिओ इतने में मोतीलाल वहां आगये और बोले बाबूजी ! अब देरी न करिये, समय अधिक होगया फिर अपनी बहिन को सब प्रकार से धारज देकर पालकी उठवाय कर बाहर दर्वाज़े पर ले आये !

इधर रामलालजी ने अपने समधी हर्षचन्द्र जी से हाथ जोड़ कर विनय की और बोले लालाजी ! यह मेरी कन्या माता के न रहने से गृहस्थी सम्बन्धी शिक्षा बहुत कम जानती है इसलिये यदि उसके कामों में कुछ न्यूनाधिक होजाय तो बालिका जान क्षमा करियेगा।

हर्षचन्द्र ने अपने समधी को हर प्रकार से धीरज दिलाया और कहा—'आप किसी बात की चिन्ता न करें मैं इस कन्या को अपनी पुत्री के समान मानूंगा और नेत्र की पुतली के समान इसकी रक्षा करूंगा।'

इसी प्रकार शुभ समय में बरात बिदा होगई जब वह अपने ससुराल पहुंची तो वहां की स्त्रियों ने अपने रीति के अनुसार परछन करके बहू को डोले से उतार मंगल गीत गाती हुई भीतर लिवा गईं अर्थात् इसी प्रकार सब कुशल पूर्वक विवाहोत्सव का कार्य समाप्त होगया और मुन्नीने दो चार दिन अपनी सास के साथ घूमफिर कर ससुराल की सब चालढाल देखली और पाँचवे दिन से वह घरके सब काम करने लगी सास ने कितना ही मना किया कि बहू तू रहने दे मैं सब कर

लूंगी किन्तु उसने एक न माना। जब सास बहुत कहने लगती थी तब मुन्नी उन्हें इस प्रकार समझा देती थी, अम्माजी !

जब यह दासी इस घर में आई है तब आपको कार्य करने की कोई आवश्यकता नहीं है केवल बैठी २ आप आज्ञा किया करें और यह दासी सब करेगी।

मुन्नीने एकही मासमें अपने सास और ससुर तथा समस्त गृहस्थी को अपने मधुर और विनीत वचनो से अपने वश मे कर लिय। उसका परिणाम यह हुआ कि, हर्षचन्द्रजी की स्त्रीने भंडार की और रुपयों पैसो के सन्दूक की ताली उसे सौंप दी और सदा उससे प्रसन्न रहने लगी।

फिर मुन्नी ने कुछ दिन उपरान्त। ऋतुस्नान किया उस समय उसकी सासने वेदोक्त उसके संस्कार कराये पुनः उस की फूलों से चोटी गुंथाई गई फिर गर्भाधान का मुहूर्त्त पूछा गया और उस दिन गर्भाधान संस्कार विधिपूर्वक वेदों द्वारा करवाया गया। नानाप्रकार के चित्ताकर्षक गीत उस दिन स्त्रियों ने अपने कोमल कण्ठों से सुनाये। दूसरे दिन ब्राह्मणों से वेदपाठकराया ब्राह्मणों को खूब दान दक्षिणा दी। इसी प्रकार उनके दिन आनन्द से व्यतीत होने लगे।

परमेश्वर की कृपा से दूसरे मास मुन्नी की गोदी भरगई जिसमें हर्षचन्द्रजी ने बहुत से दान ब्राह्मणों को दिये एक लाख रुपया पाठशालाओं में जहां तहां भिजवा दिये। सदावर्त्त में अधिकता करदी गई। मुन्नी के व्यवहार से ससुराल के सभी लोग प्रसन्न रहते थे सबसे ज्यादा प्रसन्नता हर्षचन्द्र और उनकी स्त्री को हुई थी क्योंकि उसके प्रेमसे सने हुए वचन जब सुनते थे तब मानो उन्हें समस्त स्वर्ग की सम्पत्ति मिल जाती थी इसी से नित्यप्रति वे दोनों स्त्री पुरुष अपने भाग्य की सराहना किया

करते थे। इधर मुन्नी ने तो घर की ताली कुन्जी सब को प्रसन्न करके ले ली थी। उधर अपने माता पिता की आज्ञा का प्रतिपालन करके माणिकचन्द् अपने पिता को आज्ञा से सारे स्टेट का कार्य प्रसन्नता पूर्वक करने लगे।

मुन्नी ने अपने सच्चे प्रेम की परम पवित्र डोरी से ऐंठन देकर अपने पति के मनको इस रीति से बांध लिया था कि अपने जीवन पर्य्यंत इस दृढबन्धन से माणिकचन्द् नहीं छूट सके। मुन्नी ने अपनी भाभी से इस प्रकार की उत्तम शिक्षा पाई थी कि जिससे आस पास की सब स्त्रियां सदा उससे मिलने आया करती थी और सदा धर्मचर्चा करके उत्तम उपदेश ग्रहण करती थीं। इस प्रकार मुन्नी आनन्द से अपनी ससुराल में दिन व्यतीत करने लगी।

नवम परिच्छेद

इये पाठक ! अब हम फिर रामलालजी के घर की ओर चलते है देखें वहां क्या होता है। जिस समय मुन्नी विदा होकर चली गई उस समय उस घर में चारों तरफ उदासी छागई। सत्य है मनुष्य चाहे कैसा ही कठोर हृदय का होवे परन्तु कन्या की विदाई के समय ज़रूर उसके नेत्र में जल आ जाता है। जिसे परमेश्वर कन्या देता है उसे एक दिन अवश्य दूसरे के हाथ में सौंपना पड़ता है। मुन्नी को पहुंचाने मोतीलाल बहुत दूर तक गये थे फिर हर प्रकार से मुन्नी को समझा कर घर लौट आये। जिस समय घर आये तो उन्हें वह घर उदास मालूम पड़ता था। जब बाहर से मोतीलाल घर आते थे तो उसी दम पानी का लोटा लेकर मुन्नी भैय्या २ कहती निकट आती थी। आज उनके निकट किसी ने भी जल नहीं पहूंचाया है। और दिन कृष्णा भी अपने पति को जल देती थी किन्तु आज वह भी मुन्नी के शोच मे उदास पलँग पर पड़ी है आये गये की आज कोई जल पीने को भी कहने वाला नहीं है। अर्थात् जिधर देखो उधर ही मुन्नी की चर्चा हो रही है।

धीरे धीरे मुन्नी का ख्याल सबके चित्त से कम होने लगा एक दिन भया दो दिन भया मास भया दो मास भया देखते देखते वर्ष भर बीत गया। जब मुन्नी रही तब कृष्णा को

गृहस्थी में वह बहुत सहारा देती थी। किन्तु अब उसके चले जाने पर अकेले ही कृष्णा को सब गृहस्थी संभालनी पड़ती थी। और लोगों के देखने में कृष्णा के ऊपर यह भार था परन्तु कृष्णा को ज़रा सा भी भारी नहीं मालूम पडता था। कारण यह था कि, कृष्णा जन्म से ही परिश्रमी थी फिर सास की उत्तम शिक्षा उसने पाई थी।

सन्ध्या के समय एक दिन जब सब लोग बैठे थे उस समय रामलालजी ने कहा,—बेटा मोती! अब हमारी कृष्णा को गृहस्थी का समस्त कार्य्य अकेले ही करना पड़ता है इस लिये बेटा! तुम एक मज़दूरिन बासन मांजने वाली रख लो, लेकिन मेरी समझ मे दिन रात के लिये रहने वाली मिले तो अच्छा है।" इसपर मोतीलाल ने कहा,—अच्छा बाबूजी कहीं तलाश करूंगा॥ जो कहीं मिल गई तो उसे पक्का करके रख लूंगा॥

रामलालजी,—बेटा! अब चुन्नी के विवाह की भी कहीं फिकिर करना चाहिये?" मोतीलाल ने कहा,—बाबूजी! कन्या का विवाह तो वर खोज कर किया जाता है, परन्तु पुत्र का विवाह किसी के कहने से तथा उद्योग से नहीं होता जब लड़का पढ़ा लिखा सुन्दर होशियार होवे तो तुरन्त उसका विवाह मनुष्य आग्रह के साथ करते है। सो हमारे चुन्नीलाल और हीरा-लाल का विवाह मनुष्य आग्रह से करेंगे हमे और आपको किसी से कहने की आवश्यकता न पड़ेगी।

दूसरे दिन मोतीलाल ने एक ब्राह्मणी जो कि बड़ी गरीब थी, और गृहस्थी के काम में बड़ी चतुर थी उसे २) रु० मासिक और भोजन वस्त्र पर नौकर रख लिया जो कि भोजन आदि बनाती रही। इसके कुछ दिन उपरान्त गर्भाधान संस्कार हुआ और ईश्वर की कृपा से नवें मास कृष्णा ने एक गुलाब के पुष्प

के समान पुत्र जन्मा। उस समय रामलालजी ने गौदान किया और ब्राह्मणों से वेदोक्त उसके सब संस्कार कराये ब्राह्मणो से उसका नाम करण कराया उन लोगों ने उस पुत्र का नाम ईश्वरचन्द रक्खा। उस समय ससुराल से मुन्नी भी आ गई थी उसे भी प्रथम काजल लगवाई में एक साड़ी जो कि कृष्णा ने स्वयं अपने हाथ से तयार की थी वह पहिराई और एक मोतियों की माला उसे दी।

सबेरे उठकर कृष्णा अपने लडके को और मुन्नो के लड़के को तेल लगाकर फिर काजल लगाती थी, और साथ ही दोनों को सुलाती। जब वे कुछ बड़े हो गये तब अच्छे शब्दों से उन्हें बोलना सिखाती। अर्थात् जैसा कि संतान पालन की शिक्षा शास्त्रकारों ने बतलाई है उसी प्रकार कृष्णा ने उन दोनों बच्चों का लालन पालन यथायोग्य किया। यहां पर पाठकों को सन्तान पालन की शिक्षा जानने की बड़ी उत्कंठा होगी, परन्तु इस विषय को हम आगे वर्णन करेंगे यहा पर हमे चुन्नी-लाल और हीरालाल के विवाह की सामग्री एकत्रित करने के कारण सन्तान शिक्षा बताने की फुरसत नही है।

माघ बीत गया अब फाल्गुन का महीना आया है मोती-लाल किसी काम से कलकत्ते गये थे वहां से लौट रहे थे कि दानापुर पहुंचते ही वहाँ स्टेशन पर बड़ी भीड़ मिली क्योंकि लोग किसी मेले से लौट रहे थे। दानापुर के बाद दूसरी गाड़ी सीटी देकर खुल गई। जब कि, मोतीलाल आरा स्टेशन पर आये तब उनकी गाड़ी में एक वृद्ध मनुष्य चढ़ आया, क्योंकि जिसमें मोतीलाल बैठे थे यह गाड़ी का छोटा सा एक हिस्सा था जिसमें १६ आदमी बैठने का आर्डर था यह अकेले बैठे थे इसी से खाली देखकर वह वृद्ध भी चढ़ आया था। फिर दोनों

से बात चीत होने लगीं परस्पर बात से यह विदित होगया कि यह स्वजाति है। तब मोतीलाल ने वृद्ध से पूंछा,—आपका मकान कहां है।

वृद्ध ने कहा—मेरा मकान आगरे में है महाजनी टोला में भारी कपडे की कोठी है।

मोतीलाल,—अब आप कहां जाते हैं ?

वृद्ध—भाई मेरे दो पोती हैं उन्हीं के लिये लड़का खोजने के लिये कलकत्ते से होकर काशी जा रहा हूं।

मोतीलाल—क्या आप को उधर अपनी जाति के लडके नहीं मिले ?

वृद्ध—भाई जाति के घर तो बहुत हैं परन्तु घर वालों की यह राय है कि कन्या अबकी काशी में, विवाही जाय। इस लिये मैं यहां आया हूं आपका स्थान कहां है ?"

मोतीलाल—मेरा मकान भी काशी ही मे है।

वृद्ध—"आप कौन विरादरी हो और काशी में कहां मकान है।

मोतीलाल—मैं अगरवाला हूं और बूलानाला पर मेरा मकान है।

वृद्ध—आप प्रथम कहां के रहने वाले हैं ?"

मोतीलाल—पिताजी को मालूम होगा कि प्रथम कहां के रहने वाले हैं इधर बारह चौदह पीढ़ी से काशी में ही रहते हैं।

वृद्ध—क्या आपके पिता अभी जीवित हैं ? यदि मुनासिब समझो तो भाई उनका दर्शन हमें भी करा दो क्योंकि वह वृद्ध हैं उनसे हमें बहुत मदद मिलेगी ?

मोतीलाल—हमारे अहो भाग्य हैं जो आप हमारे घर को पवित्र करें।

इतने में गाड़ी मोगलसराय आकर खड़ी हो गई फिर वे लोग उतर के दूसरी गाड़ी पर चढ़े और काशी के उस पार आकर रेल पर से उतर पड़े क्योंकि उस समय गाड़ी का पुल राजघाट में नहीं बना था।

यह दोनों जने नाव पर किराये करके इस पार आये और पञ्च गङ्गा पर उतर कर मोतीलाल वृद्धजी को अपने घर लिवा लाये। फिर अनेक प्रकार से उनकी ख़ातिरी की। उपरान्त रामलालजी से अनेक प्रकार की बात चीत उनकी हुई। दूसरे दिन चुन्नीलाल और हीरालाल को जब वृद्ध ने देखा तब तो वृद्ध उनके स्वरूप को देखकर मोहित हो गया। वृद्ध ने काशी में अनेक लडके देखे परन्तु उन दोनों के समान सुन्दर और चालचलन और घर की ऐक्यता कहीं न पाई। तब तो वृद्ध ने रामलालजी से अत्यन्त आग्रह के साथ उन लडकों का विवाह अपनी पोती के साथ करने को कहा। इस पर रामलाल जीने चुन्नीलाल का विवाह करना तो स्वीकार किया परन्तु हीरालाल का बिवाह करना अस्वीकार किया, वृद्ध ने कहा इसका क्या कारण है जो आप एक का करना स्वीकार करते हैं और दूसरे का नहीं?"

रामलाल—"इसका कारण यह है कि हीरालाल अभी १४ वर्ष का है शास्त्र में लिखा है कि जब तक लड़का तथा लड़की यह न समझें कि विवाह किसको कहते हैं और इसकी मर्यादा तथा फल क्या है तब तक विवाह करना उचित नही है, और भी कहा है कि, छोटी अवस्था में विवाह कर देने से सन्तान खराब हो जाती है और उनके भावी कर्तव्यों में विघ्न पड़ता है। अर्थात् फिर उत्तम शिक्षा उनकी नही होती।

इसलिये पुत्र जब २५ वर्ष का और कन्या १६ वर्ष को न हो जावे तब तक उनका विवाह माता पिता को करना उचित नहीं है। इस अवस्था को जब तक लड़का लड़की न पहुंचे तब तक उन्हें उत्तम शिक्षा देते रहें। इसलिये मैं हीरा का विवाह करना चाहता हूं।

वृद्ध—यह जो आपने कहा, इस प्रकार जो मनुष्य करते हैं उन्हें परम बुद्धिमान समझना चाहिये। यथार्थ में यह बात ठीक है, क्योंकि जब बालकों का विवाह छोटी अवस्था में हो जाता है तब वे अपना पढ़ना लिखना छोड़ देते हैं उन्हें गृहस्थी का ध्यान होजाता है यही नहीं किन्तु उसमें लिप्त होजाते हैं। इसीसे उनकी सन्तानें बड़ी निर्बल उत्पन्न होती हैं। इसलिये ऐसा न किया जाना बहुत अच्छा है।

रामलाल—आपने मेरे अभिप्राय को यथार्थ रीति से समझ लिया है।

रामलाल ने वृद्ध से यही बात कही उन्होंने सहर्ष इस बात को स्वीकार कर लिया और बिवाह का दिन आचार्यों से पूंछ कर स्थिर कर लिया उपरान्त अपने घर जाने की इच्छा प्रकट की। रामलाल ने अत्यन्त आदर के साथ उन्हें उस पार तक पहुंचवाय दिया तब अपने घर को चले गये।

उपरान्त फाल्गुण में चुन्नीलाल और हीरालाल का तिलक चढ़ा और बैशाख में खूब धूमधाम के साथ विवाह हो गया। पतोहू दोनो घर आयीं। चुन्नीलाल की बहू की अवस्था सोलह वर्ष की थी और हीरालाल की बहू की अवस्था ११ वर्ष की थी। दोनों सहोदर बहिनें थीं रूप रङ्ग भी सुन्दर था।

बड़ी का नाम चम्पा था और छोटी का चमेली था। रूप रङ्ग सब था परन्तु गृहस्थी के काम में बडी फूहर थीं। इसका कारण यह था कि जब चम्पा सात वर्ष की थी और चमेली दो वर्ष की थी तभी इनके माता पिता दोनों मर गये थे तब से दादा के ही पास ये रहती थीं। इसलिये इन्हें गृहस्थी के कार्यों की शिक्षा प्राप्त नहीं हुई थी। जब रामलाल जी ने यह सुना कि पतोहू गृहस्थी के काम कुछ नहीं जानतीं हैं तो उन्हें बड़ा दुख हुआ परन्तु कृष्णा ने उन्हें धीरज दिया और कहा कि, मैं एक वर्ष में सब गृहस्थी के कामो को सिखा दूंगी आप चिन्ता न करें। कृष्णा के कहने से रामलाल का दुःख जाता रहा।

धीरे धीरे विवाह को एक मास व्यतीत हो गया। तब तक कृष्णा ने उन दोनो की प्रकृति भी जान ली उसे यह निश्चय होगया कि माता के न रहने से ये दोनों अज्ञान हैं, क्योंकि इन दोनों को जो बात बतलाई जाती है उसे बड़े मन से यह सीख लेती है। इसलिये इन्हें जो बातें सिखाई जांयगी उसे यह बड़े मन से सीखेंगी। अतएव इनको शिक्षा देने का प्रबन्ध किया जाय तो उत्तम है कृष्णा ने ऐसा अपने मन में स्थिर करके दूसरे दिन से उन्हें शिक्षा देनी आरम्भ करदी।

जब सबेरे सब कामो से छुट्टी मिलती थी तो उन्हें एक न एक उपदेश दिया करती। एक ही महीने में कृष्णा ने उनसे ऐसी प्रीति बढ़ाली कि हर समय दोनों उसके समस्त कामों में सहारा देने लगीं।

दशम् परिच्छेद ।

ष्ठ का महीना है दिनके दो बजे होंगे, अभी तक सूर्य्य नारायण की तप्त किरणें शरीर को जलाये जा रही हैं। मार्ग में मार्ग में पृथ्वी इस प्रकार तप्त हो रही है कि मार्ग जन शून्य होरहा है। जन शून्य होरहा है। गरम २ लूयें शरीर को झुलसायें देती हैं जीव जन्तु वृक्षों की छाया में बैठे हैं, सुकुमार तथा धनी उस समय अपने अपने घर में बैठे हैं कोई पङ्खा से हवा कर रहा है, कोई सो रहा है परन्तु गरमी के कारण उनकी निद्रा पूरी नहीं होती है। ऐसे ही समय में हमारी दृष्टि कृष्णा की ओर जाती है कि, देखें वह क्या कर रही है?

घर में इस समय कृष्णा चम्पा चमेली और वह ब्राह्मणी इन चार औरतों के अतिरिक्त और कोई नहीं है ये चारों स्त्रियां उस बगीचे वाली कोठरीमें बैठी हैं जो कि पिछवाड़े पड़ती थी जिधर से बगीचे की स्वच्छ हवा आरही थी। कृष्णा अपने हाथ में एक स्त्री शिक्षा की पुस्तक लिये पढ रही थी और चम्पा चमेली और ब्राह्मणी बैठी सुन रही थीं। कृष्णा एक बार इस पुस्तक को पढ़ जाती थी फिर उसका अर्थ करके सबको समझाती थी। इतने ही मे सहसा बाहर किसी ने किवाड़ की सांकल खटखटाई खटखटाहट सुन कर कृष्णा ने कहा छोटकी देख तो कौन है, तब चमेली ने ऊपर खिड़की में से झांककर देखा कि दर्वाजे पर एक पालकी रक्खी है और उस के पास दासी खड़ी पुकार रही है कि किवाड़ी खोलो। उसने आकर

कृष्णा से कहा कृष्णाने जाकर जो देखा तो मालूम हुआ कि मनोहरदास की स्त्री आयी हैं तब तो वह नीचे जाकर किवाड़ खोलकर उन्हें बड़े आदर के साथ ऊपर उस कोठरी में ले आयी जहां कि वह बैठी थी चम्पाने एक बहुत सुन्दर गलीचा बिछा दिया जिस पर कृष्णा ने उन्हें बैठाया और उनकी चादर अपने हाथ से उतार ली फिर पंखा लेकर उन्हें हवा करने लगी कृष्णा को पंखा करते देख चम्पा ने पंखा ले लिया और आप हवा करने लगी।

पाठक! आप यह सोचते होंगे कि यह मनोहरदास की स्त्री कौन है और कृष्णा से प्रेम इनका क्यों कर हुआ? इस लिये थोड़ा सा हाल हम मनोहरदास का लिखे देते हैं। मनोहरदास का मकान चौखंभा में है और वह स्वजाति के हैं जब रामलाल जी की स्त्री जीवित थी तब यह बहुधा आती थीं। मनोहरदास की स्त्री उन्हे सासुजी कहकर पुकारा करती थीं इधर जब से कृष्णा बिवाहिता होकर आयीं तबसे इन दोनों में अत्यन्त प्रीति हो गई है। कृष्णा इन्हें जिठानी जी कह कर सम्बोधन किया करती है। आज बहुत दिन पर ये मिलने आयी हैं। मनोहरदास की स्त्री ने जब कृष्णा के घर की सजावट देखी तो मोहित हो गई और बड़े आश्चर्य से उसे देखने लगी फिर चम्पा और चमेली को देखकर पूछने लगी ये कौन हैं?" कृष्णा ने कहा "ये दोनों ही तुम्हारी दिवरानी हैं।"

जिठानी,—"क्या यही मुन्नी, हीरा की बहू हैं? भाई! तुमने देवरानी भी बड़ी सुन्दर और सुशील पायी हैं। जैसी तुम सुन्दरी हो वैसी ही ये दोनों भी हैं, चाहे तुम्हारे इतना गुण इनमें हो या न हो।

कृष्णा,—"आप लोग जब गुणवती हैं तो क्या देवरानी गुणवती न होंगी ?"

जिठानी,—क्यों न होगीं, ज़रूर होंगीं" ।

इसके उपरान्त चारों ओर घर की शोभा देखकर बोली कि कृष्णा बहिन ! तुमने घरतो खूबही अच्छी रीति से सजा रक्खा है और यह क्या मोटे २ हरफ़ों मे लिखा है ?

कृष्णा,—यह कार्य्य विवरण है इसके अनुसार हम लोग नित्य घर का काम किया करती हैं ।

जिठानी,—भाई तुम विद्यावती हो जो न करो सो थोड़ा है भला हम बिना पढ़ी लिखी क्या कर सकती हैं ?

कृष्णा,—अभी क्या बिगड़ा है जो तुम नहीं पढ़तीं ?

जिठानी,—बहिन ! अबतो शर्म मालूम देती है ।

कृष्णा,—शर्म काहे की है भला गुण सीखने में भी शर्म करना चाहिये ।

जिठानी,—अच्छा यह बताओ कि विद्या जो नहीं पढ़ी हैं वे क्या पढ़ी हुई से कम हैं ।

कृष्णा,—जो पढ़ी स्त्री हैं उनको समस्त कार्य करने में बड़ी सरलता होती है और उन्हें बड़ा लाभ होता हैं कि अपने धर्म, ज्ञान और संसार तीनों को यह जान सकती हैं । सच पूछो तो जिसने मनुष्य योनि मे जन्म लेकर विद्या नहीं पढ़ी उसका संसार में जन्म लेना वृथा है । जो स्त्री पढी नहीं हैं वे समस्त काम मे अज्ञानी होती हैं, यहां तक कि वे अपने घरके साधारण हिसाब को नहीं कर सकती हैं, सदा उनसे हिसाब के बारे में नीच मनुष्यों से कलह करना पड़ता है ।"

जिठानी,—अच्छा तुमने इतना पढ़ा लिखा है, बताओ विद्या में कौन २ गुण हैं।

कृष्णा,—बहिन! विद्या के गुण अकथनीय हैं अर्थात् कहने से समझ में नहीं आते हैं जिसने कभी मिठाई नहीं खाई है और उसे उसका स्वाद बताया जाय तो वह क्या समझेगा। जब तुम विद्या पढोगी तब स्वयं उसके गुण को जान जाओगी। परन्तु अभी दो चार गुण तुम्हें मैं बताती हूं सुनो, एक तो मनुष्य को विद्या पढ़ने से बातचीत करने का क़ायदा आ जाता है और सब बातों का ज्ञान उसे हो जाता है कि यह काम बुरा है और यह भला है। दूसरे विद्या से उसे अपना धर्म्म मालूम हो जाता है कि हमारा धर्म किस काम के करने से बना रहेगा अर्थात् कौन कर्त्तव्य है तीसरे सांसारिक कार्य्य उसे अच्छी तरह से करने आ जाते हैं।

जिठानी—यह बात तो मैं भी जानती हूं कि पढ़े हुये को बोलने चालने का सलीका अच्छा आ जाता है, और जो तुम ने यह कहा कि, अपना धर्म्म मालूम हो जाता है तो मुझे बताओ कि स्त्री का धर्म्म क्या है?

कृष्णा—बहिन! स्त्री के धर्म्म बहुत हैं जो मैं कहूं तो एक पूरी भागवत की कथा हो जाय परन्तु तुम्हें थोडा सा यहां बताती हूं जो कि मुख्य कर्त्तव्य हैं जिन्हें स्त्री को अवश्य करना चाहिये प्रथम तो स्त्री को अपना गृह सुधारना चाहिये क्योंकि गृह का यथा रीति से परिस्कार (सफ़ाई) रखना ही स्त्री का कर्त्तव्य हैं स्त्री को उचित है कि अपने घर में समस्त वस्तुओं को यथा स्थान रक्खे। चारों तरफ़ सफाई हो कलह न होने देवे, अन्नादिक

को संभाल कर रक्खे जिसमें इधर उधर छोटा बोया न रहे उसी गृह में लक्ष्मी बास करती है क्योंकि घर ही लक्ष्मी का निवास स्थान है। स्त्रियों का प्रथम समस्त कार्य्य करने में चतुर होना चाहिये क्योंकि गृह ही मनुष्य का प्रधान विद्यालय है इस विद्यालय में जैसी शिक्षा उसे मिलती है वैसी ही चाल वह चलता है। स्त्री ही इस विद्यालय की अध्यापिका है वह अपने पति तथा पुत्रों को उत्तम २ शिक्षा देती है जिससे वह कुमार्ग में न पड़े स्त्री के हृदय में अपार चतुरता एवं ज्ञान की आवश्यकता है वह ज्ञान विद्या से ही उत्पन्न होता है। मनुष्य का गृह जो है वह शान्ति निकेतन है जब मनुष्य बाहर से परिश्रम से क्लान्त होकर आता है तब स्त्री ही अपने प्रिय मधुर भाषण से पति के चित्त को प्रसन्न करती है और जो स्त्री मनुष्य के हृदय को शान्ति नहीं दे सकती घर में आते ही कलह विवाद होने लगता है तो उस गृह को स्मशान समझना चाहिये। शास्त्र में लिखा है—

"माता यस्य गृहे नास्ति भार्य्या चाप्रियवादिनी।
अरण्यं तेन गन्तव्यं यथारण्यं तथा गृहम्॥"

इस लिये स्त्री को सदा अपने गृह सुधारने की चेष्टा करते रहना चाहिये जिससे गृह में लक्ष्मी का निवास हो मनुष्य प्रसन्न हो, सन्तानों को उत्तम उपदेश मिले, देखने में अच्छा हो। और भी एक बात यह करना कि कभी झूंठ नहीं बोलना चाहिये कितना ही कष्ट क्यों न हो सत्य के सिवाय असत्य न बोले।

जिठानी—"यह तो तुमने खूब कही कि कभी झूंठ न बोले।

कोई काम ऐसा पड़ जाता है कि झूंठ बोले बिना काम हो नहीं चलता। इसको जाने दो देखो दुकानदार झूंठ न बोले तो उसको लाभ न हो और न सौदा ही बिके। इसे भी जाने दो, देखो जब हमसे कोई भारी नुकसान होजाय तब हम यदि झूठ न बोलें तो बडी बदनामी होती है मनुष्य शर्मिन्दा करते हैं और माता, पिता, सास, ससुर, पति मारने उठते हैं, इस लिये झूंठ बोलना ही पड़ता है।

कृष्णा,—"बहिन! इसमें तुम्हारी बडी भूल है, दूकानदार यदि झूंठ न बोलकर सत्य बोले तो उसे पहिले तो कुछ नुकसान होगा परन्तु जब मनुष्य यह जान जायंगे कि यह सत्य बोलता है तब उसकी दूकान से सब सौदा खरीदने लगेंगे और उसे बडा लाभ होगा क्योंकि सत्य बोलने वाले की दुकान पर सभी सौदा खरीदना चाहते हैं जिसमे पैसा ज्यादा न लगे। दूसरी बात यह है कि जब तुम झूंठ बोलोगी तब तुम्हारी सन्तानें भी झूंठ बोलेगीं और जो यह तुमने कहा कि बदनामी होती है यह भूल है देखो एक काम यदि तुमसे बिगड़ जाय उसे तुम सत्य कह दो कि हमसे यह बिगड गया तो उसे मनुष्य कभी बुरा न कहेंगे और जो तुमने उसे छिपा लिया तो उस वक्त तो वह छिप गया परन्तु पीछे जब वह मालूम हो जायगा तब जरूर तुम्हें आदमी चोर भी बनावेगा बुरा भी कहेगा पति आदि भी मारने उठेगें कि सदा यह झूंठ बोलती है। इस लिये झूंठ नहीं बोलना चाहिये। और भी देखो मनुष्य झूंठ बोलने से बड़ा नीचा

देखना है इसपर मैं तुम्हें एक छोटा सा दृष्टान्त सुनाती हु सुनो—

"एक जगह कहीं विवाह था उसमें बहुत सी स्त्रियां निमन्त्रण में गई थीं वहां एक गुलाब देई नाम की स्त्री भी वहां गई थी वह अपने बदन पर सुवर्ण के गहने इतने पहिने थी कि कोई बड़े घर की भी उतना नहीं पहिने थी इसका कारण यह था कि वह एक स्त्रा से यह कह कर गहने मांग लाई थी कि ज़रा तुम अपने गहने दे दो मैं अभी अपने पति को दिखाकर तुम्हें दे जाऊंगी मुझे भी ऐसे गहने बनवाने हैं—उस स्त्री ने कहा मैं गहने तो अभी दिये देती हूं परन्तु तुरन्त ही लौटा देना क्योंकि मुझे अपनी बिरादरी में एक के मुंडन में जाना है इसने कहा बहिन मैं अभी दे जाऊंगी केवल उन्हें दिखाने भर की देरी लगेगी उसने अपने सब गहने दे दिये। वह अपने घर लाकर कहने लगी कि वह तो अभी जायगी नहीं कल जायगी और मैं अभी जाकर शाम को लौट आऊंगी यदि शाम को वह कुछ कहेगी तो कह दूंगी बहिन मैं एक काम से चली गई थी गहने तो घर ही धरे थे पर मेरे बिना कौन देता। यह सोच कर उसने अपनी मज़दूरनी से कहा देख मुन्नी आवे तो कह दीजियो, कि बहू तो कहीं काम से गई है और शाम को आवेंगी यदि वह कहें कि मुझे गहने चाहियें तो कह दीजियो कि वे सब घर ही धरे हैं उनके बिना कैसे दूं। इतना कहकर वह सब गहने पहिर कर नौते में चली गई जब थोड़ी देर बीत गई और गुलाब देई नहीं आयी। इतने में उसको कहीं से बुलावा आया 'अब तो वह गुलाबदेई के घर आयी वहां मज़दूरनी से सब बात सुनी तो वह सोचने लगी कि पास होतो

वह गई है चलो वहां से उन्हे खड़े २ बुला लाऊं । जब वह वहां गई तो देखा कि सब गहने उसके पहिरे है उसने कहा बहू चलो मुझे तुम से कुछ काम है। गुलाबदेई ने सोचा कि अभी मैंने यहां कहा है कि यह सब गहने मेरे हैं और यह अब मांगने आयी है 'अब तो मेरी बडी हंसी होगी गुलाबदेई ने मुन्नी से कहा सन्ध्या को घर आइयो मैं तुझे मिलूंगी । उसने कहा अजी मुझे बुलावे में जाना है मज़दूरनी घर बैठी है मेरे सब गहने यहीं देदो अगर घर न जाओ। पहिरे तो हो । कहीं लेने भी तो नही जाना है । उस वक्त जितनी औरते वहां बैठी थीं सभी गुलाबदेई का मुंह देखने लगी । मुन्नी बड़ी लडाको स्त्री थी वह तुरन्त औरतों को देखकर ज़ोर ज़ोर से कहने लगी गहना पहिरने का इतना शौक है तो ख़सम से बनवाय नही लेतीं दुसरे के गहने पहिर के चली हैं, तुमने तो मुझसे कहा ख़सम को दिखा लाऊं और यहां झमकाकर चली आयी। ला दे मेरे सब गहने मुझे देरी होती है। उस वक्त गुलाबदेई का मुंह बिलकुल उतर गया वहीं उसके गहने देने पड़े और मुंह छिपाय कर वहां से घर चली आई और अपनेपति से सब बातें कहीं—पति ने कहा तू झूठ बहुत बोलती है इसी का तुझे फल मिला है। यदि तू मुन्नी से कह देती कि मैं न्योते में जाऊंगी तो वह कभी वहां जाकर गहने न मांगती और तुझे वहाँ सब के सामने नीचा न देखना पड़ता। उसी दिन गुलाबदेई ने झूंठ बोलना छोड़ दिया।

इसलिये बहिन स्त्री को कभी झूंठ न बोलना चाहिये।"

जिठानी जी,—अच्छा बहिन आज से मैं भी इस बात की प्रतिज्ञा करती हूं कि झूंठ कभी नहीं बोलूंगी। और क्या

करना चाहिये वह बताओ।

कृष्णा-"बहिन। मैं अब तुम्हें संक्षेप में सब बात बताती हूं ध्यान देकर सुनो-स्त्रियों को एक तो सच बोलना चाहिये आंख में शील रखना चाहिये, जिसके शील नहीं होती वह संसार में सब जगह निरादर की दृष्टि से देखी जाती है। इसके सिवाय चित्त में दया रखनी चाहिये' जब किसी को दुःख हो। अथवा किसी प्रकार की चिन्ता में वह ग्रसित हो तो उसकी दशा देखकर मनुष्य को सदा दया करना चाहिये इससे बढ़कर दूसरी वस्तु नहीं है जिसमें यह गुण नहीं है उसे सब मनुष्य निर्दयी और पापी तथा हत्यारा कहते हैं और उसके समस्त जप तप पुण्य नष्ट हो जाते हैं। कितने ही मनुष्य संसार में ऐसे होते हैं जो दया की कौन कहे उलटे प्राणियों को सताया करते हैं ऐसे दुष्ट हृदय के मनुष्य को कहीं यश नहीं मिलता है।

सन्तोष भी मनुष्य का भूषण है' क्योंकि जिस मनुष्य को सन्तोष नहीं होता है उसे चाहे समस्त स्वर्ग के सुख मिल जांय तब भी उसकी तृप्ति नहीं होती है।"

जिठानीः--" यह तो बहिन हो ही नहीं सकता कि मनुष्य सन्तोष रक्खे।

कृष्णा— नहीं बहिन! संसार में बहुत से मनुष्य ऐसे हैं जो सन्तोष रखते है। देखो मैं तम्हें एक प्रत्यक्ष दृष्टान्त सुनाती हूं। सुनोः—

वह देखो जो हमारे घर के सामने दो भाई रामू और श्यामू रहते हैं इन दोनो में अत्यन्त प्रीति है यह नित्यप्रति भिक्षा मांगकर लाते थे और उससे अपनी गुज़र करते थे उन

दोनों को इतना सन्तोष था की भिक्षा में जो कुछ मिल जाता उसी को खा लेते थे कभी कोई कहता कि श्यामू रामू तुमको तो भिक्षा इतनी मिलती नहीं है इसका कारण यह है कि तुम न जाने कहां मांगने जाते हो यदि तुम बिसेसरगंज आदि अन्न की मंडी म मागने जाओ तो तुम्हें बहुत मिले। उन्होंने कहा,—भैया हमे जितना मिलता है वही बहुत है जितना मागो। उतनी ही तृष्णा अधिक होती है। हमारे भाग्य मे जो ईश्वर ने लिख दियाहै वही हमे मिलता है इससे हमे उसी में परम सन्तोष है देखो तुम सन्तोष न रहने के कारण चिन्ता मे रहते हो और हम लोग आनन्द से रहते हैं यह सब सन्तोष ही से होता है। जिसको सन्तोष नही होता उसको विश्व की सम्पदा भी मिल जाय तब भी तृप्ति नहीं होगी उसे यही चिन्ता रहती है की कहां पावें जो लावें। इसलिये भैया इस व्याधि से हम दूर हैं।"

जिठानी—"अब मुझे भी इसका ज्ञान होगया कि जरूर सन्तोष न रहने के कारण मनुष्य तृष्णा में इधर उधर घूमा करता है। अच्छा भाई तुम हो तो मेरे से छोटी परन्तु तुम मे गुण हजार गुना मेरे स अधिक है अच्छा मुझ तुम अच्छे उपदेश रोज दिया करो और मैं नित्य प्रति तुम्हारे पास आया करूंगी। अब और बताओ मनुष्य को क्या करना चाहिये?

कृष्णा—"मनुष्य को क्षमा रखना भी एक परम गुण है जिस मनुष्य को क्षमा रूपी गुण दिया है वह मनुष्य में रत्न है सब लोग उसकी प्रशंसा करते हैं शत्रु तो उसके कभी होते ही नहीं यदि हो भी जांय तो स्वयं अपनी दुष्टता का फल पाजाते हैं। सब से ज्यादा स्त्रियों को क्षमा होनी चाहिये क्योंकि सारी गृहस्थी का

सुख और शान्ति इसी क्षमा के ऊपर निर्भर है। जिस घर में यह क्षमा विराजती है उस घर में कभी कलह नहीं होता और लक्ष्मी सदा निवास करती है चारों ओर शान्ति फैली रहती है उस घर के सब प्राणी सदा प्रसन्न चित रहते हैं। देखो तुमने भृगुजी की कथा तो सुनी होगी जो उन्होंने विष्णु भगवान को चरण से मारा था। उस वक्त भगवान ने कैसी कोमलता से बातें की थीं महर्षि! आपको बड़ा कष्ट हुआ होगा क्योंकि इस मेरे हृदय में त्रैलोक्य निवास करता है वृक्षादि पर्वतादि काटे आदि इसमें भरे हैं कहीं आपके कोमल चरण मे न लग गये हों क्षमा करियेगा। भृगुजी सुनकर बड़े लज्जित हुए। इस लिये बहिन मनुष्य को क्षमा रखना बड़ा गुण है।

धैर्य्य भी मनुष्य में होना परमावश्यक हैं क्योंकि इससे हृदय बड़ा बलवान होजाता है विपत्ति में बड़ी सहायता मिलती है, यदि धैर्य्य न रहे तो मनुष्य विपत्ति मे व्याकुल और हताश हो जाते हैं। देखो तुलसीदास जी ने भी कहा है—

"धीरज, धर्म्म, मित्र अरु नारी।
आपति काल परखिये चारी॥"

इसके साथ साहस भी होना चाहिये क्योंकि विपति में जब धीरज रखना पडता है उस वक्त साहस की भी जरूरत पड़ती है बिना साहस के धीरज भी नहीं धरते बनता। दूसरे किसी काम को जब कठिन समझकर मनुष्य करने की इच्छा करता है तो उस समय साहस ही मनुष्य को उत्साहित करता है और साहस से ही मनुष्य कठिन से कठिन काम कर डालता है जिस

मनुष्य में साहस नहीं होता है वह मनुष्य सरल से सरल काम करने में भी हिचकता है।"

जिठानी,—"ठीक है बहिन! जब तक मनुष्य को किसी काम के करने में साहस नहीं होता तभी तक वह कार्य्य कठिन जान पडता है। देखो मैं जब पहिले पहिल गुलूबन्द बुनने के लिये बैठी तो मुझे यही मन में होवे कि कैसे उसे बिनूंगी? परन्तु जब गुरुआइनजी ने बहुत समझाया और हिम्मत दिलाई तो वही गुलूबन्द मैं हफ़ते भर में एक तयार कर लेती हूं।"

कृष्णा,—"ठीक ही है मनुष्य को साहस कभी न त्यागना चाहिये और वृथा समय भी नहीं जाने देना चाहिये क्योंकि यह समय अमूल्य धन है। इस लिये मनुष्य को कुछ न कुछ परिश्रम करते ही रहना चाहिये परन्तु उस परिश्रम मे नियम होना जरूर है यदि नियम से परिश्रम नहीं किया जायगा तो वह कार्य्य भी नहीं होगा और करने वाला भी घबडा जायगा इस लिये स्त्रियों को उचित है कि वे अपने घर मे जितने काम उन्हें करने पड़ते हैं उन सब का प्रथम विचार करलें कि कौन काम किस वक्त करने से अच्छा होगा जो कि नित्य के कार्य्य हैं उन्हें तो श्रृङ्खलाबद्ध करना ही उत्तम है इनके बाद ऊपरी छोटे छोटे बहुत से काम अनायास उत्पन्न हो जाते हैं जिनके करने के लिये भी मनुष्य को एक समय स्थिर कर लेना चाहिये। क्योंकि मनुष्य यह चाहता है कि हमें दुःख न हो, हम सुख से काम करें। जिन्हें सुख की इच्छा होवे वे अपने समस्त कार्य्य नियम से सम्पादन करैं।"

जिठानी—"यह बात तो तुमने बड़ी कठिन कही कि मनुष्य अपना समय वृथा न जाने दे, सब काम भी होवें और सुख होवे भला मैं यह तुमसे पूंछती हूं कि जब मनुष्य तथा स्त्री दिन

भर काम में लगी रहैगो तो फिर उसे कैसे सुख मिलेगा।"

कृष्णा—"बहिन! तुमने मेरा मतलब नहीं समझा मेरा मतलब यह नहीं है कि स्त्री हर घड़ी चक्की पीसा करै, या कसीदा ही काढ़ा करे, या चरखा काता करे मेरा कहने का मतलब यह है। मनुष्य बे फायदे की बकवाद या सुस्ती में लेटे न रहें अथवा वृथा दिन न काटें। एवं उसे अपने जरूरी कामों को आलस्य त्याग कर पूरा करना चाहिये अब सुना कि जरूरी काम कौन कौन हैं? पहिले मैं तुम्हें लड़कियों के काम बताती हूं देखो दिन रात के चौबीस घन्टे होते हैं। उन में प्रथम एक घन्टा प्रातःकाल उठ कर शौचादिक से निवृत्त होकर उन्हें ६ बजे से १० बजे तक चार घंटा मन लगाकर विद्याभ्यास करना चाहिये। इसके बाद १० बजे से १ बजे तक तीन घंटे मे खाना पीना सोना आदि करना। उपरान्त १ वजे से ५ बजे तक तीन घटे शिल्प विद्या सीखना चाहिये सिलाई कसीदा काढ़ना नक्शे खींचना आदि कार्य्य हाथ के इस शिल्प विद्या में गिने जाते हैं। ४ बजे से ८ बजे तक चार घंटा सखी सहेलियों में बैठना यदि इच्छा होवे तो कुछ गायन विद्या का भी अभ्यास करें और फिर भोजन करें। ८ से ६ तक एक घंटा रामायण आदि कथा अथवा अपनी पढ़ी हुई उत्तम पुस्तकों का पाठ करें। इस प्रकार १६ घटे उनको काम करना चाहिये इस प्रकार करने से उनका चित्त भी नही घबडाता और काम भी पूरा हो जाता है तथा गुणवती होजाती हैं। अब रहे विवाहिता स्त्रियों के कार्य्य, उसे तुम मेरे घर में एक कागज़ की तख़्ती पर क्रम से लिखा है देखलो।"

जिठानी—"मै क्या पढ़ी हूं जो देख लूं। तुम्हीं पढ़के सुना दो मैं समझलूं।"

कृष्णा—"देखो उनका इस प्रकार कार्य्यविभाग करना चाहिये

विवरण	घण्टा
प्रातःकाल उठकर शौचादिक से निवृत्त होकर बालको को उठाना उन्हें शौचादिक कराके हांथ, मुंह धोकर काजल टोका लगा और पढ़ने योग्य बालको को पढ़ने भेजना आदि	२
रसोई बनाना सबको खिला आप खाना ...	३
घर की सफाई करना चीज़ वस्तु कपड़े आदि देखना संभालना यथायोग्य जो वस्तु जहां की हो तहां रखना गृहस्थी के ख़र्च की सब चीज़ें बनाना साफ़ करना पापड, बडी, अचार, मुरब्बा, आदि बनाना जीरा आदि बीनना सफ़ा करना बासन आदि मांजना ...	४
विद्या की चर्चा करना तथा शिल्पकारी आदि करना तथा बिरादरी में जाना—	३
सन्ध्या करना, ब्यालू बनाना, सबको खिलाना पिलाना, आदि	३
बालकों को सुलाना, सबकी शय्या बिछाना, पति की वा गुरू लोगो की सेवा करना उपरान्त शयन करना	२

जिन स्त्रियों के गृह मे इस प्रकार नियम से कार्य्य किया जाता है उनके गृह की शोभा जाकर देखो कि कसेरा की दुकान के समान तो घर मे सब बासन बरोबर से रक्खे हैं वस्त्रादिक भी सजाये रक्खे है कहने का तात्पर्य यह है कि सब प्रकार से वह घर सुन्दर मालूम होता है जिसके यहां नियम से नहीं होता वहां पर देखा कि जूठे बासन अलग भिनक रहे हैं,

कूड़ा कहीं पड़ा है कोई कपड़ा ज़मीन पर पड़ा है सब की लातों से कुचला जाता है यानी कोई काम ठीक नहीं है और घर की मालकिन कुछ बैठी भी नहीं रहती है बल्कि वह काम करते करते थक जाती है परन्तु तो भी काम पूरा नहीं होता देखो जरमन में किसी महात्मा ने अपने दर्वाज़े पर एक साइन-बोर्ड मैं टांग रक्खा था कि—

(१) "जो मनुष्य शय्या पर से देरी करके उठते हैं, उन्हें दिन भर सुस्ती घेरे रहती है जिससे कार्य्य करने में मन नहीं लगता है और दिन रात में भी उनका कार्य सम्पादित नहीं होता।"

(२) मनुष्य को चाहिये कि सूर्य से प्रथम शय्या का त्याग करदे इससे स्वास्थ्य और धन एवं ज्ञान की बृद्धि होती है"।

(३) "जो लोग प्रातःकाल के समय को नष्ट कर देते हैं फिर उनसे दिन भर कोई काम नही होता इसलिये परिश्रम प्रातःकाल आरम्भ कर देना चाहिये।

(४) "यदि तुम अपने जीवन को सुफल करना चाहो तो अपने समय को वृथा न जाने दो।"

(५) "जो मनुष्य अपनी बुद्धि और साहस एवं उपदेश के अनुसार काम करते हैं उन पर ईश्वर भी प्रसन्न होते हैं और कार्य्य करने की शक्ति देते हैं।"

(६) "मनुष्य को आलस्य न करना चाहिये जो कार्य्य आज करना होवे उसे आलस्य मे कल के लिये न छोड़ दे क्योंकि जो समय बीत जायगा वह फिर नही आयेगा।"

(७) "परिश्रमी मनुष्य को कोई ऐसी वस्तु नहीं है जो

उसे न मिले। सुख और स्वच्छन्दता तो उसके आगे हाथ जोड़े खड़ी रहती हैं।"

इसलिये बुद्धिमान मनुष्य समय को व्यर्थ व्यय नहीं करते हैं सदा परिश्रम से समय को मथनकर यश, धन, सुख, मान और स्वच्छन्दता को प्राप्त करते हैं।"

जिठानी,—"बहिन यह तो मैं जानती हूं कि जो मनुष्य परिश्रमी होते हैं उन्हें कभी दुःख नहीं होता है हां रहा काम करने का रास्ता जानना सो बिना विद्या के पढ़े या गुरू के बताये नहीं मालूम होता। बहिन! गुरू तो जल्दी सुयोग्य मिलते नहीं फिर किससे सीखे। रहा पढ़ना उसे घर के बुरा बताते हैं क्योंकि उन लोगों का कहना है कि जो स्त्री पढ़ती है वह विधवा होजाती है।

(२) स्त्रियों में विद्या पढ़ने की रिवाज नहीं।

(३) फिर विद्या पाठशाला में पढ़ाई जाती है यदि स्त्रियां वहां जाकर पढ़ें तो उनका परदा नष्ट हो जाता है।

(४) पाठशाला में छोटी तथा नीचकुल की स्त्रियों के संग में रहने से कुलीन स्त्रियों के आचरण बिगड जाते हैं।

(५) पढ़ी लिखी स्त्रियां व्यभिचार में ज्यादा लिप्त होती है वे पर पुरुष से पत्र व्यवहार करने लगती हैं।

(६) एक तो स्त्रियों की बुद्धि वैसे ही मन्द होती है दूसरे पढ़ने से नाना प्रकार की बुरी किताबों को पढ़के और भी कुमार्ग में चलने लगती हैं।

(७) जो स्त्रियां पढ़ी होती हैं वे अपने बिना पढ़े पति का निरादर करती हैं जिससे उसका पति क्लेशित रहता है यहां

तक कि जहर आदि खाकर या किसी प्रकार से अपमृत्यु कर लेता है या घर त्याग देता है।

(८) पढ़ी स्त्रियों से बहुत पुरुष प्रीति करने लगते हैं इस से उनमें दोषारोपण होने लगता है।

(९) आज कल ज्यादा करके स्त्रियां तो इतनी पढ़ी लिखी मिलती नहीं जो सब विषय पढ़ा सकें इसलिये पुरुष के पास पढ़ने जाया करती हैं अथवा पुरुष ही घर पर पढ़ाने आते हैं जहां पर स्त्री और पर पुरुष को एकत्रित बैठे देखते हैं वहीं लोग नाना प्रकार के दोष लगाने लगते हैं प्रायः उसका परिणाम भी ऐसा ही निकल आता है जैसा कि सब कहते हैं।

(१०) पढ़ी स्त्रियां जो कि बिधवा होती हैं वे अपने हिस्से के लिये अपने कुटुम्बियों पर नालिश करती है और लाज शर्म छोड कर इजलास में जवाब सवाल करती हैं।

कृष्णा—जिठानी जी ! आप भी इन बातों को मानती हो ? अच्छा सुनो मैं तुम्हारे एक २ प्रश्न का अलग अलग उत्तर देती हूं।

जो स्त्रियां पढ़ी होती हैं वेही विधवा होती हैं दूसरी विधवा नहीं होती। तुम्ही से पूछती हूं कि आजकल संसारमें विद्या का कम प्रचार है परन्तु पहिले विद्या का जब अधिक प्रचार था उस समय देखो समस्त स्त्रियां पढ़ी लिखीं होती थी तो क्या वे विधवा हो जाती थीं यह तो ईश्वरीय इच्छा है जिसके पूर्व संचित जैसे पुण्य होते हैं वैसे ही फल मिलते हैं जिसका जितने दिन संयोग होता है उतने ही दिन वह उसके साथ भोग करता है। इसमें विद्या का दोष नहीं है। यदि मान लो कि विद्या के पढ़ने से ही विधवा स्त्री होती हैं तब तो

पढ़े हुए पुरुष भी रडु 'आ हो जाने चाहिये। क्योंकि विद्यारूपी विष का यही स्वभाव है कि जो उसे खाय (पढ़े) तो उस के सहायक की मृत्यु हो जाय। स्त्री का सहायक पति और पति की सहायक स्त्री है। जब स्त्री के लिये विद्या पढ़ना इन्कार है तो पुरुष को भी हानि कारक होनी चाहिये। इसलिये ऐसा विश्वास कभी न करना कि विद्याके पढनेसे विधवा होती हैं।

(२) यह आप ने या आप के घरवालों ने कैसे जाना कि विद्या पढने की परिपाटी स्त्रियों में नहीं है? देखो वेदों में शास्त्रों में पुराणों मे सब ग्रन्थों में स्त्री को पढ़ने का अधिकार लिखा है। इसे भी जाने दो देखो पहिले द्रोपदी, मन्दालसा, कौशिल्या, सीता, अनुसूइया. अरुन्धती, रेणुका, कुन्ती, सत्यभामा विद्योत्तमा, सुमित्रा, मन्दोदरी, सुलोचना, तारा, बुद्धिवती शकुन्तला, लीलावती, उत्तरा, और विद्याधरी आदि कितनी ही स्त्रियां हैं जिनकी नामावली यदि मैं तुम्हें सुनाऊं तो महीने बीत जांय इनके गुण और कार्य का यदि वर्णन करूं तो एक महान पुस्तक तय्यार हो जाय। जिसे कि बर्षों में मनुष्य पढ़ सकें। यह सब स्त्रियां पढ़ी थीं फिर कैसे माना जाय कि स्त्रियों मे पढने की परिपाटी नहीं है।

(३) विद्या पढने से परदा नष्ट नहीं होता है। परदा नष्ट तो उसमें होता है जैसे कि प्रायः आजकल देखने में आता है कि घरके लोगो से तथा सम्बन्धी जनो से इतना परदा करती है कि अत्यावश्यकोय कामो को भी नहीं कहतीं और अन्य पुरुषों के सामने गङ्गा व नदी अथवा तालावों पर और कुओ पर नग्न नहाया करती हैं यदि पढ़ी लिखी स्त्रियां होवें तो वे कभी नग्न न नहावें और ऐसे वस्त्र पहिन के भी नही नहांय

जिसके भीजने पर सब शरीर दिखाई पड़े। बहिन! परदा इसे नहीं कहते हैं कि लम्बा सा घूंघट काढ लिया चलो परदा हो गया। परदा लाज को कहते हैं सो मर्य्यादानुसार लाज सभी छोटे बड़े के साथ करना योग्य है बल्कि बृद्ध स्त्रियों से भी लाज करना चाहिये। आज कल प्रायः देखने में आता है कि अपने घर मे सास ससुर पति, जेठ आदि से अधिक पर्दा स्त्रियां करती हैं यहां तक कि चाहे नुकसान हो जाय परन्तु मुंह से बोलेंगी नहीं और धोबी चमार कहार (पनभरा) अहीर आदि नीच क़ौम के आदमियों से पर्दा कभी नही करती बेधड़क उनसे बात चीत करती हैं चाहे वे कैसे ही खोटे चाल चलन के क्यों न हों। तब न जाने लाज उनकी कहां चली जाती है कहीं ससुर जेठ आदि घर में जो आय जांय तो दौड़ कर घर में छिप जाती हैं। बहिन! इसे पर्दा नही कहते हैं, देखो पर्दा दक्षिण मे है कि चाहे कोई मनुष्य सामने आवे परन्तु वह घूंघट नही काढती और मर्यादानुसार लाज करती हैं। अपने यहाँ प्रायः यह बहुत देखने में आता हैं कि स्त्रियां मेलों में झनकदार [छडाकड़ा आदि] आभूषण पहिर कर आती हैं और रास्ते भर अपनी सखियों के संग अठखेलियां करती जाती हैं तो क्या दुर्जन लोग अपनी दुष्टता को काम मे नहीं लाते होंगे, अवश्य बोली ठोली बोलते होंगे। इसे भी जाने दो देखो जब किसी के यहां विवाह होता है और बराती भोजन को बैठते है तब एक पर्दा (कपड़े) की आड़ से बहू बेटी अपने पति पिता आदि के सामने नाना प्रकार की अश्लील और बुरे गीत गाती हैं। तब उनकी लाज कहां चली जाती है? क्या इसी का नाम लाज है।

देखो जो स्त्री सुशिक्षिता हैं वह ऐसे कार्य्य कभी नहीं

करेगी । फिर स्त्री से विद्या पढ़ें तो पर्दा क्यों नष्ट होवे और पाठशाला में विवाह होने तक कन्याओं को पढ़ना उचित है फिर अपने घर माता, पिता, पति, भाई आदि से पढ़ा करे जिसमें पर्दा नष्ट होने की कोई शङ्का ही न रहे।

(४) पाठशाला मे नीच कुल की स्त्रियों की संगति से कुलीन स्त्रियां बिगड जाती है; परन्तु मैं तुम से यह पूंछती हूं कि एक तो नीच कुल के मनुष्य हो प्रायः मूर्ख और निरक्षर होते है फिर वे अपनी बहिन कन्या और स्त्रियों को कब पढ़ने पाठशाला मे भेजने लगे। यदि मान लो कि पढ़ने ही जांय तो भी स्त्रियों के आचरण खराब न होने चाहिये क्योंकि यदि नीच संगति से आचरण बिगडता है तो घर मे नाइन धोबिन आदि का आना भी ठीक नहीं है क्योंकि इनके संग मे भी आचरण खराब होवें गे। देखो मेरी समझ से इन नाइन धोबिन कहारिन से वे पाठशाला की नीच स्त्रियां उत्तम हैं क्योंकि वे पढ़ी लिखी हैं जो पढी लिखी हैं उनके संग से आचरण नहीं बिगड़ेंगे बल्कि और कुछ ज्ञान ही लाभ होगा।

(५) जो स्त्रियां विद्या पढ़ लेती हैं अपना धर्म अच्छी तरह मालूम हो जाता है फिर वे ऐसे निन्द्य कर्म क्यों करने लगीं जिसमें उनका सर्वस्व नाश होजाय और इसलोक और परलोक दोनों के अर्थ की न रहें। बहिन! व्यभिचार मूर्ख ही स्त्री करती हैं जिन्हें कि धर्म का ज्ञान नहीं होता है।"

(६) "यह कहना ठीक है कि स्त्रियों की बुद्धि कुन्द होती है, इसी से उन्हें पढ़ाने की अति आवश्यकता है, इस से बुद्धि शुद्ध होती है, "बुद्धिर्ज्ञानेनशुध्यति, बुद्धि ज्ञान से शुद्ध होती है और ज्ञान पढ़ने से आता है। रहा यह कि खराब पोथियों का

पढ़ना यह उनके पढ़ाने वालों का दोष है जो उन्हें ऐसी पुस्तक पढने को लाकर देते हैं।"

(७) "जो स्त्रियां पढ़ी लिखी होती हैं वे अपने पातिव्रत धर्म को भली प्रकार जानती हैं, पति को ही अपना पूज्य समझती हैं चाहे पति पढ़ा हो चाहे मूर्ख निरक्षर हो चाहे सुमार्गी हो अथवा कुमार्गी कैसा ही क्यों न हो परन्तु उसे छोड़ कर अन्य पुरुष को सपने में भी ध्यान नहीं करती हैं। जिस पुरुष की स्त्री पढ़ी होगी तो वह अपने निरक्षर पति को भी पढ़ाय लेगी जैसे कालिदास की स्त्री विद्योत्तमा ने अपने पति को पढ़ाया था जिसका कि संस्कृत काव्य मे अग्रसर नाम अभी तक चला आता है। बहिन! जो स्त्री अपने मर्यादा और धर्म को भली प्रकार जानती है वह पति का कभी निरादर नहीं करती बल्कि पति को पूज्य समझ कर देवता के समान पूजन करती है फिर पति कैसे विष खावेगा अथवा डूबेगा या घरत्याग देगा? यह सब बातें मूर्ख स्त्री के पतियों की हुआ करती हैं। जब पति सुख पावेगा तब क्यों अपने प्राण त्यागेगा, पढ़ी स्त्रीयां अपने पति की सेवा करती हैं सदा उसकी आज्ञा मानती हैं। फिर क्यों न उससे पति प्रसन्न हो।

(८) "पढ़ी स्त्रियों पर अन्य पुरुष कुदृष्टि तथा स्नेह से देखते हैं यह तुम्हारा कहना ठीक है जब वह पढी लिखी है और अपने पति को सेवा से वश मे किये है और पति उसे प्राण से अधिक चाहता है फिर तुम्ही कहो कि वह स्त्री अन्य पुरुष पर दृष्टि कब डालने लगी अन्य पुरुष को तो वे चाहती हैं जिनको कि, पति नहीं चाहते।"

(९) "पाठशाला में पढ़ने का समय केवल विवाह

तक है, इस के उपरान्त अपने भ्राता, पिता आदि से पढना चाहिये। इस वर्ष की अवस्था तक कोई कुछ भ्रम वा दोषारोपण नहीं कर सक्ता है. उपरान्त पति के गृह चली जाय तो वहां अपने पति से पढे फिर किसी को कुछ कहने की शक्ति न रहेगी। नैहर में पिता भ्राता से स्वयं प्रीति बडी होती है फिर यदि स्त्री पढ़ने लगे तो और भी अधिक प्रीति बढ जायगी और पति से यदि पढ़े तो उसे और भी अनेक बातें उपयोगी मालूम हो जायंगी जिन्हें कि भ्राता, पिता गुरू आदि लज्जावश नही बता सकते हैं वे बातें पति से मालूम हो जाती हैं, दूसरे पति से प्रीति अधिक हो जाती है जोकि स्त्रियों के सुख की जड है यदि भ्राता पिता पति कोई भी पढ़े नहीं हों तब दश वर्ष की अवस्थावाले विद्यार्थी अथवा वृद्ध पुरुष से पढ़े या कोई सुशीलास्त्री से पढ़ लिया करै फिर कोई भी दोषारोपण नहीं करैगा।"

(१०) "जो पढ़ी लिखी स्त्री अभाग्यवश विधवा होगई है और उसका हिस्सा यदि कुटुम्बीय लोग दबाये होवें तो प्रथम तो वह उनसे हर प्रकार की बिनती करैगी कि मुझे अन्न वस्त्र आप दिये जांय मुझे हिस्से की कोई जरूरत नही है क्योंकि उसे ले कर मैं क्या करूंगी। जिठानी जी! इस प्रकार वह बिनती करती है, इस पर भी जब वे लोग नहीं सुनते और अन्न वस्त्रादि देने में भी अनेक आपत्तियां करते हैं तब हार कर वह अपने हिस्से पर दवा कर देती है तिसपर लाज और कुल मर्य्यादा का ख्याल करके वह स्वयं अदालत नहीं जाती बल्कि वकीलों से मुकद्दमा में पैरवी करवा लेती है और जो मूर्ख हैं वे बिनती करना कौन कहै उलटी गाली गलौज करने लगती

हैं और लाज शर्म को छोड़ कर स्वयं अदालत चढ़ जाती हैं। बहिन! विद्या पढ़ी स्त्री तो चाहे एक बार अदालत न करे क्योंकि उसे संतोष उत्पन्न हो जाता है परन्तु मूर्खा तो बात बात में रड़ओ पुतओ करने लगती है। अब आपही बताइये कि जितनी बात मैंने आपको बताई हैं वे ठीक हैं या नहीं?"

जिठानी—"हां बहिन! जितनी बातें तुमने कही हैं वे सब कांटे को तुली कही हैं किन्तु एक बात मेरे मन में और उत्पन्न हो आई सो भी मैं जानती हूं कि वह केवल मेरी मूर्खता ही जान पड़ती है। तथापि पूंछने की इच्छा होती है। यह जो तुमने कहा कि विद्या अपने पति से पढ़ ले परन्तु पति से पढ़ना तो अनुचित है, क्योंकि जिससे विद्या पढ़ी जाती है उसे गुरू के समान मानना चाहिये इसलिये पति भी उसका गुरू हो जायगा?"

कृष्णा—यह तुम्हारा भ्रम है, क्योंकि गुरू पूज्य को कहते हैं सो स्त्री का पति से बढ़कर पूजनीय और त्रैलोक्य में कोई नहीं है। जैसे गुरू को तन मन धन सभी अर्पण कर दिये जाते हैं वैसे ही पति को भी स्त्री सर्वस्व अर्पण कर देती है। सो स्त्री तन मन धन सिवाय अपने पति के और दूसरे को नहीं अर्पण कर सकती। उसका कारण यह है कि दूसरे को अर्पण करने से उसका पातिव्रत धर्म नष्ट हो जाय इस लिये यह पातिव्रत धर्म रूपी अमूल्य रत्न पति को ही पाने का अधिकार है दूसरे को नहीं। शास्त्र में भी कहा हैं—

"गुरुरग्निर्द्विजातीनां वर्णानां ब्राह्मणो गुरुः।
पतिरेकोगुरु स्त्रीणां सर्वस्याभ्यागतो गुरुः॥

द्विजातियों का गुरू अग्नि है और वर्णो का गुरू ब्राह्मण है, और स्त्री का गुरू केवल पति है, तथा अभ्यागत सब का गुरू है। इसलिये स्त्री का गुरू ते। पति अवश्यमेव है फिर पढ़ने से यदि गुरू माना जाय ते। उसमे हानि ही क्या है। शास्त्र की आज्ञा के अनुसार पति से पढने में कोई दोष नहीं है और आज कल के जो रिवाजी गुरु है उनसे अपमान और निन्दा के अतिरिक्त और कुछ लाभ नही होता है। इसी कारण पति से जो स्त्री विद्या पढती है उसको संसार में कभी निन्दा नहीं होती और थोड़े ही दिन में पूर्ण विद्यावती हो जाती है, जिससे अपने धर्म को वह अच्छी प्रकार जान जाती है,।

जिठानी—बहिन! तुम्हारी बातें सब मेरे हृदय में पारस की तरह बैठ गई और भी इच्छा होती है कि कुछ पुछूं, परन्तु देरी हो गई है अब कल आऊंगी तब आपसे और पूछूंगी-आज अब आज्ञा दो?

कृष्णा—जाने को कैसे कहूं। (उपरान्त दर्वाजे तक उन्हें पहु-चाने कृष्णा आदि सब आईं।) तब जिठानी ने कहा अब बैठो इतना कह कर मनोहर दास की स्त्री अपने घर चली गई।
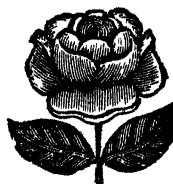
एकादश परिच्छेद

दूसरे दिन मनोहरदास की स्त्री ने अपने पति से वे समस्त बातें कहीं जो कि कृष्णा के और उसके बीच हुई थीं जिन्हें सुनकर मनोहरदास ने कहा—तुम्हीं देखो, उसकी प्रशंसा सारी बिरादरी भर मे होती है। वह ऐसी गुणवती है कि उसने अपने हाथ की कारीगरी से दो तीन हज़ार रुपये सेविङ्ग बेङ्क में एकत्रित किये थे जिससे उसने अपने पति को कुंजगली में बनारसी मालकी दूकान खोलदी है आज दिन ईश्वर की कृपा से दो तीन लाख की सम्पदा कोठी में है। देखो रामलाल जी का प्रथम कैसा बिरादरी में नाम था फिर विचारे गदर में जो बिगड़े सो फिर नहीं सभल सके। जब से कृष्णा विवाहित होकर घर में आयी तब से इस घर की काया पलट गयी। कृष्णा मानो साक्षात् लक्ष्मी होकर इस घर में आयी है। देखो उसने अपनी ननद मुन्नी को कैसी गृह सम्बन्धी उत्तम शिक्षा दी है जिसकी बड़ाई मुन्नी के ससुरार वाले किया करते हैं। कृष्णा का नाम जो सुनता है वही उसकी बड़ाई करने लगता है यहां तक कि देखो तुम्हीं उसकी बड़ाई कर रही हो।

स्त्री—अजी! कल जब मै वहां गई और उससे बातें हुईं तब से मेरी न जाने क्यों उस पर भक्ति होरही है। जितनी बातें उसने मुझे सुनाई हैं वे सब अमूल्य हैं। यदि तुम कहो तो रोज मैं उससे मिल आया करूँ और कुछ पढ़ा करूं क्योंकि गृहस्थी की कितनी

बातों को मैं नहीं जानती हू वे सब कृष्णा से मुझे मालूम हो जायंगी, क्योंकि वह गृह प्रबन्ध मे बड़ी चतुर है।

मनोहरदास—आज मेरे धन्य भाग हैं जो तुमको गृह की तरफ ख्याल हुआ है। मैं खुशी से तुम्हें कृष्णा के घर जाने को कहता हू। उस दिन मैं अपने को परम भाग्य शाली समझूंगा जिस दिन तुम गृह प्रबन्ध में पूर्णज्ञान लाभ करोगी।

स्त्री—परमेश्वर की कृपा होगी तो बहुत जल्दी सब बातें मालूम हो जायंगी क्योंकि कृष्णा जिस बात को कहती है उसे ऐसा समझाय कर कहती है कि वह सब हृदय में बैठ जाती है। अच्छा अब मैं जाती हू।

इतना कहकर मनोहरदास की स्त्री अपने साथ में कहारिन लेकर कृष्णा के घर की ओर चल दी। उस समय धूप इतनी तेज़ थी कि धरती पर पैर जले जाते थे परन्तु उसका ख्याल न करके रास्ते के किनारे किनारे चलकर थोड़ी देर मे वे दोनो स्त्रियां कृष्णा के घर की सॉकल खड़काने लगां जिसे सुनकर कृष्णा ने ऊपर से पहिले देख लिया। जब देखा कि यह तो मनोहरदास की स्त्री हैं तब नीचे उतरकर किवाड़ खोले और आदर के साथ अपने कमरे में लिवा गई। वहां जाकर उनको चादर कृष्णा ने अपने हाथ से उतारी और आसन पर बैठ कर पंखा झलने लगी और बोली—जिठानी जी ऐसी कड़ी धूप मे न निकला करो। नहीं तो किसी दिन लू लग जाने का डर है।

इतने में जो कहारिन मनोहरदास की स्त्री के साथ आई थी वह बोली 'बहू जी मैं जाती हूं क्योंकि कई घर को अबही

धन्धा करना बाकी है । बहू ने कहा जा! पर सन्ध्या को लिवाने आजाइयो ! वह बोली, भला ।

इसके उपरान्त थोड़ी देर तक इधर उधर की बात होती रही । पश्चात् कृष्णा ने चम्पा से कुछ इशारा किया जिसे वह तुरन्त समझ गई और वहां से चली गई । थोड़ी देर में एक रकाबी में दो चार प्रकार के पकवान और आंवले का मुरब्बा रक्खे एक हाथ में एक गिलास पानी लेकर वहां आ गई । तब कृष्णा ने कहा,—चलो दीदी ! ज़रा सा जल पीलो ।

जिठानी,--नहीं बहिन! जल तो मैं घर से पीकर चली आ रही हूं ।

कृष्णा,--अच्छा तो और थोडा सा पीलो, देखो तो सही तुम्हारी देवरानी ने कैसी चीजें बनाई हैं ।

जिठानी,—बहिन ? तुम साक्षात् लक्ष्मी हो फिर तुम्हारे हाथ की चीजें सुन्दर क्यों न बनेगी !

कृष्णा,—दीदी ? ये मेरी बनाई नहीं हैं-ये सब चीजें चम्पा और चमेली ने ही बनाई हैं इसीसे आपको भी उसका स्वाद चखाने ले आयी हैं ।

जिठानी--तब तो बिना भूख के भूख लग जायगी देखें तो कैसी चीज़ें तुम लोगों ने बनाई हैं ।

इतना कह कर रकाबी के सामने बैठ गई और पहिले तो थाली परोसने की रीति देखकर तारीफ़ करने लगी । रकाबी में सब बीस चीज़ें थीं-उनके क्रम से नाम ये थे-आलू के समोसे, मसाले के समोसे, खोया की गुझियां, खस्ता कचौड़ी २ मूंग के लड्डू २ बेसन के लड्डू २ निमकीन, मठरी २ केसरिया बरफी २ आंवले का मुरब्बा २ पिस्ता की बरफी दो । कैसे सजाय के यह सब चीजें रक्खी थीं कि मनुष्य थोड़ी देर उसको

शोभा ही देखते रहे फिर बाद को भोजन करे। मनोहर दास की स्त्री की भी वही दशा हुई। जब बहुत देरी उन्हें थाली के सामने बैठे हो गई तब कृष्णा ने कहा दीदी आप थाली में क्या देखती हैं! कुछ गलती तो नहीं हो गई। जिठानी ने कहा,—बहिन! मैं यह देखती हूं कि देखो यह थाली कैसी सुन्दरता से सजाई गई है पहिले इसकी सजावट ही देख कर मन भर गया अब भोजन कौन करे!

कृष्णा,—दीदी! अभी यह अबोध है जरूर कोई गलती हुई। आपके आशीर्वाद से कुछ दिन मे पक्की हो जायगी अच्छा अब आप भोजन तो करें।

निदान मनोहरदास की स्त्री ने भोजन किया। दो चार ही चीजें खाई थीं कि उनका मन भर गया बड़ी मुश्किल से उन्होंने भोजन किया और हर एक चीज़ की अत्यन्त बड़ाई की और कहा जब अभी से हाथ में इतना स्वाद है तो आगे और भी अधिक होगा।

इसके उपरान्त हाथ धुलवाये फिर पान बीड़ा लेकर उसी आसन पर सब बैठ गईं इधर चमेली वह थाली उठाकर नीचे पनारे के पास रख आई। जहां कि जूठे बासन मांजने के लिये धरे जाते है। सब जनो यानी मनोहर दास की बहू, कृष्णा, चम्पा और चमेली एकत्र बैठ कर यों बात चीत करने लगीं।

म० दा० की स्त्री—बहिन! ये सब चीजें क्या सत्य ही इन लोगों ने बनाई हैं? मेरी समझ में तो सब चीजें बाज़ार की बनी दिखाती हैं।

कृष्णा—नहीं, दीदी? यह बाज़ार की बनी नहीं हैं, क्योंकि तुम्हारे देवर और ससुरजी बाज़ार की बनी कोई

चीज़ नहीं खाते हैं। इसलिये उनके जल पीने को यह सब घर पर बना है और इन्हीं दोनों तुम्हारी दिवरानियों ने बनाया है।

जिठानी—बहिन तब तो इन दोनों के हाथ पाक क्रिया में बहुत ठीक हैं देखो हरएक चीज़ कैसी स्वाद और साफ़ बनी है कि जिसकी मैं क्या प्रशंसा करूं।

कृष्णा—तुम्हारा कहना ठीक है, लेकिन अभी यह बहुत अनजान हैं इसी प्रकार करते करते इन लोगों का हाथ बहुत संभल जायगा तब आप प्रशंसा करना अभी तो नाहक ही आप इतनी बड़ाई करती हो।

जिठानी—बहिन! मैं तो इतना भी नहीं जानती फिर क्यों न बड़ाई करूं! और आज तुमसे इसी विषय की चर्चा भी सुना चाहती हूं।

कृष्णा—दीदी! भला मैं पाक शास्त्र क्या जानूं जो तुम्हें उसकी चर्चा सुनाऊं। यह विद्या अत्यन्त कठिन है परन्तु सीखनेवाले को कुछ भी कठिन नहीं है जो शिक्षक अच्छा मिले।

जिठानी—भला यह मैं कैसे मान लूं कि तुम कुछ नहीं जानती। तुम उत्तम गुणों से भरी सुशिक्षिता माता की कन्या हो। दूसरे सास भी तुम्हारी कुछ विद्या में कम नहीं थीं उन की भी थोड़ी बहुत शिक्षा पाई है तीसरे तुम स्वयं विद्यावती और गुणवती हो। तुम न जानोगी तो क्या मैं बिना पढ़ी लिखी जानूंगी!

कृष्णा—दीदी! आपका कहना ठीक है। मैंने माता और सासुजी का उपदेश अवश्य पाया है और स्वयं भी कुछ विद्याके प्रभाव से कुछ शास्त्र को देखा है। एवं

भला अथवा बुरा जो कुछ मुझे मालूम है वह मैं आपको सुनाती हूं ध्यान देकर सुनो।

मनुष्य को यह समझना चाहिये कि आहार ही जीवके स्वच्छन्द सुख का मूल है। इसीसे [आहार से] वर्ण बल तेज और सब प्रकार के मानसिक व्यापार आदि को सहायता प्राप्त होती है यहां तक कि जीवन पर्यन्त इसी आहार के आधीन मनुष्य है। इसीलिये इस आहार को सुन्दर स्वच्छ सुस्वाद और पौष्टिक बना कर भोजन करना उचित है। इस प्रकार आहार बनाने का भार गृहस्थों मे स्त्रियों के ऊपर ही निर्भर है। परन्तु दीदी! आज दुःख का विषय है कि आज दिन संसार में स्त्रियां इस विद्या मे सौ स्त्रियों में दस स्त्रियां बड़ी मुशाकल से पूर्ण रीति से जानकार निकलेंगी। इसका कारण केवल अविद्या है।

स्त्रियों को यह न सोचना चाहिये कि, हम धनवती हैं रसोई बनाने को एक ब्राह्मणी रख लेंगी। क्या आगे की स्त्रियां हम लोगों से कम धनवती थीं? इसे भी जाने दो देखो द्रौपदी राज-रानी होकर और राज-कन्या होकर भी अपने हाथ से रसोई बनाती रही, यह उसके पक्ष में सामान्य गौरव की बात नहीं थी।

आहार बनाने की प्रणाली में खाने के सब पदार्थों को चार प्रकार से विभक्त किया है चव्य, च्यूष्य, लेह और पेय। जो वस्तु दांतों से चबा के खाई जाती है उसे चव्य कहते है जो चूस कर खाई जाती है उसे च्यूष्य कहते हैं जो जीभ से चाट कर खाई जाती है उसे लेह्य कहते हैं और जो पीने में आती है उसे पेय कहते हैं। इन चारों को स्वादिष्ट बनाने के अभिप्राय से इन्हें छः दर्जों में बांटा है:—अम्ल, मधुर

क्षार तिक्त कटु और कषाय। इन छहों को अमिश्र रस कहते हैं। इसके उपरान्त इन्हीं छहों के संयोग से अनेक तरह के स्वादिष्ट रस उत्पन्न होते है। सूपशास्त्र [पाक शास्त्र] में ६३ प्रकार के मिश्र रस लिखे गये हैं उन सबों के नाम यहा पर अनावश्यक हैं क्योंकि गृहस्थी में उन सबों की आवश्यकता कम पड़ती है। जो कि स्त्रियों को जानना आवश्यक है वही मैं तुम्हें यहां पहिले बता चुकी हूं। अब मैं इन बखेड़ों को छोड़ कर तुम्हें गृहस्थी सम्बन्धी बातें बताती हूं उसे ध्यान देकर सुनों।

देखो ससार में समस्त गृहस्थी के घर पुरुषों का जीवन आहार पर ही निर्भर है। दूसरे आहार ही संसार में आधा सुख है फिर मूर्ख स्त्रियां यह नही सोचतीं कि रुपये में चौदह आना जो मनुष्यों का शरीर क्षीण दिखाई पडता है उस की जड हमी है, एवं हमारी ही ग़लती से पुरुषों की यह दशा होती जाती है। कारण यह है कि कितनीही स्त्रियां आहार [रसोई] बनाने को सामान्य कर्म समझ कर घृणा करती हैं; तथा ब्राह्मणियों पर छोड़ देती हैं। उन्हीं को आलसी कह कर घर के हितैषी लोग धिक्कारा करते हैं।

जिठानी जी! आप ज़रासा ध्यान पूर्वक विचार करो कि रसोई दूसरे के हाथ से बनवाकर भोजन कराना उत्तम है अथवा बुरा है! देखो ज्यादा करके यह भार माता के ऊपर है उसके बाद स्त्री तथा बहिन-आदि कुटुम्बीय स्त्री को छोड़ कर दूसरे के हाथ में यह भार सौंपना उपयुक्त नहीं है दूसरे के हाथ मे यह कार्य रहने से कभी कभी बड़ी भारी हानि उठानी पडती है। नित्य प्रति जो हानि होती है उसकी तो गिनती ही नहीं। इसे भी जाने दो दूसरे के हाथ में जब तुमने रसोई सौंपदी तब

तुम तो उस काम को बिलकुल भूल गई फिर। कदाचित कहीं नातेदारी में कुछ काम पड जाय तब कितना नीचा देखना पड़ता है। इसलिये स्त्रियों को चाहिये कि भूल कर भी रसोई बनाना और परोसना दूसरे के हाथ में कभी न सौंपें। क्योंकि पति और पुत्र आदि को अपने हाथ से रसोई बनाकर खिलाने से उनका मन तृप्त होता है, जो स्त्री ऐसा नही समझती उसके पक्ष में इससे बड़ा अपमान दिलानेवाली दूसरी वस्तु नहीं है तथा उस घर में सुख की आशा कम पाई जाती है।

जो सुख अपने हाथ से रसोई बनाकर और पति आदि कुटुम्बीय मनुष्य को खिलाने में अनुभव होता है वह दूसरे के हाथ से नही हो सकता। अभी भी सुशिक्षित स्त्रियां कितनी ही बड़े घरों में जो बिवाहादि कार्य्यों में अपने हाथ से पाकादि क्रिया करके आगन्तुक मनुष्यों के तृप्त दायक भोजन बनाकर उन्हें भोजन कराती हैं जब वे सब उन पदार्थों से तृप्त हो जाते हैं तब अपने को कृतार्थ समझती हैं। यह उन लोगों के साधारण नियम हैं उन लोगों को इस बात की बड़ी लालसा रहती है कि किस वस्तु को बनावें जिसमें इनका मन प्रसन्न हो! परन्तु कितनी ही तो तुम्हें दिखाई पडी होंगी कि दूसरे के लिये करके प्रसन्न करना तो दूर रहा अपने पति पुत्र को ही नहीं करके खिला सकती हैं। भला तुम्हीं बताओ कि स्त्री के पक्ष में इससे बढ़कर निन्द्य और कोई वस्तु है?

जिठानी—बहिन इससे बढ़कर और बुरी क्या बात होगी। जो स्त्री अपने पति पुत्र कोही न खवा सकी तो और क्या करैगी।

कृष्णा,—देखो जिठानी जी! जिस स्त्री को यह अभिलाषा हो कि मैं पूरी सुपाचिका [सुन्दर रसोई करने वाली] बन

जाऊं तो उसे पहिले यह विचार लेना चाहिये कि कौन वस्तु का क्या गुण है और किस २ वस्तु के मिलाने से कौन कौन स्वाद उत्पन्न होंगे अथवा बलकारक होगा, फिर यह भी उसे अच्छी प्रकार जान लेना चाहिये कि किस २ चीज़ के मिलने से शरीर को हानि कारक होगा। तथा विष का ऐसा गुण हो जाता है इतनी बातों का जानना परम आवश्यक है। पाक शास्त्र विषयक शिक्षा माता और सासू जी से मैंने थोडी बहुत भली प्रकार समझ ली है मैंने उनसे पूंछा था कि यह सब विषय किस पुस्तक में हैं तब उन्हों ने मुझे बताया था कि सूपशास्त्र आदि अनेक पुस्तकें हैं। उन्हें देखने से तुम्हें आपही इनके गुण मालूम हो जांयगे। जिस प्रकार मुझ से बना मैंने इस विषय में अपने को पूर्ण रीति से जानकार बनालिया।

स्त्रियों को उचित है कि जिस प्रकार से बने उस प्रकार से रसोई बनाने की यह क्रिया जान लें उपरान्त रसोई बनाने में हाथ देवें। जिस चीज को नहीं जानें उस चीज को दूसरे से पूछलें। पूंछते वक्त अभिमान न करें। जो अभिमान चित्त में करोगी तो फिर न पूछ सकोगी और यदि तुमने अपना सब अपमान सहन करके इस विषय को जान लिया तो परम गुणवती बन जाओगी, नहीं तो वही कहावत हो जाती है कि "पका न जाने जी, तो क्या करैगा घी।" इस लिये प्रथम सब बात जानना आवश्यक है। देखो कोई कोई चीज जितनी पकाई जाती है उतनी स्वादिष्ट होती है और कोई २ चीज मात्रा से ज्यादा तथा कमती पकाई गई तो अस्वाद हो जाती है इसलिये अपने हाथ से रसोई करे, तथा दूसरे को करते देखे

तब रन्धन क्रिया आती है और आप से नहीं आतो। यहां पर दो चार बातें मैं तुम्हें मुख्य बताती हूं ध्यान देकर सुनों यदि तुम ध्यान दिये रहोगी तो तुम्हें बहुत लाभ होगा।

(१) भोजन का प्रथम उद्देश्य यह है कि, क्षुधा की निवृत्ति होना और शरीरको पुष्टि साधन होना। जो जो वस्तु बलकारक और स्वास्थ्यकर भोजन करने के पदार्थों में हैं उन्हीं द्रव्यों को संग्रह करके रसोई बनाना श्रेय है। अतएव कौन २ चीज़ बलकारक है तथा स्वास्थ्य कर है प्रथम यही गृहणी को जान लेना चाहिये।

(२) शारीरिक अवस्था तथा वयस की विभिन्नता के अनुसार एक मनुष्य को जो वस्तु स्वास्थ्य कर है, दूसरे के पक्ष मे वही वस्तु अत्यन्त पीडा कारक हो सकती है। युवा-वस्था वाले सबल मनुष्य के पक्ष में जो पथ्य वस्तु है, वही रोगी और बालक को कुपथ्य हो सकती है। इसलिये स्त्री को उचित है कि अपने परिवार के जितने प्राणी हैं उन सब के बल अवस्था और शारीरिक अवस्था पर ध्यान देकर यथा रीति उपयुक्त भोजन बनाना और खिलाना चाहिये।

(३) जीभ को तृप्ति करने के लिये भोजन बनाना यह दूसरा उद्देश्य है। स्वास्थ्यकर और बलकारक द्रव्य किस प्रकार से बनाकर भोजन करना, जिस से शरीर की पुष्टता होवे, यही एक प्रधान उद्देश्य रसोई बनाने का है ईश्वर की इच्छा से ही जीभ को इस प्रकार स्वाद; गृहण करने की शक्ति नहीं होती है, किन्तु द्रव्य का नाना प्रकार की क्रिया से बनाने से ही उसे स्वाद मिलता है। देखो जैसे केवल एक दूध से हो कितनी वस्तु क्रिया द्वारा बनाई जा सकती हैं दूध-मक्खन दही खोवा तथा छेना दूध जो फाड़ कर बनता है। और सिखरन

आदि स्वादिष्ट खाद्य वस्तु तय्यार होती हैं। फिर बुद्धिमान मनुष्य इन्ही दूध से बने खाद्य द्रव्यों से दूसरी वस्तु का संयोग करके भांति भांति के सैकड़ों तरह के पकवानादि बनाते हैं।

(४) भोजन बनाने के समय प्रथम इस बात पर ध्यान देना चाहिये कि, प्रथम जितने द्रव्य हैं उन सबों को अच्छी रीति से खूब बीन पछोर के साफ करले। फिर उन्हें यत्न पूर्वक सचित करके ठिकाने से रक्खे देखो जिस आहार के गुण से ही हम लोगों के प्राण बचते हैं उसी आहार के दोष से सैकड़ों मनुष्य अकाल मृत्यु के मुख में पड़ते हैं। द्रव्य को जैसे सचित करने से कुसमय पर सहारा मिलता है वैसे ही अन्नादिक संचित करने से किसी समय में बड़ा सहारा मिलता है। जब फसल का समय होवे उस समय अन्न आदिक खरीद कर घर में भरदें, जो लाभ उसमें होगा वह प्रति मास खरीदने से नहीं होगा। यदि इकट्ठा अन्न लेने की सामर्थ नहीं हो तब प्रति मास खरीदे किन्तु रोज़ीना कभी न खरीदे। रोज़ का सौदा सिवाय साग भाजी के और वस्तु लेने से सिवाय हानि के लाभ नहीं होता हैं।

(५) रसोई करने के वासन साफ मजे और धुले हुए होना चाहिये। यहां शास्त्र का मत है कि, सुवर्ण पात्र होना चाहिये परन्तु अपने गृहस्थों के घर सोने के पात्र कहा से आवें उसकी जगह मिट्टी का पात्र अच्छा होता है। पाक करने के वासन भीतर से रांगे कलई किये हों तो अच्छा हो नहीं तो पीतल ही के बासन होवें परन्तु उनमें विशेष ध्यान इस बात का रहना चाहिये कि खट्टी चीज. पीतल मे बिगड जाती है वह कलईदार मे ही बनायी जाय तो अच्छा हो। भोजन

करने के लिये (कांसा) का बासन अच्छा है रसेदार तरकारी आदि खाने के लिये रांगे के पात्र तथा पत्थर का पात्र भी उत्तम होता है। औषधि आदि रखने या खाने के लिये चीनी का बासन या कांच का बासन अच्छा है अचार मुरब्बा रखने को मिट्टी या चीनी या कांच के पात्र उत्तम माने गये हैं।

(६) भोजन और वस्त्र के विषय मे मनुष्यों की भिन्न भिन्न रुचि होती है। एक मनुष्य जिस चीज़ को उत्तम और सुन्दर स्वाद से अति आग्रह से भोजन करता है, दूसरा आदमी उसी चीज़ को खाने की कौन कहे उसे छूने मे भी घृणा करता है। इसी पर कहावत है कि "अपरुचि भोजन" अर्थात् अपने रुचि के अनुसार भोजन करना। अब यहां पर स्त्रियों को यह विचार करना चाहिये कि हमारे परिवार के लोगों की रुचि किस किस चीज़ पर है कौन चीज़ किसे अच्छी नही लगती। जब इन सब बातों को स्त्री अच्छी तरहसे समझ लेवे गी तब यदि वह रसोई बनावेगी तो वह सबको रुचिकर होगी और सबही सुस्वाद से खायगे किन्तु यहां परोसने की क्रिया उत्तम रीति से काम मे लानी चाहिये।

(७) रसोईघर साफ होना चाहिये भोजन बनाने वाली उत्तम रीति से सब बातें जानती हो। वह सुन्दर पवित्रता के साथ सफा वस्त्र पहिर कर रसोई बनावे जब सब रसोई बन जाय तब भोजन कराने के समय उस वस्त्र को बदल डाले जिससे के रसोई की गई हो तब सबको परोस भोजन करावे।

जिठानी,—"बहिन! यहां पर मैं तुमसे एक बात पूछती हूं कि भला यह किससे बनता है कि जिस धोती से

रसोई बनाई है उस धोती को बदलकर तब परोसे फिर इसमें फायदा ही क्या है जो दूसरी धोती बदल के परोसे ?"

कृष्णा—"दीदी ! इस प्रकार स्त्रियां यद्यपि नहीं करती हैं परन्तु ऐसा करना चाहिये। देखो इसमें यह लाभ है कि जिस धोती को तुमने पहिर कर रसोई बनाई है एक तो वह अकसर फटी और कई जगह सिली हुई होती है जिससे शरीर दिखाता है। दूसरे नित्य प्रति एक धोती से रसोई करने मे उसमें हल्दी घी तेल आदि के दाग पड़ जाते हैं जो कि देखने मे बुरे मालूम देते हैं। तीसरे उसमें उन दागों के कारण एक प्रकार की दुर्गन्ध आने लगती है जो कि परोसने के समय मनुष्यों के चित्त को बिगाड़ देती है। इस लिये दूसरी धोती पहिर कर यदि सब को परोस कर खिलाओगी तो न तुम्हें शरीर दिखाने का डर रहेगा और न उसकी दुर्गन्ध ही लोगों को आवेगी। क्योंकि जिस समय मनुष्य भोजन पर बैठते हैं उस समय अत्यन्त सफाई की जरूरत है यदि सफाई नहीं रहे तो भोजन रूचि से नहीं होता।

(८) स्त्री को उचित है कि समय और दिन के अनुसार अपने घर के मनुष्यों की प्रकृति का विचार कर स्थान और जल के भेद से खाद्य द्रव्यों के गुण विचार कर उसका परिवर्तन तथा हेर फेर रसोई में करती रहे। अथवा किसी दिन कुछ बनावे और किसी दिन कुछ बनावे। इनमें खर्च विशेष नही है केवल क्रिया की उलट पलट से ही भांति २ के भोजन बन जाते हैं।

(९) जैसे शरीर सब उपादान (तेल फुलेल आदि) से सुन्दर सुडौल और बलिष्ट होता है वैसे ही खाद्य द्रव्य के गुण से भी सुन्दर सुस्वाद और उपयोगी बल कारक बनता है, ऐसा ही बनाना भी चाहिये। क्योंकि दिन भर परिश्रम करके जो शरीर निर्बल हो जाता है वह भोजन के द्वारा पुनः अपने घटे हुए बल को पूरा कर लेता है इस लिये भोजन सुस्वाद और पौष्टिक बनाना चाहिये।

(१०) भोजन बनाते समय यह और ध्यान रखना चाहिये कि भोजन ऐसा बनाना चाहिये जो खाने में स्वादिष्ट हो देखने में सुन्दर हो खाने में हलका हो गुण में पुष्टि कारक हो इसके अलावे सबकी रुचि का हो।

(११) भोजन परोसने में भी बड़ी बुद्धिमानी की आवश्यकता है। भोजन परोसते समय यह विचार चाहिये कि इस मनुष्य को कितना परोसने से इसकी तृप्ति होगी। यदि यह विचार नहीं होगा तो या तो कम परोसोगी जिससे वह भूखा रह जायगा या अधिक परोस देवोगी जो पडा रहेगा। वह उस जगह बुद्धिमानी से अनुमान करके ऐसा परोसे कि न तो वह भूखा रहे और न भोजन ख़राब हो। यहां पर तुम यह कहोगी कि भला यह किस तरह जाना जाय कि यह कितना खायगा ! इसका उत्तर यह है जिन्हें नित्य प्रति तुम परोस कर खिलाती हो उनका अन्दाज़ तो मालूम ही है और जो नया मनुष्य घर में आवे उसके लिये आन्दाज़ा बुद्धिमानी से किया जाता है। नहीं तो शास्त्रकारों ने उनका भी प्रमाण इस प्रकार दिया है, कि जिसका शरीर रोगी नहीं है उसके भोजन का प्रमाण इस प्रकार है जिसके शरीर का वज़न १० सेर है उसे दिन रात २४ घण्टे मे आध सेर भोजन मिलना

चाहिये, जिसका २० सेर है उसे २४ घंटे में सेर भर, जिसका ३० सेर वज़न है उसे १॥ सेर, और एक मन वज़नवाले को २ सेर अन्न दिन रात में देना चाहिये। इस प्रकार भी विचार कर सकती हो किन्तु यहां पर तुम यह शंका करोगी कि कितने आदमी वज़न में ड़ेढ़ मन होते हैं और भोजन सेर भरही करते हैं। इसका कारण यह है कि अधिक घी और गह्व पदार्थ उनके भोजन को कम कर देते हैं परन्तु ऐसे मनुष्य बहुत थोड़े देखने मे आवेंगे जो उक्त प्रमाण से न्यूनाधिक पाये जाँयगे यदि ऐसा न हो तो, उनका शरीर बलवान नही होगा इसलिए शास्त्र को झूठा न समझना चाहिये। और परोसते वक्त अपने कपड़े सभाल लेवे जो परोसने के समय खुलकर खाने की चीज़ों में न पड़ें वा तुम्हारा शरीर दिखाई न पड़ जाय। दूसरे जो चीज़ परोसो उसे थाली में सजा कर परोसो, जो थाली में परोसने लायक है वह थाली में परोसो और जो "पेय" यानी रसेदार है उसे छोटी २ रांगे की कटोरी में बराबर परोसे। खीर रबड़ी-सिखरन आदि खाने के लिये छोटे २ चम्मच भी एक एक थाली के पास धर देना चाहिये जिससे उठाकर वे भोजन करैं। परोसते समय घबड़ाये नहीं सावधानी से सब को एक बार परोस कर ख्याल करले कि कोई चीज़ किसी को परोसना भूल तो नहीं गई है। उपरान्त जब सब भोजन करने लगें तब आप सबकी थालियो पर ख्याल रक्खे कि किसे कौन वस्तु चाहिये। बालक को बड़ी सावधानी से परोसे जिसमें वह भूखा न रहै। और न ख़राब ही करे बालक क्या सब ही को वय और बलाबल के अनुसार भोजन परोस के जिमावे। जब सब भोजन कर चुकें तो उनके हाथ धोने का प्रबन्ध कर देवे। उपरान्त पान इलायची मुख शुद्ध के लिये

उनके आगे रक्खे।

पहले अतिथि को भोजन करावे। पुनः घर के बड़े लोगों को फिर वृद्ध स्त्रियों को, बालको को गर्भिणी को भोजन कराके तब अपने भोजन करने बैठे। जो स्त्री इस नियम का पालन करती है उसकी कीर्ति लोगों के मुख से सुनाई पडती है और जो ऐसा न कर विपरीत करती है वह नरक गामिनी होती है और संसार में मनुष्य उसकी निन्दा करते हैं।

सबेरे उठकर स्नान और संध्या से निवृत्त हो रसोई घरमे प्रवेश करै। वहां प्रथम जिस वस्तु के बनाने का बिचार रात्रि को किया है उसके सब सामान एकत्र करके क्रम से रक्खे उपरान्त अग्नि चूल्हे मैं सुलगाय कर फिर सावधानी से पाक करने में हाथ लगावे। इतना ध्यान रहे कि फिर उसे किसी चीज़ के लिए उठना न पड़े यानी चौका में से बाहर लेने न जाना पड़े प्रथम ही सब अपने पास रख लो तब रसोई बनाने मे हाथ लगाओ। जब सब बन जाय तब भोजन करनेवालों को भोजन कराओ उपरान्त आप भोजन करो। फिर सब जूठे बासन धोकर इकट्ठे करदो थोड़ी देर आराम करो फिर उठकर उन्हें साफ़ करो यह नियम रसोई करने और परोसने का जो मुझे मालूम है वह तुम्हें सुना दिया, अब जो कहो वो सुनाऊं?"

उपरोक्त विषय कृष्णा के मुख से सुनकर मनोहरदास की स्त्री बड़ी प्रसन्न हुई और बोली, बहिन! जितनी बातैं तुमने कहीं हैं वह सब मेरे हृदय में बैठ गई।"

द्वादश परिच्छेद

इसके उपरान्त मनोहर दास की स्त्री बोली,—बहिन यदि तुम्हें संतान पालन की शिक्षा मालूम हो तो मुझे सुनाओ।

इस प्रश्न से कृष्णा ने लज्जा से कुछ सिर नीचा कर लिया। तब वे फिर बोलीं,—"इसमें लज्जा की कौन बात है तुम विद्यावती हो सभी बात जानती। हो इसलिये जो कुछ तुम्हें इस विषय में मालूम है वही कहो मैं सुनूंगी।

कृष्णा,—दीदी ? मैं इस बात पर लज्जित हुई कि, अभी मैं एक बच्चे की मां हुई हूं सो सन्तान पालन क्या जानूं किन्तु जब तुम अधिक कह रही हो तो जो कुछ मुझे मालूम है वह तुम्हें सुनाती हूं ध्यान देकर सुनो।

देखो जब सन्तान गर्भ में आती है तभी से उसके सुख दुख की चिन्ता रूपी धारा माता के हृदय में बहने लगती है। अपनी सन्तान के सुख और उन्नति की इच्छा सभी करते हैं किन्तु किस प्रणाली से उसे पालन करना चाहिये या किस प्रकार की क्रिया से उसकी उन्नति होगी या किस विधि से उसका शरीर पुष्ट होगा यह कितनी ही स्त्रियां नही जानतीं इसीसे कितनी ही अपने पुत्र कन्या को सुशिक्षित तो बनाने जाती हैं किन्तु उन्हें ख़राब कर डालती हैं। माता पुत्र और कन्या के दीर्घ जीवी बनाने की ईश्वर से प्रार्थना करती हैं परन्तु

उनके पालन के ऊपर ध्यान न देकर उन्हें अल्पायु कर डालती है। जो माता अपने सन्तान को दीर्घ जीवी बानना चाहती हैं वही अपने दोष से थोड़े ही दिन में बालक को मृत्यु के मुख में डाल देती है यहां तक कि बहुत से बालक सोहर मे ही यमपुर सिधार जाते हैं।

आजकल संसार में देखा जाता है कि रुपये में दस आना बालक माता के दोष ही से मृत्यु के मुख मे चले जा रहे हैं। कारण इसका केवल प्रसूता (जच्चा) सन्तान पालन के विषय को जानती नहीं जिससे ऐसा होता है। माता अपने ही दोष से अपने प्राणाधिक पुत्र को यमालय भेज देती है इस बात को सोचने से नेत्रों में सैं जल निकल पडता है हृदय फट जाता है। परमात्मा की कृपा से जब तुम पुत्रवती कहाना चाहती हो तुम्हें अवश्य उसके लालन पालन की प्रणाली सीख लेना चाहिये। देखो जब सन्तान गर्भ मे आवे तब उसकी शारीरिक उन्नति अवनति प्रसूता (जच्चा) के स्वास्थ्य के ऊपर निर्भर है गर्भावस्था मे माता स्वस्थ और निरोग होनी चाहिये, तब वह स्वस्थ और बलवान पुत्र प्रसव करती है। यदि माता उस समय रोगी और निर्बल होवे तो सन्तान भी वैसीही होवेगी। यही सन्तान अधिक दिन जीवित नही रहती हैं, यदि बच भी जाय तो सदा वह रोगी बनी रहेगी शरीर उसका अत्यन्त क्षीण होगा। इसीलिये गर्भाधान संस्कार में स्त्री पुरुष दोनों को बलवान होना लिखा है। जब तक सन्तान प्रसव न होवे तब तक शरीर के स्वस्थ रखने का प्रयत्न करना रहे।

आजकल जैसी कुछ प्रसूता की रक्षा होती है वह मैं तुम्हें सुनाती हूं। नई दुलहिन जब ईश्वरेच्छा से गर्भवती हुई और

जब मालूम होने लगा और घर के लोगों ने उसे जाना, बस उसी वक्त से उसे इस संसार के सब कामों से अलग कर देते हैं, वह दुलहिन अब एक तृण भी घर का इधर उठा कर नहीं रखने पाती यहाँ तक कि अब बहू आंख की पुतली बन गई। बहू भी फूली न समाने लगी। अतएव अब आलस्य। की सखी बन कर दिन रात सोने लगी, घर की चिन्ता रही नहीं इधर दिन पर दिन उसे प्रसव के समय की दुर्घटना का ध्यान होने लगा जिससे शरीर गलने लगा यहां तक कि भूख घट गई शरीर रोगी हो गया। किसी किसी जगह दिन रात अवि-श्रान्त परिश्रम कर दिन रात जाग गर्भ पतन कर देती हैं। जब नई दुलहिन का शरीर रोगी होगया फिर तुम्हीं बताओ कि सन्तान सबल और दीर्घ जीवी प्रसव कैसे वह कर सकती है।

गर्भावस्था में किस प्रकार चलना चाहिये तथा किस किस नियमानुसार उस समय आहार विहार करै जिससे सब की भावी सन्तानो का मङ्गल हो इस बात को यदि दीदी मैं सविस्तर तुम्हें सुनाऊं तो आज एक बड़ी पुस्तक इस विषय की तय्यार हो जावेगी। इसलिये यहां उसकी चर्चा न करके केवल संतान पालन विषय को ही मैं तुम्हें सुनाती हूं। गर्भावस्था में जैसे प्रसूताके स्वास्थ्य पर सन्तान की शारी-रिक उन्नति निर्भर है जब से बालक भूमि में गिरे और जब तक बालक के दांत न निकसें तब तक माता के दूध ही से उसकी रक्षा होती है यदि किसी कारण से माता के दुग्ध मे अभाव पड़ जाय या दोष आजाय तब उचित है कि उत्तम और स्वास्थ्य जिसका ठीक हो ऐसी दायी का दूध उसे पिलावे नहीं तो बकरी का भी दूध गुण करता है। यदि बकरी

से किसी प्रकार मन अरुचि करै तो अच्छी गऊ के दूध में थोडा जल मिलाकर पिलाये नहीं तो बालक रोगी हो जायगा।

जब बालक के दांत निकल आवें तब उसे अन्न खाने की इच्छा होती है। ये दांत किसी २ बालक के साल ही भर में निकलना आरम्भ हो जाते हैं और तीन वर्ष में सब आजाते हैं। यदि बालक को दो तीन वर्ष तक बराबर अच्छी तरह से दूध पिलाया जाय तो अन्न देने की कोई जरूरत नहीं पड़ती। जब दांत आजांय तब अन्न देना अच्छा है नहीं तो दूध से बढ कर उत्तम, सर्वगुण सम्पन्न खाद्य द्रव्य बालक के पक्ष मे और दूसरा नहीं हैं।

जब बालक चार वर्ष का हो जाय तब दिन मे चार दफ़े उसे खाने को देना चाहिये। इससे अधिक नहीं देवे सो भी इस प्रकार से देवे कि प्रातःकाल जब बालक उठे तब उसे दिशा फिराकर काजर आदि लगाकर थोडा दूध या हलुआ खाने को देवे फिर दस बजे दाल भात रोटी आदि जो रसोई में बनी हो सो खवावे। उपरांत तीसरे पहर जब दो बजे तब फिर कुछ सामान्य मीठा निमकीन आदि खाने को देवे। बाद को सन्ध्या को पूर्णरूप से भोजन करावे क्योंकि रात्रि भर इसी आहार पर वह रहेगा दूध रोटी पूरी आदि खिलाकर फिर उसे शयन करा देवे। इस प्रकार बालक को जब चार वक्त भोजन कराओगी तब उसका शरीर निरोग और बलवान बनेगा। और जो इस नियम को छोड़ कर दिन भर बकरी भेड़ की तरह बालक को खवाती रहती हैं वह बालक रोगी हो जाते हैं उनके पेट निकल आते हैं, कुछ दिन में माता की असावधानी से यमपुर यात्रा कर जाते हैं।

जैसे बड़े मनुष्यों को स्वास्थ्य रक्षा के लिये वायु सेवन की आवश्यकता होती है उससे अधिक बालक को वायु की आवश्यकता है। निर्म्मल और प्रचुर वायु सेवन के अभाव से ही अनेक बालक अकाल मृत्यु के कारण बन जाते हैं हम लोग प्रत्येक मिनिट में ७० से ८० तक श्वास निश्वास (स्वास लेना और छोड़ना) से अपना जीवन धारण किये हैं; परन्तु उसी एक मिनिट में बालक १२० श्वास से १४० तक श्वास लेता है। परन्तु दुःख से कहना पड़ता है कि, अपने लोगों में ऐसी कुप्रथा चला है जो प्रसूति का स्थान ऐसा वायु विहीन स्थान मे निश्चित किया जाता है कि, जहां वायु का अत्यन्त अभाव रहता है। इसे भी जाने दो जब बालक कुछ बडा हो गया तब तक भी उसको वायु सेवन से बंचित ही रखते हैं। इस कुप्रथा से बालक शीघ्र रोगी हो जाते हैं और मृत्यु के ग्रास बन जाते हैं।

बालकों को ऐसे स्थान में सदा रखना चाहिये कि जहां विशुद्ध वायु का सञ्चार होवे तथा बालकों को प्रति दिन संध्या के समय खुली हवा लगे। जल और अन्न के बिना मनुष्य दो तीन दिन तक रह सकता है परन्तु वायु के बिना एक घड़ी भी जीवित नहीं रह सकता। इसलिये सन्तान पालन में विशेष करके वायु सेवन की अधिक आवश्यकता है। शरीर रक्षार्थ वायु के समान और विशुद्ध जल के समान और दूसरी वस्तु नहीं है। निर्म्मल जल के अन्न का परिपाक होता है और शक्ति की वृद्धि होती है, जब शरीर में जलीय पदार्थ की कमी होती है तभी ताप (गर्मी) की वृद्धि होती है। इसी से मनुष्य की स्वास्थ्य रक्षा होती है। जल से स्नान करना भी उत्तम माना गया है, बालक जब तक छोटा रहे तक तक किञ्चित् उष्ण

जल से इसे स्नान करावे। उपरान्त जब कुछ शरीर मे बल उसके आजाय तब शीतल जल से स्नान करावे। इससे उसके शरीर में बल और स्फूर्ति की वृद्धि होती है तथा स्वास्थ्य ठीक रहता हैं, जितने रोमकूप है वे भी साफ रहते हैं जिससे कोई विकार उसे नहीं होता है और पसीने के साथ में शरीर का दूषित विकार सब निकल जाता है।

सर्दी और गर्मी से बचाने के लिये वस्त्र उसे पहिराना चाहिये और वह मौसिम के अनुसार होना चाहिये। किन्तु देखा जाता है कि स्त्रियां उसके विपरीत करती हैं जाड़े में भी पतला कपडा उसके बदन पर पहिराये रहती हैं। नहीं, बड़ी, सावधानी से बालक को रक्षित रखना उचित है। बालक के कपड़े अधिक मैले न होने चाहियें. सदा उसे मल मूत्र से सने कपडों से बचाना और समयानुकूल वस्त्र पहिराते रहना। मेरे कहने का मतलब उलटा समझ कर यह भी न करना कि बालक मल मूत्र जिस कपड़े में दो चार दिन तक न करै तो उसी का सफा समझ कर उसके शरीर मे लपेटे रहे। नहीं, चाहे मल मूत्र बालक करै वा न करै उसके कपड़े बराबर दूसरे तीसरे दिन धो दिया करैं क्योंकि मैले कपड़े से भी बालक के रोग उत्पन्न होने का डर रहता है। जो स्त्रियां ऐसा नही करती हैं तथा आलस्य में बालको को उसी मलीन वस्त्र से लपेटे रखती हैं वे अपनी प्रिय सन्तान को मानो अपने हाथ से यमालय भेजने की तयारी करा करती हैं। बालक का बिछौना भी दूसरे तीसरे दिन घाम मे सुखा देवे और साफ़ कपड़े से उसे सदा ढांप कर रक्खे।

सन्तान किसी प्रकार कोई बीमारी मे पड़ जाती है तो उस वक्त माता स्थिर होकर बैठी रहती है, उस वक्त

बालक के आरोग्य करने का प्रयत्न नहीं कर सकती सो नहीं यहां तक कि अपने प्राण तक दे देने मे माता हिचकती नहीं। किन्तु उस रोग के बिना समझे ऊटपटांग औषधि करने लगती हैं जिससे रोग बालक का बढ़ जाता है।यह केवल माता के अशिक्षित होने का कारण यदि शिक्षित होवें तो जैसे ही बालक के रोग उत्पन्न हुआ था वैसे ही उसका प्रयत्न कर बालक के रोग से मुक्त कर देती । विशेष करके सन्तान के रोगी बनाने मे माता ही का दोष पाया जाता है।

शास्त्र में लिखा है कि, विरक्त तथा क्रोधान्वित वा अन्य-मनस्क होकर बालक के अपना दूध न पिलावे ऐसा करने से उसे अजीर्ण रोग उत्पन्न हो जाता है। जब बालक भूखा रोता है तब तो उसे दूध नहीं पिलाती और जब वह खेलता है और उसका पेट भरा है तब जबरदस्ती उसे दूध पिलाती हैं, वही बालक रोगी हो जाते हैं। छोटे बालकों के दिन में ८, १० वार स्तन पिलाने की आवश्यकता है अधिक नहीं। इस नियम से जो स्त्री चलती है उसके बालक निरोग और सबल होते हैं। जो इसके विपरीत करती हैं वही अपने बालक को दुर्बल और रोगी बना डालती है। चतुर सुशिक्षित स्त्रियां अपने बालक के स्तन पिलाने के लिये दिन के विभाग कर लेती हैं कि इतनी २ देर में इसे स्तन पान कराना चाहिये। कितने स्थल में देखने में आता है कि बालक जब रोता है तभी उसे दूध मिलता है नहीं तो नहीं। इसी पर कहनावत है कि, "रोता बालक पावे दूध, हंसता बालक बनै सपूत"। यथार्थ में जो बालक अधिक रोते हैं वे अधिक दूध पाते हैं, और जो हंसते रहते हैं उन्हें जल्दी कोई दूध नहीं पिलाता है। इन दोनों

ही की अवस्था खराब हो जाती है एक तो रोगी हो जाता है और दूसरा क्षीण निर्बल हो जाता है।

बालक जब रोवे तब माता को उचित है कि विचार करै कि बालक क्यों रोता है। बिना समझे दूध न पिलावे किन्तु ऐसा न करके अज्ञानी माता जब बालक रोया और चुप कराने का मानो वही मूल मन्त्र उनके पास है। नहीं, ऐसा न करके उसके रोने का कारण पहले समझे। शायद उसके पेट में दर्द होता है वा कोई पीडा से रोता है यह सब बात समझ कर उसका उपाय करै। यदि उसके पेट में अजीर्ण के कारण दर्द होता है और तुमने और उसे दूध पिलाय दिया तो तुम्ही बताओ उसे लाभ हुआ कि हानि? क्योंकि, क्षुधा को छोड कर और कारण से भी बालक रो सकता है केवल भूख ही से नहीं रोता। दीदी! इन सब बातों पर ध्यान देकर सन्तान का पालन करै। बालक अपने रोग को मुख से बताते हैं जो बोलना नहीं जानते वे इशारे से अपना रोग बताते है। कितने ही जो अत्यन्त छोटे होते हैं वे नहीं बता सकते हैं केवल रोने के सिवायऔर कुछ नहीं कह सकते। उस वक्त बुद्धिमती सुशिक्षित माता अपने चित्त को धीरज रख कर उसकी पीड़ा के जानने का प्रयत्न करै। बुद्धिमती माता समझ लेती है कि इसको यह दुःख है।

बालक को सामान्य रूप से कफ़, खांसी, पेटका दर्द साधारण ज्वर उत्पन्न हो जाते हैं, किन्तु उनका उपाय तत्काल करने से तुरन्त बालक अच्छा हो जाता है। परन्तु ऐसा न करके आलस्य मे मूर्ख माताए' पड़ी रहती हैं। क्रमसे सामान्यरोग की वृद्धि हो जाती है तब उन्हें सूझता है। यह नहीं तुम विचार करती कि बालक की सामर्थ्य कितनी है, वह थोड़े से ही रोग

में अत्यन्त दुःखी हो जाता है यहां तक कि सामान्य रोग में वह मृत तुल्य होजाता है उसे मूढ़ माता नहीं समझती। इसी से मैं कहती हूं कि बालक को चाहे सामान्य रोग हो किन्तु तुम उसकी औषधि तुरन्त करो आलस्य कभी न करो।

बालक को अधिक खिलाने का दोष भी हर एक स्त्री में है। किसीने कहा है "मूर्ख मित्र से ज्ञानी शत्रु अच्छा है। "इसीलिये मूर्ख माता प्रेम में अपने पुत्र को समय कुसमय खूब खिला२ कर रोगी बना देती है। उसका मुख्य विचार यह है कि बालक को जितना खिलाया जायगा उतना ही वह बलवान होवेगा विशेषकर के भोजन कराना ही उनका स्नेह करना है यदि कोई अच्छी चीज़ आजाय तब मूर्खा यही सोचती है कि किसी प्रकार सब मेरे बालक के पेट में चली जाय। चाहे अन्त में वह हानि बालक को पहुंचावे परन्तु उसको इसकी कुछ चिन्ता नहीं है। उन्हें उसे खिलाने में ही सुख है। जब बालक अधिक खाने से रोगी होकर गिर पडा तब वैद्य ने उसकी नाडी देखकर मूर्खा माता से कहा,—"देखो हम दवा देते हैं किन्त हम जब तक न कहें इसे कुछ खाने को न देना। यह कह कर वैद्य दवा देकर चले गये. जब बालक बादी की भूख मे मूर्खा माता से खाने को मांगने लगा और रोने लगा तब मूर्खा माता ने दया से तुरन्त उसे घर में चोरी से कुछ मीठा आदि लाकर खिलादिया। इसी तरह दो चार दिन मे रोग बढ़ गया और वह बालक काल का कवर बन गया किन्तु उस मूर्खा को अपने कर्तव्य पर विचार न आया। इसलिये दीदी? बालक को अधिक भोजन न करावे। उसकोबलाबल का विचार कर खाने को देवे चाहे वह कितना ही रोवे किन्तु अधिक भोजन न करावे।

सन्तान के शारीरिक स्वास्थ्य साधन के लिये तथा शक्ति बढाने के लिये व्यायाम कसरत आदि की भी आवश्यकता है। वैद्यकशास्त्र मे व्यायाम के विषय मे बहुत कुछ लिखा हैं उनमें से दोचार बातें यहाँ मैं तुम्हें सुनाती हूं तुम ध्यान से सुनोः-वैद्यक में लिखा है कि आत्माका हित चाहनेवाले मनुष्योंको उचित है कि ऋतुमे शक्ति के अनुसार कसरत करें। कसरत द्वारा शरीर में चञ्चलता, कार्यदक्षता, धैर्य और दुःख सहने की शक्ति उत्पन्न होती है, दोषका क्षय होता है और अग्निकी वृद्धि होती है जिससे पाचन शक्ति बढती है। जिस की कसरत ठीक होती है उसका शत्रु कुछ नहीं बिगाड सकते हैं जैसे गरुड़का सर्प कुछ नही कर सकता वैसेही कसरत करने वाले मनुष्य को रोग नहीं आता है। छोटी अवस्था में बालक को कसरत कराने की आवश्यकता नहीं पडती क्योंकि वह स्वयं उस समय हाथ पांव शय्या पर पड़ा फेंकता रहता है। जब बालक चलने फिरने लगे उस समय कसरत की आवश्यकता है जब बालक पांच छ वर्ष का होजाय तब उसे कसरत की शिक्षा देना कर्तव्य है। किन्तु दुःख का विषय है कि अनेक स्थान में माता पिता बालक को अपनी इच्छानुसार दौड़ने खेलने नही देते। बालकों को घर मे पढने मे लगाये रखते हैं और जब घर आया तब बाहर नहीं खेलने देते हैं यदि वह बाहर जाने के लिये रोवे तो उसे मारने को धमकाते हैं और कहते है नीचों के लडकों की तरह इधर उधर दौडोगे तो घर में घुसने नहीं देंगे और खाने को नहीं पाओगे। बिचारे घर मे आये तो घरमें बैठे रहे और पढ़ने गये तो वहां भी बैठे रहे इसीसे बालक का स्वास्थ्य बिगड जाता है। कितने ही कहते हैं कि घाम में खेलोगे तो शरीर काला हो जायगा दौड़ोगे तो

गिरकर पांव हाथ टूट जांयगे यह सब विचार कर बालक को घर से बाहर नहीं होने देते। यह सब अशिक्षा का कारण है। जो माता शिक्षिता हो तब पिता की भी बुद्धि वैसी ही हो जाती है क्योंकि पिता ने भी तो वही उपदेश पाये होंगे जो उनकी माता ने सीख होंगे। इसलिये मुख्य बातें सब माता की शिक्षा पर ही निभर हैं। माता जैसी गुणवती होगी उसकी सन्तान वैसो ही गुणवती होगी।

सन्तान की मानसिक उन्नति साधन की अपेक्षा उन लोगों का शारीरिक स्वास्थ्य विधान और उन्नत्ति साधन की चेष्टा ही माता पिता का प्रथम और प्रधान कतव्य है। नित्य का रोगी सुशिक्षित ज्ञानवान क्षीण शरीर वाली सन्तान की अपेक्षा अशिक्षित मूर्ख पुष्ट शरोर वाला बालक संसार का कार्य अच्छे प्रकार कर सकता है। इसीसे कहा हैं बालक को सबसे पहले पुष्टता पर ध्यान देना चाहिये। कवियों में शिरोमणि कालिदास जी ने कहा है—"शरीरमाद्यं खलुधर्म साधनम्।" अर्थात् शारीरिक धर्म साधन ही प्रधान कतव्य है। अनेक मनुष्य शरीर की ओर ध्यान न देकर केवल उसके पढ़ने लिखने पर ही ध्यान देते हैं।

बालकों के सामान्य २ रोगों की चिकित्सा माता पिता को स्वयं कर लेनी चाहिये। यदि न जानती होवें तो माता को उचित है कि अन्य किसी चतुर धाय से उन औषधियों को पूंछ कर जान लेवे। पहिले की स्त्रियां इन सब बातों में अत्यन्त चतुर होती थीं वे अपने बालकों के साधारण रोग में कभी वैद्यों को अपने घर नहीं बुलवाती थी। किन्तु दुःख का विषय है कि अशिक्षा के कारण आज काल की स्त्रियां बालकों की सहज बीमारी में भी वैद्य डाक्टर बुलवाती हैं और अपने रुपये व्यर्थ

को खर्च करती हैं। आज कल डाकृरी चिकित्सा का प्रचार अधिक तर हो रहा है इससे देश की उन्नति न होकर अवनति होती है उसे यहां प्र यदि मैं कहूं तो एक दूसरी पुस्तक तयार हो जायगी। केवल इतना ही कहती हूं कि डाकृरी औषधि जितनी बनाई जाती हैं उन सब में प्वायज़न [विष] का योग रहता है इसमें ज़रासा सन्देह नहीं है। अतएव उसे सेवन कराने में बड़ी सावधानी की जरूरत होनी चाहिए यदि डाकृरी औषधि की मात्रा न्यूनाधिक हो जाय तथा एक दवा की भूल में दूसरी दवा खिला दी जाय तो रोगी की तुरंत मृत्यु हो जाने में सन्देह नहीं है। यह बात कई जगह सुनने में भी आयी हैं कि उसके घरमें भूल कर माता ने बालक को दूसरी दवा दे दी थी जिससे बालक मर गया।

औषधि की अपेक्षा कितने रोगी सेवा की त्रुटि से ही मृत्यु मुख में चले जाते हैं। दूसरे मूर्ख वैद्यो की दवा करके भी कितने रोगियों की मृत्यु हो गई है, परन्तु यह सब अब दिन पर दिन हटती जाती है। मूर्ख वैद्य अब बहुत कम पाये जाते हैं अब मनुष्यों ने विद्या प्रचार की ओर ध्यान दिया है। इस जगह वैद्य और डाकृरों की चर्चा करना व्यर्थ है केवल अपने बालक की रक्षा सब प्रकार से करना ही माता का कर्तव्य है। रोगी बालक की दवा बड़ी सावधानी से करना, पथ्य उसे समय से और वैद्य के कथनानुसार देवे क्योंकि कुपथ्य भी विषका कार्य्य करता है। यह सब बातो की ओर ध्यान देकर सावधानी से रोगी की सेवा करना।

दीदी ? इस प्रकार अपनी प्रिय सन्तान का पालन करना चाहिये। इस बात का तो पूरा २ ध्यान रखना चाहिये जिसमें बालक का स्वास्थ्य न बिगड़े उसके खाने पीने का, कपड़े

पहिरने का, शरीर सबल बनाने का जिसमें उसके बदन में फुरती उत्पन्न होवे बदन गठा हुआ बने यह प्रयत्न सदा माता पिता को करना कर्तव्य है। जो कुछ मुझे सन्तान पालन के विषय में मालूम था वह अपनी बुद्धि के अनुसार तुम्हें मैंने सुना दिया। अब जो कुछ आज्ञा होवे वह सुनाऊँ ?"

जिठानी—सन्तान पालन तो मैंने सुनकर समझ लिया अब उसकी शिक्षा के विषय में यदि कुछ मालूम होवे तो कुछ उपदेश करो।

कृष्णा—यह प्रश्न तो अत्यन्त कठिन है क्योंकि सन्तान की शिक्षा का विषय समझना वा समझाना दोनों ही कठिन हैं क्योंकि इसीसे उनको समस्त आयु व्यतीत करनी पड़ती है। अच्छा जो कुछ मुझे मालूम है वह भी बताती हूं।
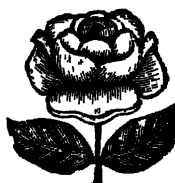
दसवां परिच्छेद

सन्तान के प्रति माता के दो कर्तव्य है। एक तो सन्तान पालन और दूसरा सन्तान की शिक्षा और चरित्र गठन। इन कर्तव्यों में प्रथम कर्तव्य तो तुम्हें अभी सुना चुकी हूं। अब दूसरे कर्तव्य के विषय में जो मुझे मालूम है वह तुम्हें सुनाती हूं! देखो सन्तान की शुभ कामनाओं के लिये माता अनेक प्रकार के कठोर व्रतादि करने में जो शरीर पर कष्ट पड़ते हैं उन्हें सहन कर लेती है किन्तु सन्तान को किसी प्रकार का दुःख नहीं होने देती। इसीलिये शास्त्रकारों ने सन्तान शिक्षा देने का भार माता ऊपर दिया हैं। वही उसके सुख दुःख को देनेवाली है, वह जैसा चाहे तैसा अपने सन्तान को बना सकती है? माता के गुणों से सन्तान चाहे वीर; धर्म्मात्मा, ज्ञानी, दयालु, और सुमार्ग में चलनेवाला होता है, और उसी माता के अवगुणों से कायर क्रूर मूर्ख पापी कुमार्गी होता है। इसलिये जाना जाता है कि माता ही प्रधान है उसी की इच्छा पर सन्तान की शिक्षा निर्भर है, इस जगह निश्चय पाया जाता है कि, माता का सुशिक्षित होना परमावश्यक है. उसी की शिक्षा पर सन्तान की शिक्षा है, वह जैसी गुणवती होगी वैसी ही सन्तान गुणवती होगी।

शास्त्रकारों ने कहा है कि मनुष्य का घर ही प्रधान और प्रथम विद्यालय है, और माता ही उस प्रधान विद्यालय की

प्रधान अध्यापिका है, प्रथम इसी प्रधान विद्यालय में सन्तान के हृदय में समस्त दोष और गुणों का अंकुर उत्पन्न होता है। बालक डेढ़ वर्ष की अवस्था से अढ़ाई वर्ष की अवस्था तक सांसारिक पदार्थों का तथा अपनी परायी मानसिक प्रकृति का ज्ञान जहां तक कर लेता है, उससे अधिक ज्ञान फिर वह कभी नहीं कर सकता है। माता को उचित है कि बालक जब पुचकारने (चुमकारने) से हँसने लगे बस उसी समय हँसी के साथ ही साथ उत्तम २ शिक्षा उसे देने लगे, उसी समय से बालक को शिक्षा देने का समय उपस्थित होता है।

शिक्षा देने की प्रणाली (विधि) दो प्रकार से शास्त्रों ने बताई है। एक दृष्टान्त के द्वारा और दूसरी उपदेश द्वारा। किन्तु इन दोनों में पहिली प्रणाली एवं दृष्टान्त प्राप्त शिक्षा बालक को उपयोगी होती है क्योंकि बालकों को किस्से कहानी सुनने की अधिक प्रीति होती है देखो बालक का हृदय अत्यन्त कोमल होता है उस बालकपन में जो उन्हें सिखाया जाय वह तुरन्त सीख लेते हैं। बालक ज्यों ज्यों बड़ा होता है त्यों २ उसका हृदय भी कड़ा होता जाता है वैसे ही पूर्व शक्ति भी घटती जाती है। बालक अपने माता के कृत्यों का अनुकरण [नकल] करता है। दूसरे अनुकरण करना उसका स्वाभाविक धर्म है। घर में तथा पड़ोस में जितने मनुष्य रहते हैं और वे जो कुछ काम करते है बालक उसी को करने की चेष्टा करता है, जो सुनता है वही आप भी कहता है। बालकों का हृदय छोटे वृक्ष के पौधे के समान है जिस तरह पौधे को जिधर चाहो उधर झुका सकती हो। वैसे ही बालक के मनको इच्छानुसार घुमा सकती हो। तुम्हीं विचार करके देखो कि सब जगह बालक अपने माता-पिता, भाई-बहिन, चाचा-चाची

आदि घर के लोगो के कृत्यों की नकल करता है कि नहीं, जो बातें वे लोग कहते हैं वही बात वह भी कहता है, जो वह सिखाते हैं वही बालक कहता है, परन्तु, इन सब में सबसे ज्यादा माता ही की नकल करता है इसका कारण यह है कि माता का साथ ज्यादा रहता है खाना, पीना, सोना सब माता के निकट ही बालक करता है इसी से उसकी ओर उसका मन अधिक खिंचा रहता है तथा माता ही से अपना दुःख सुख कहता है।

इसीसे माता ही सर्व प्रधान मानी गई है। वही अपने बालक को गोदी में लेकर नाना प्रकार की बातें उसकी ओर मुंह करके कहती हैं तब देखो बालक कैसे चुपचाप उन बातों को सुनता है। इसलिये माता को उचित है कि, उस समय बालक के साथ और शिक्षाप्रद बातों को छोड अन्य किसी प्रकार के बुरे शब्दों का प्रयोग नहीं करै। क्योंकि उपदेश की अपेक्षा बालक माता पिता के व्यवहारों का अनुकरण अधिक करता है, यह व्यवहार ही उसके चरित्र गठन में विशेष कार्य्य करता है। एक दफे, वह उपदेश की ओर ध्यान नहीं देगा परन्तु तुम्हारे कृत्यों की ओर तुरन्त उसका ध्यान चला जायगा इसलिये माता पिता को उचित है कि अपने सन्तानों के आगे किसी प्रकार का कोई कुव्यवहार तथा कुवाक्यों का प्रयोग न करैं, तुम झूठे व्यवहार तथा दूसरे के साथ लड़ाई झगड़ा न करो तथा गाली गुप्ता न बको नहीं तो सब बातें उसके कोमल हृदय में अङ्कित हो जायंगी जो तुम्हारे सहस्रों उपाय किये से भी दूर होना असम्भव है। कितने ही मूर्ख माता-पिता अपने बालक को छोटा और अज्ञानी, सम झ कर कुव्यवहार करते जरा भी संकोच नहीं करते हैं यह उनकी

बड़ी भारी भूल है, क्योंकि बालक का हृदय स्वच्छ और निर्मल दर्पण की तरह है उसमें तुम्हारे आचरणों का प्रतिबिम्ब पड़ता है जो कि फोटोग्राफ के समान फिर मिट नहीं सकता।

बालकों को नाना प्रकार के विषय में प्रश्न करने की स्वाभाविक इच्छा होती है। इसलिये बालक जब कोई चीज़ देखता है या सुनता है तो उस विषय में नाना प्रकार का प्रश्न करने लगता है उस समय माता को क्रोध न करना चाहिये, बल्कि शान्तभाव धारण करके जो २ बात वह पूंछता हैं उसको यथेष्ट रूप से उसे समझाना, चाहिये जिसमें उस बात को वह जान जाय और शिक्षा ग्रहण करे। यदि माता ने उस समय क्रोध करके बालक को झिझिकार दिया, तो फिर उसकी प्रश्न करने की शक्ति न बढ़ेगी। वहां माता को यही उचित है कि उसे प्यार के साथ उसके प्रश्न के उत्तर देने में कभी सुस्ता न करे।

बालक के लिखने पढ़ने के विषय में उसे अधिक मारपीट नहीं करना चाहिये। जब वह पांच वर्ष का हो जावे तब उसे विद्यारम्भ करावें, जहां तक सम्भव हो प्रथम घर ही में उसे पढ़ावें, जब उसे कुछ ज्ञान अक्षरों का हो जाय तब अच्छी पाठशाला में जहां अध्यापक वृद्ध और दयालु होवें वह विद्या पढ़ने को बैठावे। वृद्ध अध्यापक के पास भेजने का कारण यह है कि आजकल स्कूलों में नये अवस्था के युवक अध्यापक का काम करते हैं वे बालकों को अपनी जवानी के तेहे में डांट डपट के साथ पढ़ाना ही अपना कर्त्तव्य समझते हैं उस डांट डपट से बालक का कोमल हृदय कांप जाता है माता पिता ने तो स्कूल में बुद्धि प्राप्त करने को भेजा और वहां डर के मारे

बुद्धि उनकी और कुन्द हो गई जिससे बालक स्कूल भी जाना नहीं चाहता । यदि माता पिता ने मिठाई का लालच देकर समझा बुझा के पाठशाला में भेज भी दिया, तो वहां विशाल वेत धारी कराल मास्टर को देखकर पुनः उसकी हिम्मत टूट गई, जिससे दूसरे दिन फिर वह आने में साहस नहीं करता । इसलिये उचित है कि उन पर मार पीट को हटा कर बड़े लाड प्यार से शिक्षा देवे । इस प्रणाली से बालक बडी जल्दी पढना सीख जायगा और दिन पर दिन उसकी इच्छा पढ़ने मे बढ़ती जायगी ।

यह बात माता को जानना परमावश्यक है कि इसी प्रणाली से बालक को शिक्षा देनी चाहिये । बालक की रुचि प्रथम देखनी चाहिये कि किस विषय पर उसकी रुचि है, जब उसकी रुचि तुम जान लो तब उसे उसकी इच्छा के अनुसार शिक्षा दो । सबसे पहिले बालक को अपनी मातृभाषा की शिक्षा देना उत्तम है, उसके बाद अन्य भाषा जिसे उपयोगी समझे उसकी शिक्षा देवे 'क्योंकि बालकों के पक्ष में मातृभाषा अत्यन्त सरल है, कारण यह कि दिन रात उसी भाषा का प्रयोग करना पडता है, यह उन्हें जल्दी आजाती है । जब मातृभाषा में उसे पूर्ण ज्ञान हो जायगा तब अन्य भाषा को भी वह शीघ्र सीख लेवेगा ।

पण्डितों ने मनुष्य की मानसिक वृत्ति समूह को दो श्रेणियों में बांटा है एक बुद्धि वृत्ति और दूसरी नीति व धर्म वृत्ति । छोटी अवस्था से ही बालक को ऐसी शिक्षा देनी चाहिये कि नीति और धर्म्म में रुचि उसकी अधिक होवे, परमेश्वर ने मनुष्य के लिये नाना प्रकार की वृत्तियां बनाई है उन सब वृत्तियों को ठीक ठीक मार्ग पर चलाने से उन्नति अवश्य

होती हैं किन्तु प्रत्येक मनुष्य की वृत्तियां समान तेजस्विनी नही होतीं। किसी की वृत्ति चित्र खीचने में होती हैं, किसी की गणित शास्त्र में किसी की तर्क शास्त्र में किसी की साहित्य शास्त्रानुशीलन में ही वृत्ति होती हैं। इस लिये उसकी रुचि देखकर उस प्रकार की शिक्षा देना उत्तम होता हैं।

बालकों को लिखने पढने के पूर्व में जब किसी चीज को वह देखकर तुमसे प्रश्न करे तो तुम केवल उसका नाम ही न बताकर चुप हो जाओ बल्कि उसका नाम-वर्ण रूप गुण आदि सब विषय समझाओ, पहिले उसीसे पूछो कि इसका क्या नाम है, यदि वह बता देवे तब तो ठीक ही है नहीं तो तुम उसका नाम बता दो, फिर उसका वर्णादि समझा दो, देखो उदाहरण के लिये तुम्हें एक दृष्टान्त सुनाती हूं— एक युवती के दो पुत्र थे उनमे एक सात वर्ष का था और दूसरा चार वर्ष का था बड़े का नाम श्यामू था और दूसरे का नाम रामू था एक दिन वह अपने खेत में से जब काम करके आई तब उसे रास्ते में एक सेमर का फूल गिरा हुआ मिला उसने लडको के लिये उठा लिया और जब घर आई तब उसके दोनों लडके उसके पास चले आये। तब उसने वह सेमर का फूल उन्हे दिखाया और कहा—"जो इसका नाम बतावेगा उसी को यह मैं दूंगी" यह सुनकर छोटे लड़के रामू ने कहा यह फूल है।

श्यामू ने कहा—"यह सेमर का फूल हैं।"

माता ने पूंछा—इसका कौन वर्ण हैं (रङ्ग है) ?"

श्यामू ने कहा—"वर्ण लाल है।"

माता ने पूछा—"मनुष्य ऐसे सुन्दर फूल का आदर क्यों नहीं करते ?

श्यामू ने कहा—यह नहीं मालूम ”

माता ने कहा—कैसा यह सुन्दर है परन्तु इसमें गुण तथा सुगन्ध नहीं है इससे आदमी इसकी कदर नही करते। यह देखो इतना कह कर माता ने उस फूल को श्यामू को सूंघने को दिया तब श्यामू ने सूंघकर कहा;-“मां! इसमें तो जरासी भी सुगन्ध नहीं है? तब माता ने एक चमेली का फूल श्यामू के हाथ में दिया और पूंछा देखो इसमें सुगन्ध है? श्यामू ने सूंघ कर कहा—”हां! इसमें तो बडी सुगन्ध है।” माता ने कहा—देखो बेटा! ऐसे सुन्दर लाल फूल में सुगन्ध नही हैं और इस सादे फूल में कितनी सुगन्ध है, इसी तरह तुम देखने मे सुन्दर हो परन्तु विद्या रूपी सुगन्ध तुममें नहीं है और देखो महेश का लड़का देखने में कैसा बुरा परन्तु उसमे विद्यारूपी सुगन्ध दिन पर दिन बढ़ती जाती है इसीसे उसका सब आदर करते है और तुम्हारा आदर कोई नहीं करता। यदि बेटा तुम अपना आदर सब से कराना चाहो तो महेश के लड़के की तरह कल से पढ़ने जाया करो श्यामू ने कहा “अच्छा मां कल से जरूर पढ़ने जाया करूंगा ” तब उसकी माता ने उसे अपने हृदय से लगा लिया और मुख चूम लिया। फिर पूंछा कि बताओ इसी प्रकार देखने में और कोई फूल है जिसमें सुगन्ध नही है?

श्यामू ने कहा —“पालाश के फूल में भी शायद सुगन्ध नहीं है।”

माता ने कहा—“हां उसमे भी सुगन्ध नहीं है।

इसी प्रकार उस स्त्री ने दो चार फूलों के नाम उनसे पूछे और उनका रूप तथा गुण बताया उपरान्त उसे नाना प्रकार की कथायें सुनाई।

जिठानी जी ! इस प्रकार लड़कों को दृष्टान्त द्वारा उपदेश देना चाहिये वह फूल का तो एक उदाहरण तुम्हें मैंने सुनाया है, परन्तु कहने का मेरा मतलब यह है कि जो बात उसे समझाना हो उसे अच्छी तरह समझा देना चाहिये जिसमे उस विषय में किसी तरह का सन्देह उसे न रह जाय। लेकिन जिस विषय की शिक्षा उसे दी जावे उस समय उसके सामने उसी विषय सम्बन्धी दो एक वस्तु उपस्थित रहना आवश्यक है जिसमे प्रत्यक्ष देखकर वह समझ भी लेवे "जैसे तुमने कहा हाथी बड़ा बलवान है वह किसी से डरता नही। केवल यही कह देने से उसकी समझ में नही आवेगा। जब हाथी कभी दिखाय तब उसके पास बालक को ले जाकर उसके रूप रंग बल और कृत्यो की परीक्षा करा के दिखावे जिसमे तुरन्त वह समझ जायगा।"

जिठानी—"यह तो बहिन ! तुमने ठीक कहा कि जब जो बात समझाई जाय यदि उस विषय सम्बन्धी वस्तु वहाँ प्रस्तुत हो तो समझने मे बड़ी सरलता होती है।"

कृष्णा—दीदी! उसमें यह सुभीता है कि जहां भ्रम पड़ा वहीं तुरन्त देख लिया। बस सन्देह जाता रहा। अच्छा देखो बालक के पढ़ने के समय वर्णमाला प्रथम पढ़ाना उचित है परन्तु लिखने से पूर्व यदि उन्हें रेखा खींचना सिखाय दिया जाय तो अक्षर लिखने में उन्हें बड़ी सरलता हो जावे लेकिन जब तक बालकों को वर्णमाला के ४६ अक्षर अच्छी तरह कण्ठस्थ नहीं हो जांय तब तक उन्हें लिखना न बतावें, इससे बालकों को सीखने में बहुत देरी लग जाती है परन्तु आज कल विशेष करके यही शैली (प्रथा) चली है कि पहिले

लिखना ही सिखाते हैं। मेरी राय में यदि उनको पहिले नक्सा खींचना सरल रीति के त्रिकोण चतुष्कोण आदि सिखाये जांय तो उत्तम हो क्योंकि यदि उन्हें रेखा खींचना आजायगा तब उन्हें अक्षर लिखने में बडी सुगमता होगी। फिर अक्षर सिखाने के समय बालकों को एक एक अक्षर लिखना सिखावे जब तक उसे वह एक अक्षर अच्छी तरह लिखना न आवे तब तक दूसरा अक्षर न बतावे, कारण इसका यह है कि तुम ने यदि दस अक्षर उसे लिख दिये तो उसका चित्त दस अक्षरों मे बट जायगा और वह उनके लिखने में घबडा जायगा और जो एक अक्षर लिखोगे तब उसका मन एकही अक्षर के लिखने मे लगा रहेगा और जल्दी आवेगा उन दस अक्षरो के टेढ़े मेढ़े लिखने की अपेक्षा मेरी राय में एक अक्षर सुन्दर रूप से लिखना अच्छा है। इस प्रणाली से यदि उन्हें लिखना बताया जाय तो उनका अक्षर बहुत सुन्दर होवेगा नहीं तो पहिले ही जो वह गिजबिज या टेढ़े मेढ़े लिखने लगा तो फिर उसके अक्षर ठीक नहीं उतरेंगे।

छोटी अवस्था में बालकों को गिनती और पहाडे सिखाने के समय कोई ऐसी वस्तु लेकर उन्हें बनावे जैसे इमली के चियां वा कौड़ी तथा पैसे आदि लेकर गिनता जाय जब उसे गिनती आजाय तब उसे योग वियोग पहाड़े दो एकम दो आदि बतावे, इस प्रकार गिनती और पहाड़े सिखाने उत्तम हैं और पहले ही उन्हे लिख कर वा कण्ठस्थ सिखाने से जल्दी उन्हें याद नहीं होता, यदि हो भी गया तो उनको समझ में नहीं आता कि जोड़ किसे कहते हैं। और कौड़ी आदि से बताने में उनके पक्ष में एक प्रकार का खेल हो जाता हैं और

उसमें उनका मन लगता है, इस खेल के बहाने वह जल्दी सीख लेते हैं।

बालकों को अधिक डांट डपट नहीं करे। यदि वे किसी प्रकार का अन्याय करें उस वक्त उसे साधारण रीति से समझाओ और उस अन्याय कर्म के गुण अवगुण उसे बताओ जिसमें उसके मन में वह बात अच्छी तरह समझ में आजावे। यदि तुम प्यार के साथ उसे उस काम के करने को मना करोगी तो वह तुरन्त उस काम को त्याग देवेगा और जो तुमने क्रोध करके उसे मारना शुरू किया और उसे उसके अवगुण नहीं बताये तो फिर भी उस काम को करने की आवश्यकता रहेगी; क्योंकि उसे उस काम के दोष तो मालूम ही नहीं हैं कि इस काम मे यह दोष है जिससे सब को बुरा मालूम होता है, फिर वह कैसे छोडे? नहीं उसे पहले प्रेम के साथ समझाओ,और मारने की जगह नेत्र कोकाम म लाओ ऐसा करने से उसको भय भी होवेगा कि, इस काम के करने से मां प्यार नहीं करेगी और वह काम भी भय होने के कारण छूट जायगा जो ऐसा नहीं करती हैं प्रायः उन्हीं के लड़के ख़राब हो जाते हैं यह निश्चय देखने में आया है; अधिक मार से बालक निडर हो जाता है ओर ख़राब हो जाता है।

जैसे बालकों को अन्याय करने पर दंड देना उचित है वैसे ही कोई अच्छा काम करने पर इनाम देना भी उचित है। इससे उन्हें उत्साह होता है और काम करने में वह मन लगाते हैं। दूसरे एक बात का ध्यान अवश्य रहे कि बालक के सामने असत्य कभी न बोले, जिस चीज़ को वह मांगे और वह चीज़ उसको देने योग्य नहीं है तथा हानिकारक है तो उसे देना उचित नहीं है और जिसे तुम एकबार देने को नही कर-

दो फिर उसे चाहे वह जितना ही मांगे वा रोवे परन्तु तुम हर्गिज उसे वह चीज मत दो। यदि तुमने उसके रोने और जिद्द पर वह चीज दे दी तब फिर सदा वह रोया करेगा और उस चीज के लिये जिद्द किया करेगा क्योंकि उसे यह मालूम हो गया है कि मेरे अधिक रोने से मां वह चीज देवेगी और जो तुमने पहले ही उसके रोने से तथा जिद्द करने पर ध्यान नहीं दिया तो वह दो चार दिन में रो-पीटकर चुप हो जायगा और फिर कभी जिद्द नहीं करेगा। दूसरे जो बात उससे तुम कहो वह पूरा करदो। तथा किसी काम कराने के समय बालक से तुमने कहा कि अमुक काम तुम करो तो तुम्हें अमुक चीज खाने को वा खेलने को देवेंगे, तो उसने लालच में वह काम कर दिया फिर तुमसे जब वस्तु मांगने लगा जो कि तुमने उसे देने को कहा था। उस समय तुम उस चीज के देने में आगा पीछा करने लगो, तब बालक फिर कभी तुम्हारे कहने से काम नहीं करेगा। क्योंकि, उसने जान लिया कि तुम झूंठ बोलते हो। इस प्रकार तुम्हारे झूंठ बोलने से, एक तो तुम पर से उसका विश्वास जाता रहा, दूसरे काम की हानि हुई तीसरे काम करने का उत्साह उसके मन से जाता रहा। इसलिये प्रथम ही यह विचार करलो कि जिस चीज़ को हम इसे देने को कहते हैं वह फिर दे सकते हैं कि नहीं, यदि तुम नहीं दे सकते तो उससे कभी न कहो कि अमुक चीज़ देवेंगे। बालक को उसी बात का आसरा देना चाहिये जिसे कि तुम दे सकते हो। इस प्रकार करने से तुम्हारा काम भी होवेगा और बालक को काम करने का उत्साह भी होवेगा।

बालकों को बहुत देरी तक नौकर तथा दासी के पास मत रहने दो। प्रायः आजकल अमीरों के घर देखने में आता

है कि उनके बालक हर घड़ी नौकरों के पास ही खेला करते हैं, यहां तक कि चार पांच वर्ष की अवस्था तक वे नौकर तथा नौकरानी के घर रहकर उनके साथ खाते पीते है और सोते भी हैं, दिन रात २४ घंटे में माता के पास एकाध घंटा रहते हो मैं नही कह सकती नही तो हर समय नौकरों के साथ ही उन बालकों का बीतता है। यह बात जैसे नीति शिक्षा से विरोध रखनेवाली है वैसे ही शारीरिक और मानसिक अवनति का कारण है। किसी एक विद्वान ने कहा है, की तुम यदि अपने प्रिय सन्तान का लालन पालन और शिक्षा का भार किसी दास (नौकर) पर छोड दो तो थोड़े ही दिन में आपके घर मे दो नौकर हो जांयगे।" कारण इसका यह है कि, ससर्ग ही से बालकों में अधिकांश दोष पड जाते हैं और चरित्र उनका खराब हो जाता है। चार पांच की अवस्था के उपरान्त ही लड़का लडकी अपने बरोबर वाले लड़कों के साथ खेल कर उनके गुण अवगुण को करने लगते हैं तथा उनके दूषित कर्म्म की नकल करने लगते हैं। कितने बालक तो अपने माता-पिता की आज्ञा से ही उन बालकों के साथ खेलने जाते हैं क्योंकि शिक्षा की अपेक्षा उन बालकों का कर्त्तव्य उनके चरित्र पर अधिक कार्य्य करता है। इस लिये माता पिता को उचित है कि, अपने बालकों को दास दासी के ऊपर न छोड़ें नहीं तो उनमें भी दासत्व का भाव उत्पन्न हो जायगा। नौकरों पर केवल उन्हें हवा खिलाने का भार रहना चाहिये जिसमें उनके व्यायाम और स्वास्थ्य में किसी प्रकार की हानि न पहुंचे। इसके उपरान्त जब बालक लडकों के साथ खेलने लगे उस समय भी माता पिता को ध्यान रखने की बात है जिसमें वे किसी दुष्ट बालक तथा

नीच जाति के बालकों के साथ में न खेलने पावें नहीं तो उनकी संगति से खोटे आचारण सीख जांयगे।

यदि बालक किसी प्रकार का अन्याय कर्म करे अथवा किसी प्रकार का कुअभ्यास सीख लेवे तब उससे बुरी लत के छुडाने के लिये अधिक मार पीट करना ठीक नहीं है, उस लत को एक दिन में छुडाने की भी चेष्टा न करना चाहिये क्योंकि,उस बालक ने उस बुरी चाल को एक दिन में तो सीखा हीं नहीं है, जैसे कई दिन में उसने सीखा है वैसे ही तुम भी धीरे धीरे उस लत के छुडाने की चेष्टा करो, यदि तुम एक दिन में छुडाना चाहोगे तो वह हरगिज़ नहीं छुटेगी। उस वक्त तुम प्यार के साथ उस बालक को अपने पास बैठा कर उस खोटे आचरण के दोष को समझाओ वह भी किसी दृष्टान्त द्वारा जिसमे उसके हृदय मे वह बात अच्छी तरह बैठ जाय। जब वह उसके दोषों को समझ लेगा तब वह अपने आप ही उसको छोड़ देगा और तुम्हारा मनोरथ सिद्ध होगा।

यदि कोई ऐसा काम वह करै कि उस पर मारना ज़रूरी है तो उसको किसी के सामने मत मारो बल्कि छिपा कर उपदेश दो। यदि तुमने किसी के सामने उसे मारना शुरू कर दिया तो तुम्हारा मारना किसी अर्थ नहीं आवेगा, क्योंकि जैसा तुम दंड उसे देना चाहते हो वह नहीं दे सकोगे और बीच ही में आदमी उसे बचा लेवेंगे। लेकिन यहां एक बात का ध्यान जरूर रहना चाहिये कि, अकेले में तुम ऐसे भी उस बालक को न मारो जिसमें दंड उसके कसूर से ज्यादा हो तथा ठौर कुठौर मार दो क्योंकि क्रोध में इस बात का ज्ञान नहीं रहता इसलिये बड़ी सावधानी से उसे उचित दंड देना

चाहिये जिसमें तुम्हारा काम भो बन जाय और उसे बहुत चोट भी न लगे, दूसरे बिना उसके कसूर को समझे भी न मारना। कितने ही जगह देखने में आता है कि बालक के साथियों से जब किसी तरह की अनबन हो जाती है तब वे उसके माता पिता से झूंठी चुगली खाने आते हैं बस मूर्ख माता पिता उसी पर अपने लड़के को मारने लगते हैं। इसलिये इन सब बातों का ध्यान अवश्य रहे। जब तक तुम उसका कसूर साबित न करलो तब तक मारना उचित नहीं है।

ईश्वर की इच्छा से एक पुत्र हो वा दो चार पुत्र हों परन्तु माता को सब पुत्रों को एक समान लाड़ प्यार करना चाहिये। यदि उन बालकों मे माता का स्नेह न्यूनाधिक हो तथा किसी पर बहुत किसो पर कम होवे तो, इससे बालकों के हृदय मे हिंसा तथा द्वेष और पक्षपातीय दोष उत्पन्न हो जाते हैं और भाई भाई तथा भाई बहिन में परस्पर प्रीति नहीं होती। बहुत जगह देखने मे आता है कि, जो बालक सुन्दर और ज्ञानी होता है उस पर माता की प्रीति अधिक होती है और जो कुरुप और मूर्ख है उस पर कम होती है, अथवा लड़की की अपेक्षा लड़के पर माता पिता का स्नेह अधिक पाया जाता है। मेरी समझ में जो मनुष्य ऐसे बुद्धी के हैं उनकी बड़ी भारी भूल है उन्हें समझना चाहिये कि लड़का जिस कोख से जन्मा है उसी कोख से लड़की जन्मी है, और जितना कष्ट पुत्र के होने में हुआ है उतना ही कन्या के उत्पन्न होने में हुआ है, फिर उन दोनों को न्यूनाधिक समझें तो क्यों समझें? यदि यह कहो कि कन्या पराये घर में चली जायगी और पुत्र घर ही रहेगा, इससे कन्या की अपेक्षा पुत्र से अधिक प्रीति

करते हैं। यह भी भूल की बात है! जब कन्या पराये घर मे जायगी ते। तुम्हे यह समझना चाहिये कि वह [कन्या] केवल तुम्हारे घर में बारह तेरह वर्ष तक ही रह कर तुम्हारे सब सुखों को भोगेगी उपरान्त वह दूसरे के घर मे चली जायगी और पुत्र सदा इसी घर में रहेगा और जन्म भर तुम्हारे वैभव को भोगेगा। इसीलिए मेरी राय में कन्या ही पर अधिक प्रीति रखना चाहिये और उसे उत्तम उत्तम शिक्षा देनी चाहिये। जिससे समधियाने में तुम्हारा नाम हो और उसको सब बडाई करें तब भी तुम्हारी बड़ाई होगी। क्योंकि ससुराल में जब किसी तरह की अच्छी चाल वह चली तो वहां के आदमी यही कहते हैं, भाई धन्य इसके मां बाप हैं जिन्होंने इसे उत्तम शिक्षा दी है। और यदि वह कुमाग पर चलने लगी तब बात २ में माता पिता को ही गाली मिलती हैं इसलिये कन्या को सबसे ज्यादा उत्तम २ बातो को सिखावे।

जिठानी—बहिन! कन्या को किस प्रकार की शिक्षा देवे जिस मे समधियाने में नाम होवे!

कृष्णा—दीदी, मेरा राय मे कन्या को प्रथम विद्या पढ़ावे साथ ही उसे शिल्प विद्या भी बताती जाये यानी कसीदा काढ़ना सीना, पिरोना नकशे खींचना आदि सब हाथ के काम सिखावे जब थोड़ा बहुत वह पढ़ले तब उसे धीरे धीरे उपदेश देती जाय कि किसी से लड़ाई झगड़ा वह न करे, सबसे मीठा बोले अत्यन्त क्रोध न करे सबसे प्रीति प्रेम रक्खे इत्यादि सब बातें बता कर फिर उसे गृहस्थी की बातें सिखावे रसोई बनाना परोसना खिलाना, पिलाना, घर की चीज संभाल कर रखना, कुटुम्बीय मनुष्यों से व्रतीव रख-

ना ! पति से जैसा वर्ताव हो वैसा करना तथा अपने धर्म्म की रक्षा करना आदि विषयों की शिक्षा उसे इसे प्रकार से देवे कि उसके मनमे सब बातें बैठ जावें। मेरी राय में कन्या को ऐसी पुस्तकें पढाना चाहिये जिसमें उनका हित हो यानी धर्म सम्बन्धी नारी कर्त्तव्य पाकशास्त्रादि ऐसी पुस्तकों को पढ़ाने से वह स्वयं सब बातें जान जायगी। इस प्रकार की शिक्षा जो कन्या को दी जाय तो वह अपने ससुराल में बडा नाम पावेगी और साथ ही तुम्हारा भी नाम होगा।

दीदी! सबसे ज्यादा दुःख तो इस बात का है कि, आज कल जहां देखो वहां ऐसा देखने में आता है कि स्त्रियां पढ़ी लिखी नहीं पायी जातीं इससे दिन पर दिन हम लोगो की अवनति होती जाती है और हम लोग दासी से भी गयी बीती हो रही हैं, बस सब यह अविद्या का कारण है, यदि हम लोगों को प्रथम ही से विद्या पढ़ाई जाय तो क्यों न हमें ज्ञान हो! विद्या का प्रभाव तो मैं तुम्हें उस दिन बता ही चुकी हूं बस समझ लो कि विद्या ही प्रधान है वही मनुष्य को उत्तम बनाती है और उसी के अभाव में मनुष्य गली गली मारा फिरता है। दूसरे का मुंह जोहता है सब गूढ़ तत्वों को जानने में असमर्थ होता है जिसका जी चाहता है वही उसे दबा लेता है और मूर्ख बना देता है। दीदी! यह सब उसी विद्या के अभाव का कारण है। इसलिये हम लोगों को उचित है कि विद्या को पढ़ें और उसमे अपना जन्म सार्थक करें। जिसने संसार में जन्म लेकर विद्या नहीं पढ़ी उसने कुछ न किया वह अपने शरीर के बोझ से वृथा पृथ्वी का बोझ बढ़ाता है।

देखो जिसने विद्या पढ़ी है वह कैसे सुख का भोग रहा है, कोई वकील है, कोई डिप्टी कलक्टर है, कोई तहसीलदार है, कोई महामहोपाध्याय है, यह सब उसी विद्या का प्रताप है इनके आगे कितने ही मनुष्य हाथ बाधे खड़े रहते हैं, और जो मूर्ख हे जिन्होंने विद्या नहीं पढी है वे मजदूरी करते हैं कोई भीख मांगता है, कोई टोकरी ढोता है ऐसे आदमी का कोई अपने पास खड़ा भी नही होने देता। यदि तुम कहो कि यह सब तो पुरुष हैं जिनके तुमने नाम गिनाये है। स्त्रियां कौन हैं जिन्होंने विद्या पढ़ी है। इसलिये मैं तुम्हें थाड़े से नाम स्त्रियों के भी सुनाती हूं जिन्होने विद्या के प्रभाव से कैसी पदवियां पायी हैं राजा जनकके साथ योगाभ्यास में सुलभा नामक स्त्री ने शास्त्रार्थ किया था। याज्ञवल्क्य ऋषि के साथ गार्गी ने शास्त्रार्थ किया था। जगत् गुरूशंकराचार्य जी के साथ मंडन मिश्र की स्त्री विद्याधरी ने शास्त्रार्थ किया था, जिससे शंकराचार्य बड़े प्रसन्न हुये थे। सत्यभामा का देखो, द्रोपदी ने कैसी पातिव्रत धर्म की रक्षा की थी। लीलावती ने गणित शास्त्र की पुस्तक बनाई है जो कि आज तक पंडित लोग आदर की दृष्टि से देखते हैं संक्षेपतः कहने का मतलब यह है। दीदी संसार मे इतनी स्त्रियां पढ़ी लिखी थीं कि यदि उनका नाम क्रम से सुनाया जाय तो दो चार दिन मे भी पूरा नहीं होगा। तब उनके पुरुषों के समान अधिकार थे इसलिये वे सब कामों का यथा रीति सीखती थी। कोई२ स्त्री तो चारो वेद छहो शास्त्र और स्मृतियां योगशास्त्र गणित शास्त्र ज्योतिष आदि सब विद्याओं का जानती थी, और समस्त गुणों में निपुण होती थी परन्तु अब वर्त्तमान समय में ही स्त्रियां शिक्षा से विमुख होकर सौन्दर्य शील लज्जा धर्म, स्वच्छता, साधुता शीलता, मधुर

भाषण, पतिसेवा पतिधर्म आदि से विमुख हो गईं। जिससे उनकी सन्तानें भी गुणहीन होने लगीं जहां देखो तहां अशान्ति फैली हुई है जिस घर में विद्या तथा ज्ञान नहीं होता उस घर में शान्ति की कौन कहे नाना प्रकार के क्लेश उत्पन्न हुआ करते हैं।

इत्यादि बातें हो रहीं थीं कि सामने रक्खी हुई घड़ी ने टन टन करके सात बजा दिये तब मनोहर दास की स्त्री ने कृष्णा से कहा बहिन अब तो आज्ञा दो तो कल फिर आऊंगी।

कृष्णा—मैं कैसे कहूं बहिन!

इतने में बाहर से दासी ने भी सांकल खट खटायी। कृष्णा ने कहा लो मजदूरनी भी आ गई अच्छे मौके से आई है। जिठानी जी को पहुंचाने दर्वाजे तक कृष्णा आई जब वे बाहर निकल गईं तब दर्वाज़ा बन्द करके आप ऊपर चली आई और ब्यालू बनाने में लग गई।

एकादश परिच्छेद

सबेरे सब काम से निपट कर कृष्णा बाल्मीकीय रामायण पढ़ रही थी कि, उसी समय मनोहरदास की स्त्री ने बाहर सांकल खटखटायी जिसे सुनकर चम्पा ने कृष्णा की आज्ञा लेकर किवाड़ खोल दिये और उन्हें लाकर आसन पर बैठा दिया। कृष्णा ने उनकी चादर उतार कर खूंटी पर रख दी फिर उनके पास ही एक आसन पर बैठ गई और यों परस्पर बात चीत करने लगी।

कृष्णा—जिठानी जी! आज तो बड़ी जल्दी घर के कामों से निपट कर आई हो?

जिठानी—बहिन! तुम्हारे स्नेह से घर में रहना मुझे अच्छा नहीं लगता दूसरे तुम्हारे उपदेश भरे बचनों को सुनने के लिये और मन चाहता है आज तुम हमें यह बताओ कि मनुष्य को सुख कैसे होता है?

कृष्णा—दीदी! यह संसार जो है वह भव सागर है इस में नाना प्रकार के मनुष्य अपनी २ प्रकृति के अनुसार काम करते हैं कोई अपना जीवन दुःख से बिताता है और कोई सुख से निर्वाह करता है जिन्हें नाना प्रकार की चिन्तायें लगी रहती हैं वे ही अपना जन्म दुःख में काटते हैं और जो अपना मन किसी चिन्ता में नहीं डालते वे ही संसार में सुखी हैं। क्योंकि चिता और चिंता मे ज़रा ही बल है, चिता मरे हुये मनुष्यों को जलाती है और चिंता जीवित मनुष्यों के शरीर को जलाती है चिता तो प्रत्यक्ष जलाती है परन्तु यह

मनुष्य के हृदय में जलती है जिससे मनुष्य दिन पर दिन कृशित होता जाता है कुछ दिन में वह यमालय की यात्रा कर देता है इसलिये मनुष्य को किसी प्रकार की चिन्ता न होना चाहिये।

देखो मनुष्य चिन्ता से बचने के कुछ थोड़े से नियम मैं तुम्हें बताती हूं जिनसे मनुष्य को किञ्चित् सुख मिल सकता है। एक तो मनुष्य को किसी का ऋण देना न होवे क्योंकि, यह ऋण भी मनुष्य को दिन रात सुख से नहीं रहने देता, इसलिये बुद्धिमान मनुष्य को अपनी आमदनी मे से थोड़ा थोड़ा काट कर अपने पास धन सचित करना चाहिये जिसमें किसी से ऋण लेने की जरूरत न पड़े। जो मनुष्य परिश्रमी हैं उन्हें भी कभी किसी बात का दुःख नहीं होता, क्योंकि वह अपने परिश्रम के द्वारा सब सुख के सामान को इकट्ठा कर लेता है और जो मनुष्य परिश्रमी नहीं हैं उन्हें अपने आलस्य के कारण नाना प्रकार की तकलीफें झेलनी पड़ती है। तुम्हीं विचार कर देखो कि जो धनवान पुरुष हैं वे अपने धन की मादकता में पड़े रहते हैं खाने और सोने के सिवाय और कोई काम वे नहीं करते वे ही मनुष्य थोड़े दिन में अपने धन को नाश कर देते हैं यही नहीं साथ ही अपने शरीर को आलसी भी बनाय लेते है, फिर उनसे कोई काम नही होता अन्त में दुख को छोड़ कर उन्हें सुख नहीं होता। किन्तु जो परिश्रम से सदा अपने काम में लगे रहते हैं, उन्हें दुख का सामना नहीं करना पड़ता। यदि अकाल भी पड़ जाय तो वे अपने परिश्रम से किसी धनपात्र की मजदूरी करके उस समय को काटते है और अपने बाल बच्चों को दुःख नहीं होने देते।

मनुष्य को सुख देनेवाली स्त्री भी है क्योंकि शास्त्रकारों ने लिखा है :—

"सन्तुष्टो भार्यया भर्त्ता, भर्त्रा भार्य्या तथैव च।
यस्मिन्नेवकुले नित्यं कल्याणं तत्र वै ध्रुवं॥"

अर्थात् जिस कुल में स्त्री पति को प्रसन्न करे और पति स्त्री को प्रसन्न करता है तो उस कुल में तथा घर में सदा कल्याण होता रहता है जिस घर में स्त्री स्वामिनी है और तृष्णा में तृप्ति को देनेवाली है सुखालाप में परितोषन करनेवाली है, मर्य्यादा पालन में सङ्गिनी है, सेवा करने में आज्ञाकारिणी है किसी कार्य्य के करने की सलाह में मन्त्रिणी है, शुभकर्म में साथिनी है, अशुभकर्म्म में शिक्षा दायनी है, विपद् रूपी धारा में नौकारूपी है, शोक सन्ताप में दुःखहारिणी है, रोगशय्या में स्वास्थ्य रक्षिणी, समस्त जीवन में साथनी है, उसी गृह में नाना प्रकार की सम्पदा उत्पन्न होती है, और नाना प्रकार के सुख उस मनुष्य को होते हैं जिनके घर में ऐसी सुलक्षणी स्त्री होती है। देखो यहां पर मैं तुम्हें एक दृष्टान्त सुनाती हूं कि स्त्री किस आचारण से इस लोक में और परलोक में सुख पाती हैं और साथ ही उनके कुटुम्बीय सुख पाते हैं:—

एक समय शान्डिली नाम की स्त्री से केकय राजा की पुत्री सुमना ने पूछा कि "हे बहिन! तुमने किस आचरण से तथा सुचरित्र से स्वर्ग पाया है सो मुझसे वर्णन करो।" यह सुन कर शान्डिली ने हंस कर कहा—"बहिन! जो तुम मुझे तपस्विनी समझती हो सो मैं तपस्विनी नहीं हूं मैंने कभी वहां वलकल नहीं पहिरा और न जटा बढ़ाय कर तपस्या ही की है। मैंने जिस प्रकार आचरण किये हैं वह तुम्हें सुनाती हूं सुनो—मैं कभी अभिमान अपने पास नहीं आने देती थी,

अभिमान के वश होकर कभी अपने पति को कडे वचन नहीं कहे। देवता तथा पितृ लोगों का और अतिथि लोगों का सदा सत्कार करती थी, जिसमें कभी वह दुःखित न हो वही कार्य्य मैं करती थी। सास-ससुर की सेवा करती थी, उनकी आज्ञा को कभी उलंघन नहीं करती थी चुगली के कार्य्य तथा खलता के कोई काम में प्रवृत्त नही होती थी, अर्थात् दुष्टा के काम मुझे अच्छे नहीं लगते थे। दरवाजे़ पर कभी बैठती नहीं थी, और किसी के साथ बहुत देरी तक बात चीत नहीं करती थी। किसी हँसी दिल्लगी की बात में अथवा कोई बुरे काम के मैं पास तक नही जाती थी। जब पति अपने कार्य्य से फुरसत पाकर घर आते तो उन्हें जल देकर पांव धुलवाती थी फिर उन्हें सुन्दर आसन पर बैठाती थी और जो कुछ घर में रहता था उससे उनको जल पिलाती थी, जिस चीज़ से वे अरुचि करते थे तथा जो उन्हें अच्छी नहीं लगती थी उसे मैं कभी नही बनाती थी न उन्हें ही खाने को वह चीज़ देती और न मैं ही खाती थी सदा उनकी रुचि के अनुसार रसोई बनाती थी। बाज़ार से जो चीज़ मेरे पति कुटुम्ब के लिये लाते थे बडे सबेरे उठकर उस चीज़ को उन लोगों को यथा भाग बना कर बांट देती थी और स्वयं यदि नहीं बांटती तो और किसी के घर बड़े मनुष्य से बँटवाय देती थी और जो काम करने को होता उसे अपने हाथ से कर देती थी यदि किसी काम के लिये मेरे पति परदेश जाते थे उस समय मैं सहर्ष उनकी यात्रा की तयारी करती थी और जब तक परदेश से लौट कर नहीं आते थे तब तक आंख में अंजन, अबटन, फुलेल शिर मल के स्नान और शृङ्गार आदि नहीं करती थी। यदि पति सुख से शयन किये रहते थे तो मैं बड़े सबेरे उठ कर गृह के कार्य्य तो करती थी

किन्तु हर समय उन्हीं की ओर ध्यान रखती थी न जाने वे कब उठें और उन्हें जल आदि की जरूरत पड़े। किसी कारण से कुटुम्बीय लोगों से जो कुछ कष्ट भी यदि होता था तो भी पति से नहीं कहती थी मैं यह सोचती थी शायद मेरे कहने से उन्हें किसी प्रकार का दुःख न होवे यही समझ कर नहीं कहती थी। जो बात पति से छिपाने योग्य होती थी अथवा कुटुम्बियों से छिपाने योग्य होती थी उसे सदा मैं छिपाये रहती थी। घर के दूसरे लोग चाहे मुझे कितना ही दुःख देते थे परन्तु मैं सदा उनसे प्रेम ही रखती थी और कभी अपने मन में उस बात की माष नहीं मानती थी। हे बहिन! इस प्रकार मैं अपने धर्म को पालन करती थी जिसमें घर के सभी कुटुम्बीय और पति तथा पडोसी अदि मुझसे प्रसन्न रहते थे, वहां भी मैंने परम सुख भोग किया और यहां भी जो सुख है वह तुम देखती ही हो।

शाण्डिली के यह वचन सुनकर सुमना अत्यन्त प्रसन्न हुई और बोली,—"बहिन! जो स्त्री सदा सावधानी से इस प्रकार अपने धर्म्म को पालन करेगी वह स्त्री लोगो के बीच में नारी रत्न है और वही इस लोक और परलोक मे दोनों में सुख भोगेगी।"

इस दृष्टान्त को सुनकर मनोहर दास की स्त्री ने बड़ा सुख पाया और अत्यन्त हर्ष के साथ बोली,—"वहिन! तुम बडी बुद्धिमती हो तुम्हारे सत्सङ्ग से और सदुपदेशों से मेरा बड़ा भारी उपकार हुआ है क्योंकि मेरे पति जब जरा किसी बात मे मुझ पर नाराज होते थे तो उसी वक्त मैं उनको उलटी सीधी सुनाने लगती थी। सो आज से मैंने तुम्हारे उपदेशों को सुनकर अपने मन में यह दृढ़ संकल्प कर लिया कि चाहे

वे कितना ही मुझ पर बिगड़ें मैं उनको अपने मुँह से एक बात भी नहीं कहूंगी।"

कृष्णा ने कहा—"दीदी! मैं तो बड़ी मूर्खा हूं परन्तु आज मैं अपने को परम सौभाग्यवती समझती हूं जो मेरे उपदेश से तुम्हे अपने पति के चरण में भक्ति हुई।"

जिठानी—"बहिन मैं क्या करूं मुझ से उनकी बात सही नहीं जाती! इसी से मैं भी जो मन में आता था बकने लगती थी।"

कृष्णा ने कहा—देखो इसपर मैं तुम्हें एक बात और सुनाती हूं जब पति को किसी कारण से क्रोध होजाय क्योंकि किसी को स्वाभाविक क्रोध भी होता है जो हर समय बक बक किया ही करते हैं, किन्तु स्त्री को चाहिये कि सब बातों को सहन कर लिया करै तथा मुंह से बोले ही नहीं तो वे आप ही दो चार दिन बक झक के चुप हो जांयगे फिर कभी तुम पर क्रोध नहीं करैंगे और जो तुमने उनकी बात का उत्तर दिया तो समझ लो कि बड़ा ही बुरा किया क्योंकि क्रोध जो है वह अग्नि है जब वह भभकने लगी और उसमें तुमने उत्तर रूपी घी की आहुत देनी शुरू कर दी तो वह क्रमशः बढ़ती ही जायगी।

देखो एक किसी गृहस्थ के घर में दिन रात कलह हुआ करता था जिससे उस घर को कलह मन्दिर के नाम से सब लोग सम्बोधन किया करते थे। इसी प्रकार उस कलह मन्दिर में एक दिन स्त्री पुरुष में अत्यन्त लड़ाई हुई पति ने चार बातें कही तो स्त्री ने ८ बातें कह डाली इसी प्रकार वादा विवाद में फिर मार पीट शुरू होगई अन्त में वह स्त्री उस दिन मार पीट खाकर दूसरे दिन एक पड़ोसिन मूर्खा स्त्री से अपने दुख को सुनाने लगी, उस मूर्खा ने सुनकर कहा—

"तू किसी जादू के जोर से अपने खसम को वश करले।" इसने कहा मैं जादू क्या जानूं? हां जो तू जानती हो तो बता दे?" उसने कहा—"मैं तो नहीं जानती पर एक सयानी स्त्री यहां से थोड़ी दूर पर रहती है जो तू उसके पास चली जाय तो वह तेरे काम को कर देगी, वह इस काम में बड़ी हुशियार है।"

यह सुनकर दूसरे दिन वह स्त्री उसका पता पूंछ कर उस चतुर स्त्री के पास पहुंची और सब अपना दुःखड़ा उसे सुनाय दिया वह सयानी बडी बुद्धिमान थी उसने सब बात सुनकर उस स्त्री से कहा अच्छा मैं तुझे थोड़े से चावल मन्त्र पढ़ कर देती हूं तू जब तेरा पति घर में आवे उसी समय उन चावलों में से एक मुट्ठी अपने मुंह में भर लीजियो, जब तक तेरा पति घर मे रहे तब तक इन चावलो को तू अपने मुंह में से फेंकियो नही चाहे वह कितना ही बोले व गारी देवे किन्तु तू चुप चाप इन चावलों को मुंह मे भरे सब काम करती रहियो और बोलियो मत। यदि इसी प्रकार तू पन्द्रह दिन करेगी तब तेरा पति तेरे बश मे हो जायगा। इतना कहकर उस सयानी ने पाव भर चावल अपने घर में से उसे ला दिये और कहा कि देख जो मैंने बताया है उसमें फरक न होवे नहीं तो फिर मैं नहीं जानती। "स्त्री ने कहा—नहीं जैसे आपने बताया है वैसे ही मैं करुंगी।

इसके उपरान्त वह स्त्री अपने घर चली आयी और जब पति घर में आया तो उसने तुरन्त उन चावलों में से एक मुट्ठी अपने मुंह में भर लिया और पति ने कितना ही बका गाली दी परन्तु यह एक हरफ़ भी नहीं बोली फिर बोले भी तो कैसे मन में बहुत छटपटी पड़ रही थी पर वह चावल

जब बोलने दे ? आखिरकार इसी प्रकार जब पन्द्रह दिन होगये तब उसके पति ने अपने मन में सोचा कि अब तो यह नहीं बोलती चाहे मैं कितनी ही गारी दू तो मुझे भी उचित है कि अब इसे कोई बात नहीं कहा करूं। इसी प्रकार उस कलह मन्दिर में कुछ दिन में कलह का नाश हो गया और उसका नाम शान्ति निकेतन होगया और स्त्री पुरुष दोनों आनन्द से अपने समय को व्यतीत करने लगे।

दीदी! इस दृष्टान्त से तुमने समझ ही लिया होगा कि सर्वोपरि मौन है। जो स्त्री को सहन करने की शक्ति होगी तो वह अपने परम शत्रु को भी बश में कर लेवेगी पति को बश करना कौन बडी बात है वह तो अपना ही है।"

जिठानी—नही, बहिन! अब मुझे तुम्हारी कृपा से अच्छा ज्ञान होगया अब कभी कोई बात नही कहूंगी सदा उनकी सेवा कर उन्हें प्रसन्न रखने का प्रयत्न करती रहूंगी यही नहीं किन्तु अच्छे दिन से पढने का भी अभ्यासकरूंगी।"

कृष्णा—"यदि दीदी! तुमने पढ़ने में ध्यान दिया। तो कुछ दिन में तुम परम बुद्धिमती हो जाओगी और मेरे उपदेशों के अनुसार जो समस्त काम करो तो कुछ दिन में ईश्वर की कृपा से सब सुख भोगोगी।

जिठानी—बहिन! जरूर तुम्हारे कहे अनुसार चलूंगी। अच्छा यदि आज्ञा हो तो अपने घर जाऊं।

कृष्णा—मैं जाने को कैसे कहू। अच्छा अब दर्शन कब होंगे?

जिठानी—"जल्दी ही आऊंगी।"

इसके उपरान्त मनोहरदास की स्त्री अपने घर चली गई।

बारहवां परिच्छेद

त्रि के नौ बजे होंगे। आकाश निर्मल और स्वच्छ दिखाई दे रहा है चारो तरफ तारागण छिटक रहे है, उनके बीच मे शुक्ल पक्ष का चन्द्रमा भी बड़े अहंकार के साथ चमक रहा है। चांदनी की श्वेत चादर चारो ओर ससार की चीज़ों पर पड़कर अपूर्व ही शोभा दिखा रही है। बड़े २ वृक्ष इस परमानन्द के सुख को लूट रहे हैं किन्तु प्रकृति के उलटे नियमों के अनुसार विचारे छोटे वृक्षों और पौधों के हाथ इस सुख का किञ्चित् भाग भी हिस्से में नहीं आता है परन्तु परमसंतोषी की भांति मन को बटोर के चुप चाप खड़े हैं। दिन भरके परिश्रम से थके हुए पक्षीगण अपने अपने घोसलो में आनन्द के साथ अपने अपने बच्चों को अपने पेट के नीचे छिपाये सुख की नींद सो रहे हैं शीतल, मन्द, सुगंध पवन धीरे धीरे अपनी मस्तानी चाल से चल रही है जोकि बगीचे के सुगन्धित पुष्पों से टकरा कर और भी मन को प्रसन्न कर रही है। ठीक ऐसे ही समय मे हमारे प्रिय पाठक पाठिकाओ को हम कृष्णा की उस पुष्प बाटिका में ले चलते हैं जो कि मकान के पीछे की ओर थी जिसे कि कृष्णा और मुन्नी ने अपने हाथ से लगाया था।

वह देखिये बगीचे की बीचवाली चौकी पर एक ओर वृद्ध रामलाल जी की शय्या बिछी है जिसपर वे आराम से लेटे है

और पास ही जमीन पर चटाई बिछी है जिस पर मोतीलाल, चुन्नीलाल और हीरालाल बैठे हैं। उनसे थोड़ी दूर पर कृष्णा और मुन्नी जो कि आज चार दिन हुआ है अपने ससुराल से आयी हैं वे बैठी हैं।इन दोनों की गोदी में चार चार वर्ष के सुन्दर गुलाब पुष्प के समान एक एक लड़के बैठे हैं, उनसे सटी हुई चम्पा और चमेली भी बैठी हैं।

इन लोगों में थोड़ी देर तक इधर उधर की बातें होती रही उपरान्त रामलाल जी ने मोतीलाल की ओर मुंह करके कहा,—बेटा तुम मेरी समझ में बड़े भाग्यवान हो देखो तुम ने अपने भाग्य के ही प्रताप से ऐसी सुलक्षणी और गुणवती बहू पायी है साथ ही चुन्नी और हीरा से आज्ञाकारी भाई, किन्तु यहां पर हम यही कहेंगे कि यह सब तुम्हारी घर की जितनी सम्पदा है और आपस की ऐक्यता है वह सब तुम्हारा इसी सौभाग्यवती बहू की कृपा का फल है। न वह इतनी गुणवती होती और न तुम लोगों को पुनः इस सुख का आनन्द होता। बेटा। तुम यह न समझना कि मैं मुंह देखी सिफारिश करता हूं बल्कि सत्य ही कह रहा हूं कि जब मनुष्य बड़ा पुण्य करता है तब उसे उसका फल भोगने को मिलता है सो तुमने पूर्व जन्म में बड़ा पुण्य किया था जिसके प्रताप से तुमने ऐसी उद्योगी परिश्रमी सर्व कार्य्यों में निपुण, सुशील, परम बुद्धिमती और अपने धर्म को अच्छी प्रकार जानने वाली स्त्री पायी है। देखो बेटा! जब तुम्हारी मां मरगई उस समय मुझे इतना दुःख था कि जिसका वर्णन मैं नहीं कर सकता। उस वक्त मुझे यही सोच हो रहा था कि, यह गृहस्थी किस प्रकार चलेगी? छोटे २ ये बालक घरमे थे और कृष्णा तथा चुन्नी के सिवाय कोई स्त्री बड़ी बूढ़ी घर के समस्त कार्य्यों

को जानने वाली नहीं थी फिर ये दोनों कैसे सब कामों को यथा रीति चलावेंगी। उस समय मेरी आमदनी भी बहुत थोडी थी। किन्तु परमात्मा की कृपा से इसी लक्ष्मी ने तुम्हारे घर को संभाल लिया यही नहीं किन्तु तुम्हें चार पैसे का आदमी बनाय दिया इस समय तुम अपने पुरखों के बराबर नहीं तो तीन हिस्सा इज़्ज़त के बराबर होगये हो और आगे के लिये मुझे पूरा विश्वास है कि तुम अपने पूर्वजो से अधिक धनपात्र हो जाओगे।

मोतीलाल,—"बाबू जी! यह सब आप के पुण्य का प्रताप है मेरे भाग्य का इसमें कुछ दावा नहीं है। उपरान्त जो कुछ आपने कहा है इसमें कुछ भी फरक नही है मुझे भी आगे के लिये यही आशा हैं कि, यह मेरे दोनों भाई सदा मेरी आज्ञा को जैसे अभी मानते है वैसे ही आगे भी मानेंगे।

रामलाल ने कहा,—बेटा! देखो तुम लोग कुछ अब छोटे नहीं हो अपने हानि लाभ को अच्छे प्रकार से जान सकते हो इसलिये मेरा कहना तुम लोगों से यही है कि जैसे तुम लोग इस समय एक साथ रह कर परस्पर स्नेह रखते हो वैसे ही सदा एक साथ रहकर अपने घर को मजबूत बनाये रहोगे। इतना कहकर फिर कृष्णा की ओर मुंह करके बोले कि बहू मैं तुमसे क्या कहूं तुम तो सब प्रकार से चतुर और गुणवती हो तुम्हीं को मैं यह परिवार सौपता हूं यह सुनते ही कृष्णा के आंखों में आंसू आगये और बोली बाबू जी मैं तो किसी योग्य नहीं हूं परन्तु जिस प्रकार मैं आपकी आज्ञा को अब तक पालन करती आई उसी प्रकार जन्म भर पालन करती रहूंगी ससुर बोले, बेटी! तुझ से मुझे सब प्रकार की आशा है। मुन्नी और हीरालाल को समीप बुलाकर उन्हें पुचकार के बोले

बेटा ! तुम अपने भाई और भौजाई को पिता माता के समान समझना यही मेरी तुम्हारे लिये अन्तिम आज्ञा है सो मैं समझता हूं जिस प्रकार तुम मेरी अभी तक आज्ञा पालन करते रहे उसी प्रकार मेरे पीछे भी पालन करोगे। यह सुनकर मुन्नी और हीरा आँखों में आंसू भर के बोले बाबू जी आपकी आज्ञा शिरोधार्य है। मुन्नो को बुलाकर समझाने लगे बेटा ! तूने भी बड़ी बहू के समान अपने ससुराल को स्वर्ग बना दिया है सब लोग तेरी प्रशंसा करते हैं केवल यही मुझे कहना है कि जितना मेरे सामने इस घर को चाहती थी उसी प्रकार मेरे पीछे भी सबको अपना समझती रहना। मुन्नी अपने को न संभाल सकी और फूट फूटकर रोने लगी तब रामलाल जी ने उसे समझाया, बेटा ! क्या पिता माता सदा बने रहते हैं मैं तुम लोगों को सुखी छोड़ कर बड़े आनन्द से इस संसार से विदा होता हूँ। यों कहते हुये अपनी छोटी बहुओं को भी उपदेश दे कर बोले अब तुम लोग सब मेरे सामने से पीछे हो जाओ सब लोग तुरन्त पीछे की ओर हट गये। रामलाल जी गायत्री का पाठ करने लगे परन्तु अक्षर शुद्ध नहीं निकलते थे। इस प्रकार थोड़ी देर बाद उनके प्राण पखेरू सदा के लिये उड़ गये। रामलाल जी की क्रिया कर्म वैदिक विधि से करके धीरे २ सब लोग अपने अपने कार्य में लग गये। घरके सब लोग रामलाल की मृत्यु के बाद उनकी आज्ञा के अनुकूल आपस में हिल मिल कर रहने लगे।

इति

ओंकार-

आदर्श-महिला-चरितमाला

लीजिये बहुत से पाठक और पाठिकायें मुझसे यह शिकायत किया करते थे कि आपने ओंकार आदर्श-चरितमाला तो प्रकाशित की और उसे बड़े प्रयत्न से निकालते जा रहे हैं। प्रत्येक मास में दो अनुपम जीवनचरित प्रकाशित होते हैं। इससे पुरुषो को तो बडा लाभ पहुंचता है। बालकों को सुधारने के लिये एक अच्छा साधन हो गया है परन्तु कन्याओ और स्त्रियों के लिये कोई ऐसी आदर्श चरितमाला नहीं, जो उन्हें लाभ पहुंचावे। मुझे भी उनकी बात ठीक ही मालूम पड़ी' यह सोचकर मैंने ओंकार प्रेस से स्त्रियों के लिये भी "ओंकार आदर्श महिला-चरित माला" निकालना आरम्भ कर दिया है। इस चरित-माला की ४ पुस्तकें (१) महारानी सीता (२) पद्मावती (३) महारानी शैव्या और (४) महारानी दमयन्ती प्रकाशित भी हो चुकीं। प्रत्येक मास में एक नारी रत्न का जीवन चरित निकाला जायगा। ||) आठ आना पेशगी आने पर ग्राहकों में नाम लिख लिया जायगा। प्रत्येक मास मे एक जीवन चरित भेजा जायगा। समय पर पुस्तक मिल जाया करेगी। प्रत्येक पुस्तक में सौ या सौ से अधिक पृष्ठ होंगे। कागज भी बहुत उत्तम लगाया जाता है।

पता:—मैनेजर, ओंकार बुकडिपो, प्रयाग।